



Dr. Ramesh Chand Thakur
(Director)

Internal Quality Assurance Cell
(NAAC Accredited "A" Grade University)
Himachal Pradesh University, Shimla-05
Mobile- 98760-71296 (Director) 508 (Office)
Email- directoriqachpushimla@gmail.com

3.4.6 Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the year

3.4.6.1: Total number of books and chapters in edited volumes / books published, and papers in national/international conference-proceedings during the year

Academic Year	Number of Book/Chapters
2020-21	66
Total	66


Dr. Ramesh Chand Thakur (Director IQAC)
IQAC
(Internal Quality Assurance Cell)
HPU Shimla-05

तकनीकी युग में भाषा और साहित्य

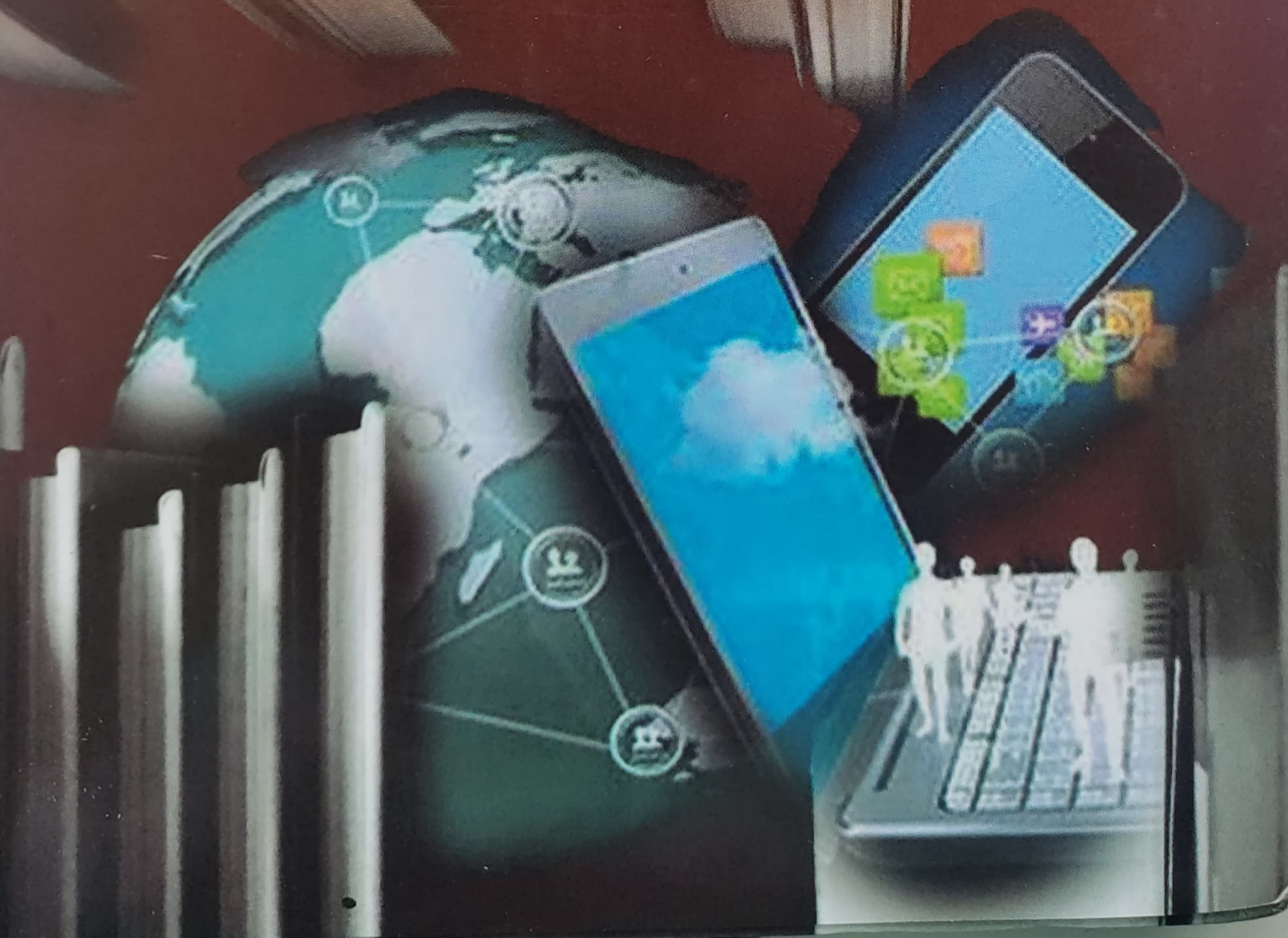


संपादक

डॉ. सत्यनारायण स्नेही

सह-संपादक

डॉ. वीरेंद्र सिंह



प्रकाशक
प्रकाशन संस्थान
4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110 002

मूल्य : 500.00 रुपये
प्रथम संस्करण : सन् 2021
ISBN : 978-93-89127-62-1
आवरण : जगमोहन सिंह रावत

शब्द-संयोजन : पी. एस. कम्प्यूटर्स, नयी दिल्ली-110002
मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, दिल्ली-110032

अनुक्रम

आमुख

v

तकनीकी युग में भाषा, साहित्य और संस्कृति	डॉ. बाबू राम	15
तकनीकी युग में भाषा और साहित्य	डॉ. सत्यनारायण स्नेही	32
तकनीकी युग में बदलते मानवीय जीवन-मूल्य :		
विशेष संदर्भ समकालीन हिंदी कविता	डॉ. वीरेंद्र सिंह	50
तकनीक व सामाजिक परिवर्तन : समकालीन हिंदी		
कविता का समाजशास्त्रीय विवेचन	दिनेश शर्मा	65
तकनीक और साहित्य : कुछ बेतरतीब टिप्पणियाँ	डॉ. शहाबुद्दीन	83
तकनीकी युग में साहित्य की सार्थकता	संदीप कुमार	97
तकनीकी युग में हिंदी भाषा का स्थान	डॉ. मंजु पुरी	105
फेसबुक और हिंदी कविता-लेखन	रवि प्रकाश	112
तकनीकी युग में दृश्य और श्रव्य माध्यम में साहित्य	डॉ. देवकन्या ठाकुर	130
साहित्य और समाज के वैचारिक आयाम	डॉ. वीना सुमन	139
तकनीकी युग में लोकसाहित्य का महत्त्व	डॉ. जितेंद्र कुमार	153
तकनीकी युग के दुष्प्रभाव : इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता	डॉ. राधा वर्मा	162
तकनीकी युग में साहित्य की सार्थकता	डॉ. सुरेंद्र शर्मा	173
तकनीकी युग में साहित्य और संस्कृति	नवनीत भाऊटा	186
तकनीकी युग में भाषा	रघुवीर सिंह	194
बदलते परिदृश्य में हिंदी भाषा की प्रासंगिकता	डॉ. मीनाक्षी	206
हिंदी : पक्ष-प्रतिपक्ष	डॉ. मनीष कुमार मिश्रा	219

तकनीकी युग में बदलते मानवीय जीवन-मूल्य : विशेष संदर्भ समकालीन हिंदी कविता

—डॉ. वीरेंद्र सिंह

सत्यमेव जयते तीन शेरों के पंजों में जकड़ा

सतयुग का मुहावरा है

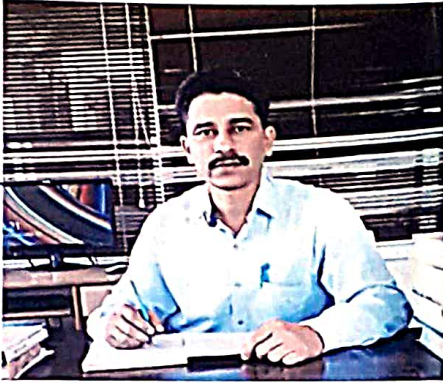
पता नहीं क्यों लटका है इस सदी की दीवार पर

ऐसी पंक्तियाँ हमें सोच में ही नहीं, गहरी चिंता में डाल देती हैं। ठीक है कि हर कोई आगे बढ़ना चाहता है, ऊँचा उठना चाहता है और यह मनुष्य की सहजात प्रवृत्ति ही है, इसलिए इसमें कुछ गलत भी नहीं, लेकिन जरा सोचिए इसकी कीमत क्या है? इसके एवज में मानवता की जड़ों को जिस प्रकार खोखला किया जा रहा है, इंसानियत के चोले को चिथड़े-चिथड़े किया जा रहा है, ऐसे में बेशुमार प्रश्न आज हमारे समक्ष रास्ता रोके खड़े हैं, जिन्हें लाँघकर आज आगे नहीं बढ़ा जा सकेगा, उनसे टकराकर ही आगे बढ़ना होगा।

आज हम तकनीक के युग में या कहिए साये में जी रहे हैं। दरअसल हम तकनीक से घिरे हुए हैं और इस पर इस कदर आश्रित हो गये हैं कि इसके बिना अपंग-सा महसूस करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों की ही तरह तकनीक के क्षेत्र में भी विज्ञान ने इंसान को एक से बढ़कर एक नये तकनीकी यंत्र देकर जीवन को अति सरल व सुगम बनाया है। आज हम निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के कई कार्यों को पहले की तुलना में बहुत तीव्र और सटीक ढंग से कर पा रहे हैं, जिससे हमारे जीवन में तेजी और निपुणता आई है, लेकिन क्या हम यह सोचते हैं कि शिखरोन्मुख इस यात्रा में हम अपने जीवन का कितना कुछ बेशकीमती पीछे छोड़ते जा रहे हैं? तकनीक तो हमारे हाथ आ गयी परंतु क्या हम स्वयं को इस विकास के अनुरूप ढाल पाये

संपर्क : सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र धर्मशाला।

डॉ. पान सिंह



युवा कवि एवं आलोचक के रूप में डॉ. पान सिंह का नाम हिन्दी साहित्य पाठकों के लिए अब नया नहीं है। कविता संग्रह 'मेरे आँगन की धूप' पुस्तक प्रकाशन के साथ इनकी यह सातवीं पुस्तक है। तीन आलोचनात्मक पुस्तकें— 'नागार्जुन उपन्यास साहित्य : विविध आयाम', 'ससन्दर्भ दोहाकार : डॉ. राजेन्द्र साहिल', 'कविता का वर्तमान परिदृश्य', 'लोकोत्तर कवि : गणेश गनी' और दो कविता संग्रह—'बयान' एवं 'बंद खिड़की के पीछे से' प्रकाशित। इसके अतिरिक्त एक आलोचनात्मक पुस्तक 'हिन्दी का संत-काव्य' और एक पुस्तक सम्पादन का काम चल रहा है। डॉ. पान सिंह का जन्म हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले की तहसील लड-भडोल के गाँव-तुलाह में 1 मार्च 1976 को एक किसान परिवार में हुआ। हिमाचल विश्वविद्यालय, शिमला से एम.फिल. हिन्दी, पी-एच.डी. हिन्दी और राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा पास करने के उपरान्त गुरु गोबिंद सिंह खालसा कॉलेज, माहिलपुर में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुए और स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं को काफी समय तक पढ़ाते रहे और हिन्दी विभागाध्यक्ष भी रहे। उसके उपरान्त वर्ष 2018 में पंजाब सरकार के सहायता प्राप्त कॉलेज सिख नेशनल बंगा में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। वर्तमान में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। इसी के साथ कला एवं साहित्य सृजन को समर्पित संस्था 'उम्मीद' के अध्यक्ष भी हैं। विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों में सहभागिता के साथ-साथ विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों एवं संगोष्ठियों में शोधपत्र-वाचन एवं प्रकाशन। देश एवं विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी एवं आलेख प्रकाशित। इसी के साथ आकाशवाणी रेडियो से कई कविताओं का प्रसारण एवं वार्ता में भागिता। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका भी निभाते रहे हैं और समय-समय पर पुरस्कृत एवं सम्मानित भी होते रहे हैं।

पत्राचार हेतु पता : मकान नम्बर 20, खुड़ा लाहौरा, यू. टी. चण्डीगढ़-160014

स्थायी पता : गाँव एवं डाकखाना-तुलाह, तहसील-लड-भडोल,

जिला-मंडी, हिमाचल प्रदेश।

मोबाइल नंबर : 7696101720

978-93-86436-82-5



वनिका पब्लिकेशन्स

रजि. कार्यालय : एच 2-165, मॉरी में 4, विजय नगर, नई दिल्ली-110018
मुद्रणालय : सरस बुकिंग, आई एमए, नई दिल्ली, फ़ोन-246701720
जोड़फ़ोन : 9617713848 Email : contact@vanikapublications.com
www.vanikapublications.com



मेरे आँगन की धूप

डॉ. पान सिंह



प्रकाशक

वनिका पब्लिकेशन्स

रजि. कार्यालय: एन ए-168, गली नं-6, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली-110018

मुख्य कार्यालय: सरल कुट्यूर, आर्य नगर, नई बस्ती, विजयनगर-246701, उ.प्र.

फोन: 09412713640

Email: contact@vanikaapublications.com vanikaapublications@gmail.com

Website: www.vanikaapublications.com

मेरे पाठकों
को
समर्पित

© : लेखक

संस्करण : प्रथम 2021

मुखावरण : कुँआर रवींद्र

मूल्य : दो सौ रुपये \$ 12

मुद्रक : प्रतीक प्रिंटर्स, दिल्ली

Mere Angan Ki Dhoop (*Poems in Hindi*)

Written by Dr. Pan Singh

Price : Rs 200/- \$ 12

ISBN- 978-93-86436-82-5



978-93-86436-82-5



संस्कृत प्रकाशन

राष्ट्रीय लेखन विमर्श के धार
द्वारा १९८०
satsariprakashan@gmail.com

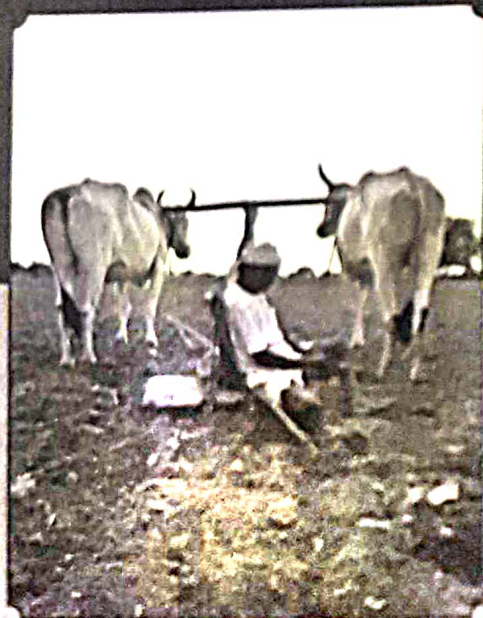


हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श

संपादक : डॉ. मीनाक्षी चौधरी, डॉ. मंजु परी



हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श



सम्पादक
डॉ. मीनाक्षी चौधरी
डॉ. मंजु परी



वत्सल प्रकाशन
राजकीय नेत्रहीन विद्यालय के पास
बीकानेर 334003
vatsalprakashan@gmail.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना लेखक/प्रकाशक की लिखित अनुमति के इस पुस्तक को या इसके किसी भी अंश को इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी उपकरण, यथा कैमरा, फोटो कॉपियर, रिकॉर्डिंग आदि द्वारा या अन्य किसी भी माध्यम से किसी भी रूप में, कहीं भी प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित न किया जाए।

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2021 ई.

मूल्य : पांच सौ रुपये मात्र

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

ISBN 978-81-951487-1-4

Hindi Sahitya Mein Kisan Vimarsh

Dr. Manoj Parri

₹ 500

अनुक्रमणिका

□ संपादकीय	9
1. सोनामाटी के हकदार —डॉ. मोनाशी चौधरी	17
2. पंकज सुबीर के उपन्यास 'अकाल में उत्सव' में व्यक्त किसान जीवन —डॉ. मंजु पुरी	40
3. नागार्जुन के काव्य में किसान जीवन की संवेदनाएँ —डॉ. कमलेन्द्र कुमार कुशवाहा	48
4. त्रिलोचन की काव्य साधना में किसान —डॉ. अनिल कुमार बारिया	59
5. प्रेमचंद के कथा साहित्य में भारतीय किसान की दशा (गोदान के विशेष सन्दर्भ में) —डॉ. शिवदयाल पटेल	66

6. हमारी गर्दन तो सरकार की मुट्ठी में है —अमित मनोज	76
7. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में किसान चेतना (किसान एवं भारत-भारती के विशेष सन्दर्भ में) —डॉ. शोभा रानी	92
8. केदारनाथ अग्रवाल का काव्य : किसानों के संपर्क, वेदना और चेतना की त्रिवेणी —विक्रम सिंह वारैठ	100
9. बोकानेर रियासत में जनजागृति के विभिन्न आयाम (किसान वर्ग के सन्दर्भ में) —डॉ. उषा लामरोर	107
10. गोदान और मानवीनी भवाई उपन्यासों में कृषक जीवन (एक तुलनात्मक अध्ययन) —डॉ. मुकेश वसावा	113
11. भू देवता : किसान की पुनरुत्थान यात्रा —डॉ. अनंता गोयल	126
12. हिडिम्ब : हिमखण्डों में गूँजती दलित किसानों की व्यथा —रानी देवी	135
13. काली चाट उपन्यास में किसान जीवन की त्रासदी —मधु बाला	142
14. अन्नदाता की फाँस को दर्शाता : संजीव का उपन्यास 'फाँस' —मोनिका	150
15. उर्दू अफसाने में किसान और देहात (प्रेमचंद के विशेष सन्दर्भ में) —डॉ. असमा मसूद	159
16. जनकवि बल्लू सिंह चौमा : हलधर की हुंकार —डॉ. एजाज़ अहमद कादरी	165
6 हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श	~~~~~

17. 21वीं सदी के हिन्दी कथा साहित्य में किसान विमर्श —डॉ. गोपीराम शर्मा	174
18. आधुनिक भारत में किसान और किसान आन्दोलन —डॉ. प्रीति आत्रेय, डॉ. रवीन्द्र सिंह	179
19. साहित्य में किसान बनाम कृषि अधिनियम 2020 —डॉ. प्रेरणा पाण्डे	184
20. 'एक थी मैना एक था कुम्हार' : माटी से पलायन को विवश किसान —संतोष कुमार शर्मा	188
21. हिन्दी उपन्यासों में किसान वेदना की अभिव्यक्ति —कुमारी पूनम चौहान	194

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में किसान चेतना (किसान एवं भारत-भारती के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. शोभा रानी

किसान भारतीय संस्कृति का आधार है। वह अपने जीवन के अपावों एवं समस्याओं को केवल घरी एवं वादलों के समक्ष ही अभिव्यक्त करता है। निरन्तर अन्न उत्पादन-साधना में लगा उसका तपोमय जीवन सबको प्रेरणा देता है। वह त्याग और तपस्या की साक्षात् मूर्ति है। किसान राष्ट्र की आत्मा होता है, जो गाँवों में निवास करता है। वह हमें अन्न तो देता ही है, साथ-साथ भारतीय संस्कृति और सभ्यता को भी सहेज कर रखता है। यही कारण है कि शहरों की अपेक्षा गाँवों में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का संरक्षण व पालन अधिक देखने को मिलता है।

हिन्दी साहित्य के मुख्य रचनाकारों में मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय चेतना एवं भारतीय संस्कृति के मुख्य संवाहक रहे हैं। साहित्य समाज का दर्पण है और दीपक भी। साहित्यकार सदैव से ही अपने युग की प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है। वह अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में व्याप्त समस्याओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है और देश के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाता है। हिन्दी साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी रचना के माध्यम से किसान के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य के रचनाकारों में मैथिलीशरण गुप्त का मुख्य योगदान है।

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि हैं और भारतीय संस्कृति के आख्याता भी। गुप्त जी ने किसान जीवन के यथार्थ को बिना अतीत का सहारा लिए ठोस सामाजिक भूमिका पर रखकर निर्मित किया है। वे भारत को भारत बोध एवं ग्राम्य बोध से अलग करके देखने वाले कवि नहीं हैं। उन्हें ग्रामीण जीवन से अत्यन्त प्रेम एवं लगाव था। उनका मानना था कि जब तक हम अपने आसपास के परिवेश से प्रेम नहीं करेंगे तब तक देश से प्रेम नहीं होगा। वे ग्रामीणों की दीनहीन दशा को लेकर चिंतित थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में किसान जीवन का सजीव अंकन किया है,

92 हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श

जिसमें किसान एवं भारत-भारती मुख्य ग्रन्थ हैं। किसान 1916 में लिखा गया आठ सर्गों का लघु आकार का खण्ड काव्य है जो आत्म कथात्मक शैली में रचा गया है। इस रचना में कलुआ और कुलवन्ती दो मुख्य काल्पनिक पात्रों को लिया गया है। इन दोनों पात्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज में कृषकों की स्थिति का वर्णन करते हुए अपनी विलक्षण कल्पना शक्ति का परिचय दिया है। यदि हम इसकी पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो इसमें कृषकों के साथ मजदूरों की दयनीय स्थिति, उन पर होने वाले अत्याचार एवं शोषण का वर्णन किया है।

किसान खण्ड काव्य को प्रार्थना, बाल्य और विवाह, ग्राहस्थ, सर्वस्वान्त, देश, त्याग, फीजी, प्रत्यावर्तन और अंत शीर्षकों में विभक्त किया है। प्रार्थना सर्ग में प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में भारतीय किसान की दुर्दशा का चित्रण है। बाल्य और विवाह में किसान के कैशोर्य जीवन को दर्शाया है। सर्वस्वान्त में किसान के हृदय की चित्कार सुनाई पड़ती है। फीजी में किसानों द्वारा देश छोड़ने पर अनजाने द्वीपों पर अपनी आवश्यकता पूरी करने की व्यथा का मार्मिक वर्णन किया है। इस तरह 'किसान' रचना में गुप्त जी ने किसानों की मार्मिक दशा का वर्णन किया है।

गुप्त जी की दूसरी रचना भारत-भारती है जो वर्तमान, अतीत एवं भविष्य-तीन खण्डों में विभाजित है। हरिगोतिका छन्द में लिखी गई 'भारत-भारती' में प्राचीन गौरव के प्रति आस्था व्यक्त की गई है और भविष्य के लिए आशा का सन्देश दिया गया है। वर्तमान खण्ड में कवि ने तत्कालीन भारत के नैतिक एवं बौद्धिक पतन का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इसके प्रारम्भ ही उन्होंने लिखा है—

'जिस लेखनी ने लिखा है उत्कर्ष भारत वर्ष का

लिखने चली है अब हाल वह उसके अमित अपकर्ष का'

इससे स्पष्ट होता है कि इस खण्ड में उन्होंने तत्कालीन भारत की समस्याओं व अपकर्ष की परिस्थितियों का वर्णन किया है। इसमें दरिद्रता, दुर्भिक्ष, भारतीय कृषक व उनकी समस्याओं का वर्णन किया है।

'पानी बनाकर रक्त का कृषि कृषक करते हैं यहाँ

फिर भी अभागे भूख से, दिन-रात से मरते हैं यहाँ

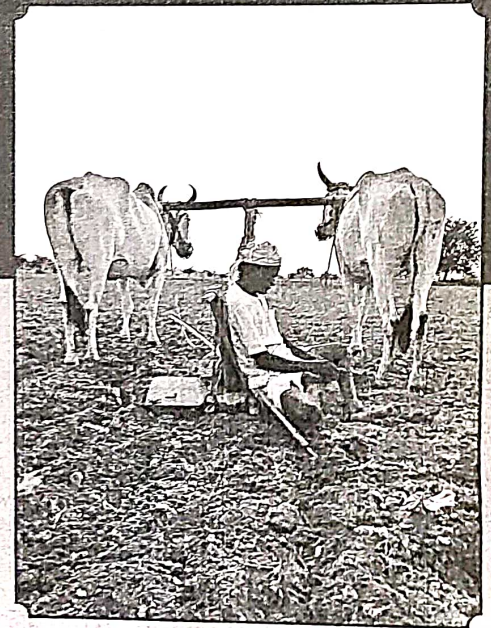
सब बेचना पड़ता उन्हें निज अन्न वह निरुपाय हैं

बस चार पैसे से अधिक पड़ती न दैनिक आय है'

अतीत खण्ड में कवि ने भारतवर्ष के अतीत की उसके पूर्वज, आदर्श सभ्यता, विद्या, बुद्धि, साहित्य, वेद, उपनिषद्, दर्शन, गीता, नीति, कला-कौशल, गीत-

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में किसान चेतना 93

हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श



सम्पादक
डॉ. मीनाक्षी चौधरी
डॉ. मंजु परी

हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श सम्पादक : डॉ. मीनाक्षी चौधरी, डॉ. मंजु परी



वत्सल प्रकाशन
राष्ट्रीय लेखक विद्यालय के पास
बोकारो 334003
vatsalprakashan@gmail.com





वत्सल प्रकाशन

राजकीय नेत्रहीन विद्यालय के पास
बीकानेर 334003
vatsalprakashan@gmail.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना लेखक/प्रकाशक की लिखित अनुमति के इस पुस्तक को या इसके किसी भी अंश को इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी उपकरण, यथा कैमरा, फोटो कॉपीयर, रिकॉर्डिंग आदि द्वारा या अन्य किसी भी माध्यम से किसी भी रूप में, कहीं भी प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित न किया जाए।

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2021 ई.

मूल्य : पांच सौ रुपये मात्र

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

ISBN 978-81-951487-1-4

Hindi Sahitya Mein Kisan Vimarsh

Editor: Dr. De. Manabkshi Choudhary - Dr. Manish Dahiya

₹ 500

अनुक्रमणिका

□ संपादकीय	9
1. सोनामाटी के हकदार —डॉ. मीनाक्षी चौधरी	17
2. पंकज सुबीर के उपन्यास 'अकाल में उत्सव' में व्यक्त किसान जीवन —डॉ. मंजु पुरी	40
3. नागार्जुन के काव्य में किसान जीवन की संवेदनाएँ —डॉ. कमलेन्द्र कुमार कुशवाहा	48
4. त्रिलोचन की काव्य साधना में किसान —डॉ. अनिल कुमार बारिया	59
5. प्रेमचंद के कथा साहित्य में भारतीय किसान की दशा (गोदान के विशेष सन्दर्भ में) —डॉ. शिवदयाल पटेल	66

6. हमारी गर्दन तो सरकार की मुट्ठी में है —अमित मनोज	76
7. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में किसान चेतना (किसान एवं भारत-भारती के विशेष सन्दर्भ में) —डॉ. शोभा रानी	92
8. केदारनाथ अग्रवाल का काव्य : किसानों के संघर्ष, वेदना और चेतना की त्रिवेणी —विक्रम सिंह बारैठ	100
9. बीकानेर रियासत में जनजागृति के विभिन्न आयाम (किसान वर्ग के सन्दर्भ में) —डॉ. उषा लामरोर	107
10. गोदान और मानवीनी भवाई उपन्यासों में कृषक जीवन (एक तुलनात्मक अध्ययन) —डॉ. मुकेश वसावा	113
11. भू देवता : किसान की पुनरुत्थान यात्रा —डॉ. अनीता गोयल	126
12. हिडिम्ब : हिमखण्डों में गूँजती दलित किसानों की व्यथा —रीना देवी	135
13. काली चाट उपन्यास में किसान जीवन की त्रासदी —मधु बाला	142
14. अन्नदाता की फाँस को दर्शाता : संजीव का उपन्यास 'फाँस' —मोनिका	150
15. उर्दू अफसाने में किसान और देहात (प्रेमचंद के विशेष सन्दर्भ में) —डॉ. असमा मसूद	159
16. जनकवि बल्ली सिंह चौमा : हलधर की हुंकार —डॉ. एजाज़ अहमद कादरी	165

6 हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श

194 हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श

17. 21वीं सदी के हिन्दी कथा साहित्य में किसान विमर्श —डॉ. गोपीराम शर्मा	174
18. आधुनिक भारत में किसान और किसान आन्दोलन —डॉ. प्रीति आत्रेय, डॉ. रवीन्द्र सिंह	179
19. साहित्य में किसान बनाम कृषि अधिनियम 2020 —डॉ. प्रेरणा पाण्डे	184
20. 'एक थी मैना एक था कुम्हार' : माटी से पलायन को विवश किसान —संतोष कुमार शर्मा	188
21. हिन्दी उपन्यासों में किसान वेदना की अभिव्यक्ति —कुमारी पूनम चौहान	194

हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श 7

हिन्दी उपन्यासों में किसान वेदना की अभिव्यक्ति

कुमारी पूनम चौहान

कृषि विश्व का प्राचीनतम उद्योग है। इसका वर्णन संसार में मानव जाति के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में भी मिलता है। किसान समाज का गौरव है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश आबादी गाँवों में निवास करती है और इन गाँवों के लोगों का प्रमुख कार्य कृषि है। ये लोग अपने परिवार का भरण-पोषण के लिए खेती करते हैं। इनके द्वारा उपजाया हुआ अन्न हमारे जीवन का आधार है। इसी कारण किसान को अन्नदाता के रूप में जाना जाता है। किसान मेहनती एवं परिश्रमी होता है जिसको किसी जाति, धर्म, पंथ अथवा काल विशेष की सीमाओं में नहीं बाँध सकते हैं। हिन्दी साहित्य में किसान जीवन पर अनेक साहित्यकारों ने रचनाएँ लिखी हैं। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, घाघ, धन्ना आदि भक्त कवियों की रचनाओं में किसान विमर्श को देखा जा सकता है। तुलसीदास ने 'कवितावली' में किसान की दयनीय दशा का वर्णन किया है। आधुनिक काल में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावादी काल तथा प्रगतिवाद काल में किसान की समस्याओं को चित्रित किया गया है।

आधुनिक समय में लोकप्रियता की दृष्टि से कथा साहित्य को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। कथा साहित्य में जीवन के व्यापक सन्दर्भों को सूक्ष्मता से चित्रित करने की क्षमता है। अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास साहित्य में समाज और जीवन की सरल और सहज अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। मनुष्य के जीवन के समस्त कार्यकलाप पूर्णता के साथ उपन्यास में ही चित्रित किए जा सकते हैं। साहित्यकार जिस वातावरण में रहता है जो कुछ समाज में घटित होते हुए देखता है उसी का चित्रण साहित्य में करता है। उपन्यास में मनोरंजन तत्व के साथ जीवन की समस्याओं को विविध दृष्टिकोण में अभिव्यक्त करने की क्षमता रहती है।

हिन्दी साहित्य में ग्रामीण जनजीवन से सम्बन्धित उपन्यास भी खूब लिखे गए हैं, जिनमें किसान जीवन का बखूबी वर्णन किया गया है। भारतीय किसान

का जीवन दरिद्रता, ऋणग्रस्ता एवं असहनीय कष्टों से भरा हुआ होता है। हिन्दी साहित्य में किसान जीवन को आधार बनाकर अनेक उपन्यासकारों ने उपन्यास लिखे हैं। स्वातन्त्र्यता पूर्व किसान जीवन में ज़मींदारों, साहूकारों के शोषण, किसान का अंधविश्वासी होना, धार्मिक कार्यों के नाम पर किसान का ऋणग्रस्त होना, परिवार में आपसी कलह, परिवार का टूटना इत्यादि विषयों को आधार बनाकर उपन्यास लिखे गए। इन उपन्यासकारों में गुंशी प्रेमचंद और शिवपूजन सहाय का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासकारों में फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, काशीनाथ सिंह, संजीव, राही मासूम रजा, भगवानदास मोरवाल इत्यादि साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में गाँव के लोगों के रहन-सहन, वहाँ की परम्पराएँ, ज़मींदारों और साहूकारों द्वारा किसानों का शोषण, रूढ़िग्रस्त रीति रिवाज, अंधविश्वास, टूटते किसान परिवार तथा बिखरते खेतों का सजीव चित्रण किया है। हिन्दी के कई उपन्यासकारों ने कृषक जीवन को अभिव्यक्ति दी है, परन्तु प्रेमचंद पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने कृषक जीवन का समग्रता से चित्रण किया है। उन्होंने किसानों के आर्थिक शोषण का ही वर्णन नहीं किया है, बल्कि अपने साहित्य में उन्होंने भारतीय किसान की एक बोधगम्य पहचान कायम करने का प्रयास किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान ज़मींदार, महाजन, नौकरशाही से संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। चाहे कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ हों किसान डटकर उसका सामना करता है।

'प्रेमाश्रय' उपन्यास में शोषक ज़मींदारों के प्रति कृषकों एवं कृषक हितैषियों का आक्रोश अभिव्यक्त हुआ है। उपन्यास का पात्र प्रेमाशंकर कहता है, "भूमि उसकी है जो उसको जोते। शासक को उसकी उपज में भाग लेने का अधिकार इसीलिए है कि वह देश में शान्ति और रक्षा की व्यवस्था करता है, जिसके बिना खेती हो ही नहीं सकती। किसी तीसरे वर्ग का समाज में कोई स्थान नहीं है।"¹ 'प्रेमाश्रय' उपन्यास में किसान तथा ज़मींदार वर्ग के आपसी सम्बन्धों को मुख्यतया अभिव्यक्ति मिली है और प्रेमचंद इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि ज़मींदारी प्रथा के खत्म होने से ही किसान वर्ग खुशहाल हो सकता है। किसान का अगर सबसे बड़ा शत्रु कोई है, तो वह है, ज़मींदार और उसके कारिन्दे। प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रय' में वह सब कुछ दर्शाया है, जो उन्होंने सोचा, समझा तथा अनुभव किया था। प्रेमचंद किसान को समाज का आधारभूत और उत्पादक वर्ग मानते हैं। उनके लिए किसान की उन्नति ही देश की उन्नति है और किसान की बदहाली ही देश की बदहाली है। किसान का जीवन ही सारे देश के अन्य वर्गों के जीवन को निर्धारित करता है। उन्होंने अपने साहित्य में किसान को केन्द्र बनाकर सारे समाज का चित्रण किया है। उनकी सम्पूर्ण कला चेतना भारतीय किसान की जीवन पद्धति से प्रभावित और



शकुंतिका

सृजन और दृष्टि

सम्पादक
डॉ. अनिल सिंह



स्त्रियों की चिन्ता को प्रतिबिम्बित करता उपन्यास : शकुंतिका	डॉ. प्रवीण चन्द्र विष्ट	107
ऊर्ध्वगामी चिन्तन की ओर उद्बुद्ध करती 'शकुंतिका'	डॉ. सत्यवती चौबे	115
शकुंतिका : जीवन मूल्यों का यथार्थ अंकन	डॉ. अशोक आनन्दराव साळुंखे	123
शकुंतिका और नारी अस्मिता	डॉ. यंतुदेव बुधु	129
स्त्री सम्मान का आख्यान : शकुंतिका	शोभा विष्ट	131
'शकुंतिका' में जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण	डॉ. संजय जायसवाल	137
सामाजिक जीवन मूल्य और शकुंतिका	प्रा. कुमारी पूनम चौहान	142

खंड-3

संस्कृति, परम्परा और नारी-चेतना

'शकुंतिका' उपन्यास में नारी जागृति के विभिन्न आयाम	सुभाषिणी लता कुमार	149
शकुंतिका : परम्परा और नारी-चेतना का यथार्थ	डॉ. सतीश पांडेय	155
शकुंतिका : समाज और संस्कृति का नव-उन्मेष	प्रोफेसर (डॉ.) विजय कुमार भारती	164
परम्परा और आधुनिकता की सहज गाथा : शकुंतिका	डॉ. अंशिता शुक्ला	172
शकुंतिका : संस्कृति का नया आख्यान	प्रो. डॉ. के. वनजा	177
शृंखला की वेड़ियाँ तोड़ता उपन्यास : शकुंतिका	प्रोफेसर (डॉ.) संजय नवले	183
शकुंतिका का सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य	डॉ. रूपा सिंह	187
शकुंतिका : परम्परा और आधुनिकता का द्वंद्व	डॉ. योजना कालिया	192

खंड-4

पितृसत्ता, स्त्री और मुक्ति के प्रश्न

स्त्री की मुक्ति गाथा : शकुंतिका	डॉ. श्रीलता विष्णु	207
शकुंतिका : कथा संरचना एवं उद्देश्य	डॉ. अशोक हे. फर्डे	213
शकुंतिका : पितृसत्तात्मक समाज के बदलते सन्दर्भ	डॉ. अनीता	219

सामाजिक जीवन मूल्य और शकुंतिका

प्रा. कुमारी पूनम चौहान
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

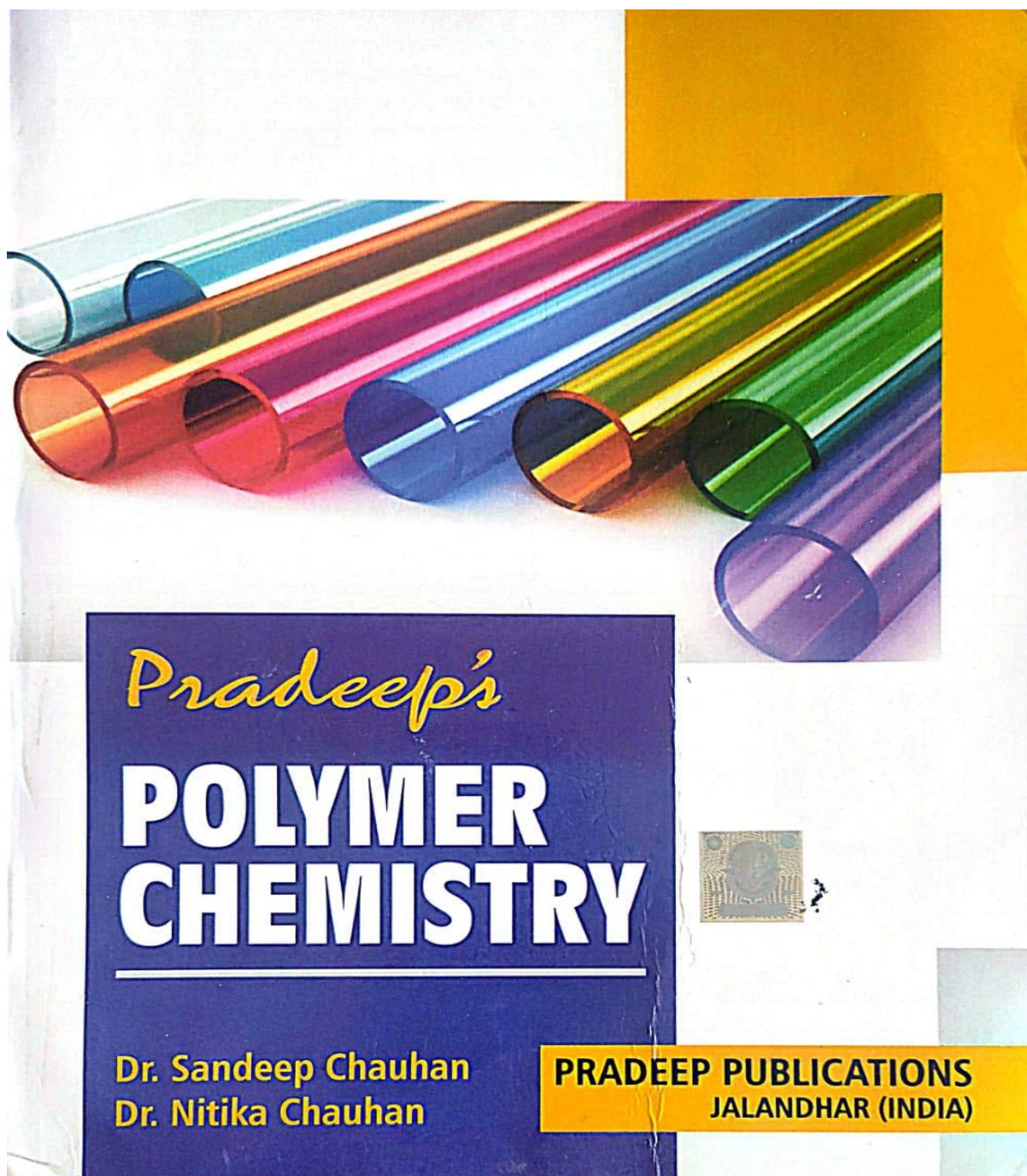
प्राचीन काल में हमारे समाज में नारी का महत्त्व पुरुष से कहीं बढ़कर होता था। वैदिक काल में तो नारी का स्थान नर से इतना बढ़ गया था कि पिता के नाम के स्थान पर माता का ही नाम प्रधान होकर परिचय का सूत्र बन गया था। धर्म द्रष्टा मनु ने नारी को श्रद्धामयी और पूजनीय मानते हुए कहा है—यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवताः अर्थात् जहाँ नारी की पूजा प्रतिष्ठा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल की नारी ने हीन भावना का परित्याग कर स्वतंत्र एवम् आत्मविश्वास के साथ अपने व्यक्तित्व का सुन्दर एवम् आकर्षक निर्माण किया था। गार्गी, मैत्रेयी, विद्योत्तमा आदि कई विदुषियों का नाम इसी श्रेणी में उल्लेखनीय हैं। धीरे-धीरे उत्तरमध्यकाल आते-आते नारी की स्थिति में परिवर्तन आया। वह अब नर से महत्त्वपूर्ण न होकर उसके समकक्ष श्रेणी में आ गई। पुरुष ने परिवार के भरण पोषण का उत्तरदायित्व सँभाल लिया तो स्त्री ने घर के अन्दर के सभी कार्यों का बोझ उठाना शुरू कर दिया। स्त्री की स्थिति में धीरे-धीरे उतार आता चला गया। स्त्री शिक्षा की सुविधाएँ कम होती चली गईं। उसकी सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की सुविधाएँ कम होती चली गईं तथा उसके शोषण की शुरुआत होने लगी। आधुनिक काल में स्त्रियों को महान समाज सुधारकों के कारण कुप्रथाओं से मुक्ति मिली तथा धीरे-धीरे स्त्रियों को पुरुष के बराबर अधिकार मिले। आज स्त्रियाँ पुरुष के साथ कंधे से कंधे मिलाकर कार्य कर रही हैं।

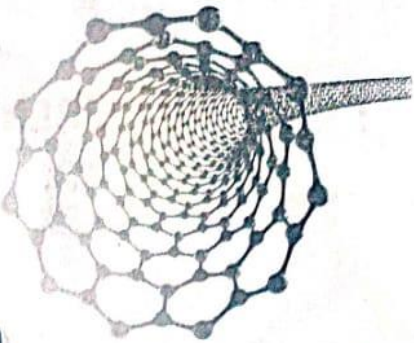
शकुंतिका उपन्यास में लेखक ने बेटियों के महत्त्व को बताया है कि बेटियाँ पुत्रों की अपेक्षा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं उनमें करुणा, सेवा तथा त्याग का भाव होता है। आधुनिक युग में बेटियों को भी बेटों के जैसे समान अधिकार दिये जाते हैं। भगवान दास मोरवाल हरियाणा क्षेत्र के रहनेवाले हैं। हरियाणा में लड़कियों का अनुपात अपेक्षाकृत कम है। लेखक ने अत्यधिक सुन्दर ढंग से बेटियों के महत्त्व को दर्शाया है कि लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा किस प्रकार से परिवार में अत्यधिक खुशियाँ

3.4.6 Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the year

3.4.6.1: Total number of books and chapters in edited volumes / books published, and papers in national/international conference-proceedings during the year

Sr. no.	Name	Book Chapter	Page no.
1	Prof. Sandeep Chauhan	Book	2-4
2	Prof. Sandeep Chauhan	Book	5-7
2	Prof. Sandeep Chauhan	Book	8-9





Pradeep's

POLYMER CHEMISTRY

According to new UGC syllabus for B.Sc. III [H.P. University]
and various other Indian Universities and Autonomous Colleges

Dr. Sandeep Chauhan

*M.Sc. (Gold Medalist), M.Phil., Ph.D.
UGC-SLET, GATE*

Associate Professor of Chemistry,
Department of Chemistry,
Himachal Pradesh University, Summer-Hill,
SHIMLA

Dr. Nitika Chauhan

*M.Sc. (Gold Medalist), M.Phil., Ph.D.
UGC-NET*

Assistant Professor of Chemistry,
Rajiv Gandhi Govt. College,
Chaura Maidan (Kotshera),
SHIMLA

SPLENDID COPY
NOT FOR SALE



PRADEEP PUBLICATIONS
JALANDHAR (INDIA)

Published by :

PRADEEP PUBLICATIONS

Head Office : Circular Road, opp. Sitta Mandir, Jalandhar-144 008 (Pb.).
Tele : 0181-2283736, 2280164

e-mail : pradeeppublications@gmail.com

Branch Office : 95, Shyam Lal Marg, opp. Hindi Park, Daryaganj, New Delhi - 110 002.
Tele : 011-23273595, 23281566

All rights reserved

© Publisher

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning, web or otherwise without the prior written permission of the publisher. Pradeep Publications has obtained all the information in this book from the sources believed to be true and reliable. However, Pradeep Publications or its authors or editors or illustrators don't take any responsibility for the absolute accuracy of any information published and the damages or loss suffered thereupon.

All disputes subject to Jalandhar Jurisdiction only.

Edition : Second

ISBN : 978-93-91966-07-2

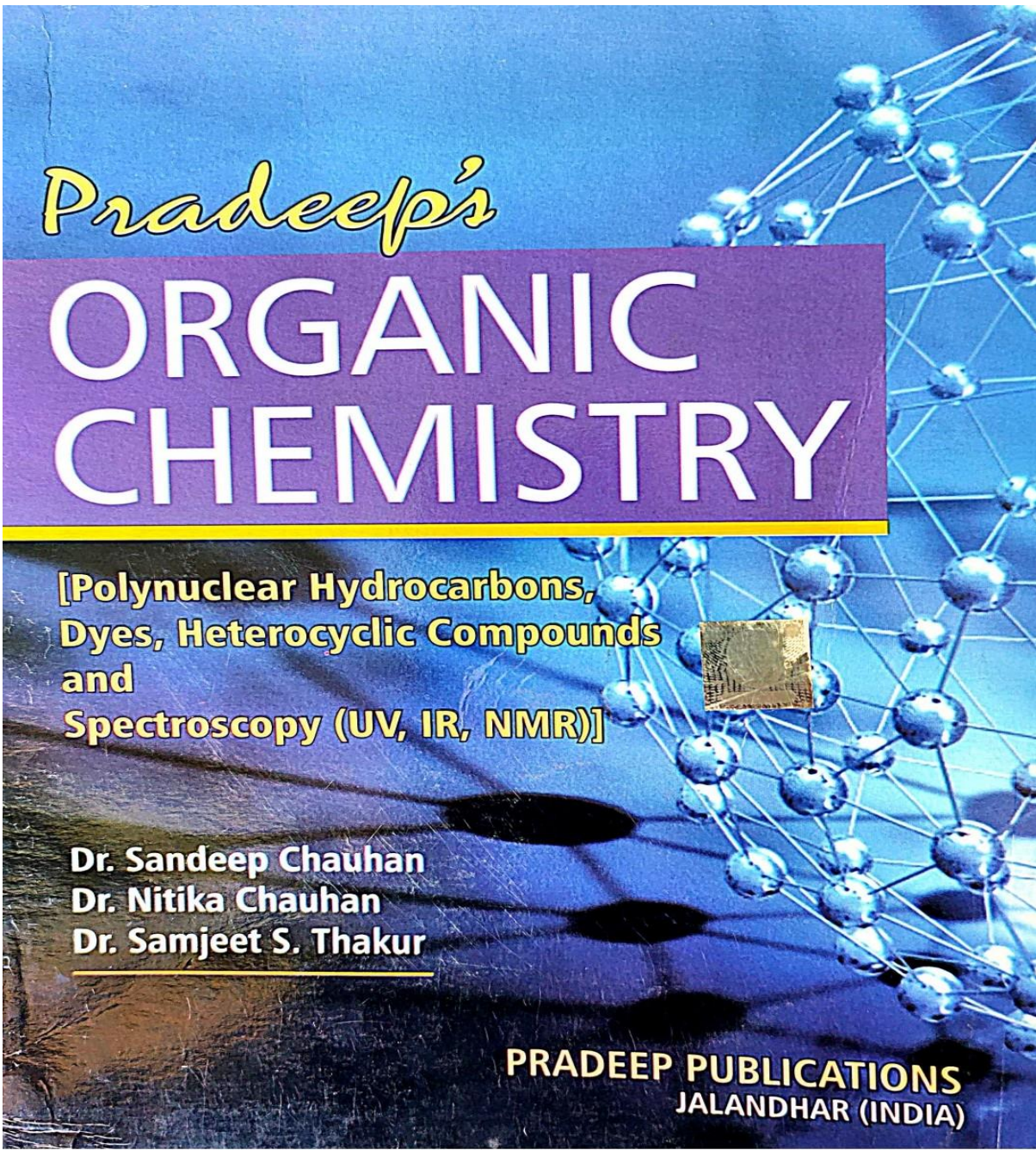
PRICE : ₹ 202.00



Every genuine copy of this book has the hologram of PRADEEP PUBLICATIONS on its title cover which art work is shown above. It contains the trade mark of Pradeep Publications. Above the trade mark, there are two circles. One circle moves from centre to corner while the other circle moves in reverse direction, when the hologram is tilted. Readers are cautioned not to buy any such book which does not bear the said hologram.

The book without this hologram may be spurious one and anyone having this book can be prosecuted under law.

Printed at : New Verma Printers, Jalandhar.



Pradeep's

ORGANIC CHEMISTRY

**[Polynuclear Hydrocarbons,
Dyes, Heterocyclic Compounds
and
Spectroscopy (UV, IR, NMR)]**

**Dr. Sandeep Chauhan
Dr. Nitika Chauhan
Dr. Samjeet S. Thakur**

**PRADEEP PUBLICATIONS
JALANDHAR (INDIA)**

Pradeep's ORGANIC CHEMISTRY

[Polynuclear Hydrocarbons, Dyes, Heterocyclic Compounds and Spectroscopy (UV, IR, NMR)]

According to new UGC syllabus for B.Sc. III of H.P. University and Semester V of various other Indian Universities and Autonomous Colleges

Dr. Sandeep Chauhan

M.Sc. (Gold Medalist), M.Phil., Ph.D.
UGC-SLET, GATE
Associate Professor of Chemistry,
Department of Chemistry,
Himachal Pradesh University, Summer-Hill,
SHIMLA

Dr. Nitika Chauhan

M.Sc. (Gold Medalist), M.Phil., Ph.D.
UGC NET
Assistant Professor of Chemistry,
Rajiv Gandhi Govt. College,
Chaura Maidan (Kotshera),
SHIMLA

Dr. Samjeet S. Thakur

M.Sc., Ph.D.
CSIR-JRF NET/SLET, GATE
Assistant Professor of Chemistry,
RGM Government College,
Joginder Nagar

SPECIMEN COPY
NOT FOR SALE



PRADEEP PUBLICATIONS
JALANDHAR (INDIA)

Published by :

PRADEEP PUBLICATIONS

Head Office : Circular Road, opp. Sitla Mandir, Jalandhar-144 008 (Pb.).
Tele : 0181-2283736, 2280164
e-mail : pradeeppublications@gmail.com

Branch Office : 95, Shyam Lal Marg, opp. Hindi Park, Daryaganj, New Delhi - 110 002.
Tele : 011-23273595, 23281566

All rights reserved

© Publisher

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning, web or otherwise without the prior written permission of the publisher. Pradeep Publications has obtained all the information in this book from the sources believed to be true and reliable. However, Pradeep Publications or its authors or editors or illustrators don't take any responsibility for the absolute accuracy of any information published and the damages or loss suffered thereupon.

All disputes subject to Jalandhar Jurisdiction only.

Edition : Second

ISBN : 978-93-88875-49-3

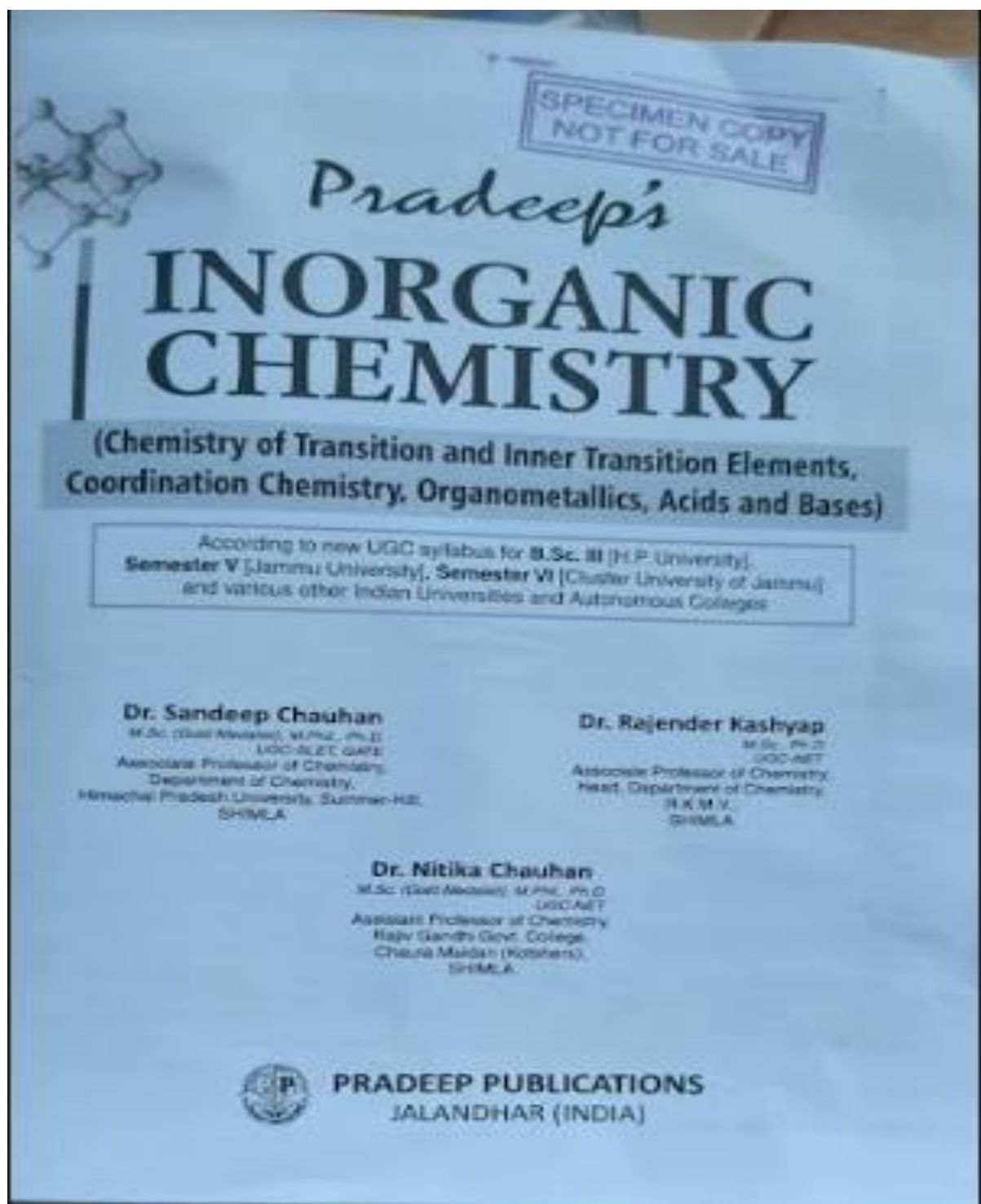
PRICE : ₹ 310.00



Every genuine copy of this book has the hologram of PRADEEP PUBLICATIONS on its title cover which art work is shown above. It contains the trade mark of Pradeep Publications. Above the trade mark, there are two circles. One circle moves from centre to corner while the other circle moves in reverse direction, when the hologram is tilted. Readers are cautioned not to buy any such book which does not bear the said hologram.

The book without this hologram may be spurious one and anyone having this book can be prosecuted under law.

Printed at : New Verma Printers, Jalandhar.



Published by :

PRADEEP PUBLICATIONS

Head Office : Circular Road, opp. Sita Mandir, Jalandhar-144 008 (Pb.),
Tele : 0181-2283738, 2280164

e-mail : pradeeppublications@gmail.com

Branch Office : 95, Shyam Lal Marg, opp. Hindi Park, Daryaganj, New Delhi - 110 002.
Tele : 011-23273595, 23281588

All rights reserved

© Publisher

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning, web or otherwise without the prior written permission of the publisher. Pradeep Publications has obtained all the information in this book from the sources believed to be true and reliable. However, Pradeep Publications or its authors or editors or illustrators don't take any responsibility for the absolute accuracy of any information published and the damages or loss suffered thereupon.

All disputes subject to Jalandhar Jurisdiction only.

First Edition : 2021

ISBN : 978-93-91966-02-7

PRICE : ₹ 310.00



Every genuine copy of this book has the hologram of PRADEEP PUBLICATIONS on its title cover which art work is shown above. It contains the trade mark of Pradeep Publications. Above the trade mark, there are two circles. One circle moves from centre to corner while the other circle moves in reverse direction when the hologram is tilted. Readers are cautioned



Jobank Series 21

Pratibha Spandan

Editors

Him Chatterjee

Mritunjay Sharma

Pankaj Gupta

Virender Kaushal

Recent Trends in Developmental Studies

19.	The Relationship between Online Consumer Behaviour and Electronic Products <i>Rohit Sublaik</i>	147
20.	Involvement of Women in Politics and Fifty Percent Reservation in Panchayati Raj Institutions <i>Hika</i>	150
21.	Emergence and Practices of Workplace Spirituality in Contemporary Organisations <i>Stuti Jalan</i>	156
22.	Change in the Traditional Land Utilization Pattern in Twin Villages of Dodra & Kwar, district Shimla, Himachal Pradesh <i>Yogesh and Pankaj Gupta</i>	161
PART II EDUCATION		
23.	Comparing the players of Jawahar Navodaya Vidyalaya And Government Senior Secondary School of Himachal Pradesh <i>Hari Singh and Reena Kumari</i>	166
24.	Education and Soft Skills for Better Living <i>Manju Joshi</i>	171
25.	Education, Equality and Development <i>Shweta Pandey and Ankur Tyagi</i>	177
26.	Effect of Student-Teacher Relationship as an Indicator of Personality Development Module on Teacher Effectiveness of Teacher Trainees in Relation to Locus of Control <i>Jagdeep Kaur and Lata Kumari</i>	186
27.	Efficiency of Sight Word Approach in Reading Functional Words among Children with Intellectual Disability <i>Sunil Kumar</i>	192
28.	Assessment of Attitude of Male and Female Primary School Teachers towards Educational Administration in Himachal Pradesh <i>Rishu Kumari</i>	201
29.	Evolution of Teacher Education in India Till 1947 <i>Abhishek Mahajan</i>	204
30.	Education and Human Values <i>Parul Verma and Chaman Lal</i>	211
31.	Present Status of Inclusive Education in Himachal Pradesh <i>Monika Sharma</i>	216
32.	A Historical Perspective of Inclusive Education <i>Shalini</i>	224
33.	Role of Multilingual Education in Nation-Building in India <i>Preeti Sahu</i>	228
34.	Time Management among Students of Himachal Pradesh University <i>Virender Kaushal, Mritunjay Sharma and Sunita</i>	234
List of Contributor		239

EDUCATION AND HUMAN VALUES

PARUL VERMA & CHAMAN LAL

INTRODUCTION

According to M.K.Gandhi "If wealth is lost nothing is lost" "If health is lost something is lost" "If character is lost everything is lost". Best of all things is character. Every one knows that life is precious – that life is important. We all protect our life because we care for it more than anything else. If life is so important, the values of life are even more important. Etymologically speaking, the word education is derived from the Latin word 'educare' meaning 'to raise' and 'to bring up'. According to few others, the word 'education' has originated from another Latin term 'Educere' which means 'to lead forth' or 'to come out'. The term 'education' has been interpreted by different people in different ways. Some people refer to it as formal schooling or to lifelong learning. Some others refer to it as acquisition of knowledge, skills, and attitudes. Some say that education is nothing, but training of people's mind in a particular direction to bring about desired changes.

"I hold that true education of the intellect can come only through a proper exercise and training of the body, hands, feet, eyes, ears, nose, etc. In other words, an intelligent use of the bodily organs in a child provides the best and quickest way of developing his intellect. But unless the development of the body and mind goes hand in hand with a corresponding awakening of the soul, the former alone would prove to be a poor lop-sided affair".

Mahatma Gandhi

According to M.K.Gandhi, education should make children ideal members of the democratic society (NCERT, 2014, p 3 & 9)

EDUCATION AND VALUES

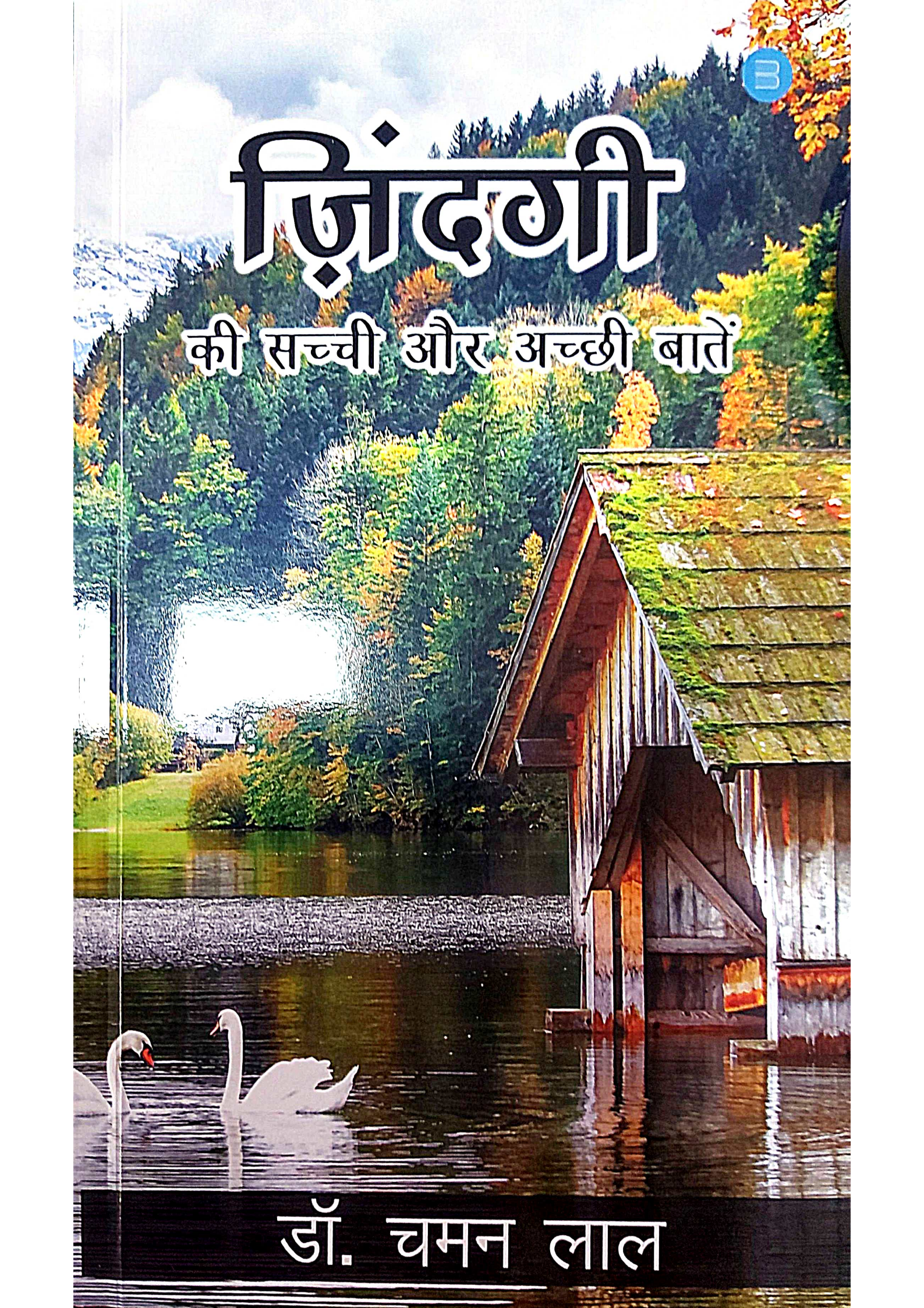
The word 'value' comes from the Latin word valere and an old French word valoir meaning 'be worth'. The psychological and social sciences define values as preferences or as desirable goals, emotions and interests. The humanistic disciplines define values as functioning imperatives or 'oughts' (Mukerjee, 1964). As held by Seshadri (2005), "education is a process of bringing about desirable changes in the way one thinks, feels, and acts in accordance with one's concept of good life." (p.10)

"Education must instill the fundamental human values; it must broaden the vision, to include the entire world and all mankind." Any system of education that does not help discriminate between right and wrong, that does not instill fear of sin and love for God, train you in the codes of humility and reverence, widen the horizon of your wonder, encourage you to worshipfully serve your parents and inspire you to dedicate your skills and attainments to the progress of your family, your village, community language and nation, stands condemned (Chilana & Dewan 2002).

"Could I climb to the highest place in Athens, I would lift up my voice and shout; fellow citizens why do you turn and scrap every stone to gather wealth and give so little care for your children to whom one day must you relinquish it all?"

Socrates

Modern education does not transform the individual; it merely informs and very often, deforms the minds of the youth. Based on nations and information's, it totally ignores the values and the human personality (Chitkara 2015).

A scenic landscape featuring a calm lake in the foreground with two white swans. To the right, a rustic wooden building with a steep, moss-covered roof stands on the water's edge. The background is a dense forest with trees displaying vibrant autumn colors of yellow, orange, and red, set against a backdrop of evergreen trees and distant mountains under a cloudy sky.

झिंदगी

की सच्ची और अच्छी बातें

डॉ. चमन लाल

© Dr Chaman Lal Banga 2020

All rights reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in December 2020

ISBN: 978-93-5427-277-6

BLUEROSE PUBLISHERS

www.blurosepublishers.com

info@blurosepublishers.com

+91 8882 898 898

Cover Design:

Sanya Rastogi

Typographic Design:

Tanya Raj Upadhyay

Distributed by: BlueRose, Amazon, Flipkart, Shopclues

सारबचन प्रभु दर्शन

डॉ. चमन लाल



BlueRose ONE[®]
Stories Matter



© Dr Chaman Lal 2022

All rights reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in September 2022

ISBN: 978-93-5611-356-5

BLUEROSE PUBLISHERS

www.BlueRoseONE.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

Cover Design:

Muskan

Typographic Design:

Tanya Raj Upadhyay

Distributed by: BlueRose, Amazon, Flipkart

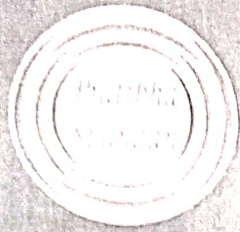


3.4.6 Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the year

3.4.6.1: Total number of books and chapters in edited volumes / books published, and papers in national/international conference-proceedings during the year

INDEX

S.No	Name of Teacher	Name of Book	Year	Page No.
1.	Prof. Him Chatterjee	Recent Trends in Developmental Studies	2022	2-3
2.	Prof. Him Chatterjee	Emerging Trends in Art and Literature	2020	4-5



[eBook Series 2]

Praeger Publishers

Editors

John C. Chang

Barbara J. Gentry

Michael J. Shuman

Wendell R. Kinsler

Recent Trends in Developmental Studies

Recent Trends in Developmental Studies

2020

ISBN 978-81-945576-1-6 (ebook)

Editors

Him Chatterjee
Mritunjay Sharma
Pankaj Gupta
Virender Kaushal

Price: **FREE**
OPEN ACCESS

Published by

Pratibha Spandan
Long View, Jutogh, Shimla 171008 Himachal Pradesh, India.
email : pspublications2015@gmail.com
website : www.pratibha-spandan.org

© All rights reserved with Pratibha Spandan and authors of particular articles. This book is open access.

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical or other, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, as long as you give appropriate credit to the original author(s), Editor(s) and the Publisher.

The contributors/authors are responsible for copyright clearance for any part of the content of their article. The opinion or views expressed in the articles are personal opinion of the contributors/authors and are in no sense official. Neither the Pratibha Spandan nor the Editors are responsible for them. All disputes are subject to the jurisdiction of District courts of Shimla, Himachal Pradesh only.

[ebook Series 1]



Pratibha Spandan

Editors

Him Chatterjee

Pankaj Gupta

Madhujay Sharma

Vikash Kaul

Emerging Trends in Art and Literature

Emerging Trends in Art and Literature 2020 ISBN 978-81-945576-0-9 (ebook)

Editors

Him Chatterjee
Mritunjay Sharma
Pankaj Gupta
Virender Kaushal

Price: FREE

OPEN ACCESS

Published by

Pratibha Spandan

Long View, Jutogh, Shimla 171008 Himachal Pradesh, India.

email : pspublications2015@gmail.com

website : www.pratibha-spandan.org

© All rights reserved with Pratibha Spandan and authors of particular articles. This book is published under open access.

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical or other, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, as long as you give appropriate credit to the original author(s), Editor(s) and the Publisher.

The contributors/authors are responsible for copyright clearance for any part of the contents of the article. The opinion or views expressed in the articles are personal opinions of the contributors/authors and are in no sense official. Neither the Pratibha Spandan nor the Editor(s) are responsible for them. All disputes are subject to the jurisdiction of District courts of Shimla, Himachal Pradesh only.

2020 Sixth International Conference on Parallel, Distributed and Grid Computing (PDGC 2020)

**Waknaghat, Solan, India
6 – 8 November 2020**



**IEEE Catalog Number: CFP2034K-POD
ISBN: 978-1-7281-7133-3**

**Copyright © 2020 by the Institute of Electrical and Electronics Engineers, Inc.
All Rights Reserved**

Copyright and Reprint Permissions: Abstracting is permitted with credit to the source. Libraries are permitted to photocopy beyond the limit of U.S. copyright law for private use of patrons those articles in this volume that carry a code at the bottom of the first page, provided the per-copy fee indicated in the code is paid through Copyright Clearance Center, 222 Rosewood Drive, Danvers, MA 01923.

For other copying, reprint or republication permission, write to IEEE Copyrights Manager, IEEE Service Center, 445 Hoes Lane, Piscataway, NJ 08854. All rights reserved.

****** This is a print representation of what appears in the IEEE Digital Library. Some format issues inherent in the e-media version may also appear in this print version.***

IEEE Catalog Number:	CFP2034K-POD
ISBN (Print-On-Demand):	978-1-7281-7133-3
ISBN (Online):	978-1-7281-7132-6
ISSN:	2573-3087

Additional Copies of This Publication Are Available From:

Curran Associates, Inc
57 Morehouse Lane
Red Hook, NY 12571 USA
Phone: (845) 758-0400
Fax: (845) 758-2633
E-mail: curran@proceedings.com
Web: www.proceedings.com

CURRAN ASSOCIATES INC.
proceedings
.com



Paper#	ECF ID	Title	Page#
P001	1570672593	Role of Indian IT Laws in Smart Healthcare Devices in the Intensive Care Unit in India	001-005
P002	1570674422	Comparative Analysis of Different Symmetric Encryption Techniques Based on Computation Time	006-009
P003	1570675403	A Study on Analysing the impact of Feature Selection on Predictive Machine Learning Algorithms	010-015
P004	1570675553	TCB Minimization towards Secured and Lightweight IoT End Device Architecture using Virtualization at Fog Node	016-021
P005	1570675865	Improved Max-Min Algorithm for Resource Allocation in Cloud Computing	022-024
P006	1570681586	Malware Detection Techniques: A Survey	025-030
P007	1570676633	A Novel Perspective to Threat Modelling using Design Thinking and Agile Principles	031-035
P008	1570677761	Android Malware Detection Using Chi-Square Feature Selection and Ensemble Learning Method	036-041
P009	1570678607	An Empirical Study of Cybercrime and Its Preventions	042-046
P010	1570659218	Semantic Information Retrieval Using String Ontology in Music Domain Using Protege5.0	047-052
P011	1570665953	Predictions Model for Smart Agriculture Using Internet of Things	053-056
P012	1570666227	Prediction and Monitoring of Air Pollution Using Internet of Things	057-060
P013	1570667953	Indian Health Care System is Ready to Fight Against COVID-19 A Machine Learning Tool for Forecast the Number of Beds	061-065
P014	1570672718	Intrusion Detection and Prevention system using Cuckoo search algorithm with ANN in Cloud Computing	066-072
P015	1570674604	Energy Efficient Quad Clustering based on K-means Algorithm for Wireless Sensor Network	073-077
P016	1570675354	Hybrid Job Scheduling in Distributed Systems based on Clone Detection	078-083
P017	1570675667	Digital Image splicing Detection Using RIC-LBP Feature Extraction Technique	084-087
P018	1570675670	Similarity Measure Approaches Applied in Text Document Clustering for Information Retrieval	088-092





P019	1570678735	A Multi-Factor Access Control and Ownership Transfer Framework for Future Generation Healthcare Systems	093-098
P020	1570674154	Comparative Analysis of Clustering Techniques for Deployment of Roadside Units	099-104
P021	1570675407	RPSO optimization with machine learning in WSN	105-110
P022	1570678954	Classification of Routing Protocols for Under Water Sensor Network	111-116
P023	1570687785	Group Key Management in Cloud for Shared Media Sanitization	117-120
P024	1570673673	A prospective study to assess the association between emotion and disease: Wrist Pulse Signals	121-125
P025	1570675272	Heterogeneous Stacked Ensemble Classifier for Software Defect Prediction	126-130
P026	1570668374	Hybrid Genetic and Simulated Annealing Algorithm for Capacitated Vehicle Routing Problem	131-136
P027	1570675005	Data analysis of various terrorism activities using big data approaches on Global Terrorism Database	137-140
P028	1570667836	A Secured Automated Attendance Management System Implemented with Secret Sharing Algorithm A Solution in Pandemic Outreach of Covid-19	141-145
P029	1570671443	Load Balancing In Heterogeneous Distributed Systems Using Singleton Model	146-149
P030	1570673006	Predictive of Solar Radiation using Hybrid Discriminant-Neural Network	150-153
P031	1570677186	BotEye: Botnet Detection Technique Via Traffic Flow Analysis Using Machine Learning Classifiers	154-159
P032	1570677796	Survey on Recent Cluster Originated Energy Efficiency Routing Protocols For Air Pollution Monitoring Using WSN	160-166
P033	1570679123	A machine learning approach to Human Activity Recognition	167-171
P034	1570679641	A Comparative Study on Vehicles Safety Systems	172-176
P035	1570680752	Integrating Genetic Algorithm with Random Forest for Improving the Classification Performance of Web Log Data	177-181
P036	1570668501	Election Result Prediction Using Twitter Sentiments Analysis	182-185





P037	1570676930	Efficient Task Allocation For Cloud Using Bat Algorithm	186-190
P038	1570673453	Improving the Efficiency of Automated Latent Fingerprint Identification Using Stack of Convolutional Auto-encoder	191-196
P039	1570673875	IoT and Cloud Based Healthcare Solution for Diabetic Foot Ulcer	197-201
P040	1570677305	Text document representation and classification using Convolution Neural Network	202-205
P041	1570667935	FPGA-Based Parallel Prefix Speculative Adder for Fast Computation Application	206-210
P042	1570673560	Stock Price prediction using LSTM and SVR	211-214
P043	1570673842	A Review on Advanced Techniques of Requirement Elicitation and Specification in Software Development Stages	215-220
P044	1570679048	Twitter Sentiment Analysis During Unlock Period of COVID-19	221-224
P045	1570668909	Optimizing trace tool-overhead for lock-intensive multi-threaded parallel applications	225-230
P046	1570675091	A Secure and Distributed Framework for sharing COVID-19 patient Reports using Consortium Blockchain and IPFS	231-236
P047	1570675811	A Review on Machine Learning Techniques for Prediction of Cardiovascular Diseases	237-242
P048	1570675927	A comparative Analysis of Deep Learning Models Applied for Disease Classification in Bell pepper	243-247
P049	1570677133	Forgery Detection for High-Resolution Digital Images using FCM and PBFOA Algorithm	248-253
P050	1570678847	A Literature Review On Sentiment Analysis Techniques Involving Social Media Platforms	254-259
P051	1570678988	BaYcP: A novel Bayesian customer Churn prediction scheme for telecom sector	260-265
P052	1570680739	Segmented Approach to Path Planning	266-271
P053	1570680864	Swarm Intelligence based Hierarchical Routing Protocols Study in WSNs	272-277
P054	1570687782	Detection of Nuclear Cataract in Retinal Fundus Image using Radial Basis Function based SVM	278-281





P055	1570667133	Iris Based Recognition System Utilizing Wavelet Transform	282-285
P056	1570678371	A Hybrid Grey Wolf-Whale Optimization algorithm for optimizing SVM in Breast Cancer Diagnosis	286-290
P057	1570674587	Epilepsy Seizure Detection by using Bayesian Optimize Bi-LSTM Model	291-296
P058	1570666379	Cloud's Transformative Involvement in Managing BIG-DATA ANALYTICS for Securing Data in Transit, Storage and Use: A Study	297-302
P059	1570674884	Robust beamforming against mismatched signal steering vector using ellipsoidal constraints	303-307
P060	1570668605	Color Fading: Variation of Colorimetric Parameters with Spectral Reflectance	308-312
P061	1570672168	A Compressed domain Based Robust and Imperceptible Digital Video Watermarking Scheme	313-317
P062	1570672730	Correlative Analysis of Denoising Methods in Spectral Images Embedded with Different Noises	318-323
P063	1570672767	Operating of a Drone Using Human Intent Recognition and Characteristics of an EEG Signal	324-327
P064	1570673480	Machine Learning in Wireless Sensor Networks: A Retrospective	328-331
P065	1570673532	Machine Learning Technique for Wireless Sensor Networks	332-335
P066	1570674280	Novel Machine Learning Approach for Sentiment Analysis of Real Time Twitter Data with Apache Flume	336-340
P067	1570674490	An empirical study of classification techniques by using machine learning classifiers	341-346
P068	1570674941	MotionNet architecture with Randomized Emission training strategy for adaptive bit rate video compression	347-350
P069	1570675158	Detecting Malignancy of Ovarian Tumour using Convolutional Neural Network: A Review	351-356
P070	1570675305	A Convolutional Neural Network Approach for The Diagnosis of Breast Cancer	357-361
P071	1570676500	Determining relation amongst movie ratings and market returns using regression analysis	362-366
P072	1570677909	Automatic Rumour Detection Model on Social Media	367-371
P073	1570675459	Exploring the Role of Vegetation Indices in Plant	372-377





		Diseases Identification	
P074	1570675096	Osmotic Computing and Related Challenges: A Survey	378-383
P075	1570675532	Wireless Sensor and Actuator Network(s) and its significant impact on Agricultural domain	384-389
P076	1570677306	A Deep Learning Technique for Multi-view Prediction of Bone	390-394
P077	1570677375	The Prediction of Buzz in Social Internet of Things	395-399
P078	1570679287	Low-Cost Autonomous Vehicle for Inventory Movement in Warehouses	400-405
P079	1570654773	Forecasting the Trend of Covid-19 Epidemic	406-409
P080	1570668561	Neurological disease prediction using ensembled Machine Learning Model	410-414
P081	1570668595	Semantic driven healthcare monitoring and disease detection framework from heterogeneous sensor data	415-420
P082	1570669792	A review of Machine learning based review approaches for Cricket	421-427
P083	1570672367	Cricket Activity Detection Using Computer Vision	428-433
P084	1570680876	Customer Churn Analysis and Prediction in Banking Industry using Machine learning	434-437
P085	1570673642	Improving diagnostic accuracy for breast cancer using prediction-based approaches	438-441
P086	1570674956	FoG Computing based IoT in Healthcare Application	442-446
P087	1570678738	3-Layer LSTM Model for Detection of Epileptic Seizures	447-450
P088	1570669240	Analyzing Functional Magnetic Resonance Brain Images with OpenCV2	451-454
P089	1570678358	Analysis and Visualization of Twitter Data using R	455-459
P090	1570679034	Analysis of Hybrid Fusion-Neural Filter Approach to detect Brain Tumor	460-464
P091	1570679667	Aspect Based Sentiment Analysis of Student Housing Reviews	465-470
P092	1570671031	An optimal Multi-Criteria Decision-Making Framework to select best Multispecialty Hospital for surgery	471-475





P093	1570671659	Using Optimization and Auction Approach: Security provided to Vehicle network through Blockchain Technology	476-480
P094	1570678143	SMSPPRL: A Similarity Matching Strategy for Privacy Preserving Record Linkage	481-485
P095	1570678789	Function Point Estimation for Portal and Content Management Projects	486-490
P096	1570678154	GPU- accelerated QPSK Transceiver with FEC over a Flat-fading Channel	491-495
P097	1570678750	Multi-core Implementation of Chaotic RGB-LSB Steganography Technique	496-500
P098	1570667776	A Non-Intrusive Approach for Driver's Drowsiness Detection	501-505
P099	1570667787	Plant Disease Detection Using Clustering Based Segmentation and Neural Network	506-510
P100	1570675665	Improvement of Searching Methodology for Network Applications using Bloom Filters and Hashing	511-514
P101	1570678782	Comparative Analysis of Feature Detection and Extraction Techniques for Vision-based ISLR system	515-520
P102	1570679093	A Switch Based Power Aware VM Consolidation Method for Cloud Datacenter	521-525
P103	1570675963	Advancement of Shopping Handcart for Supermarket	526-531
P104	1570678814	Issues with Routing in Software Defined Network	532-537
P105	1570678828	Comparative Study of Genetic Algorithm and Artificial Neural Network for Multi-class Classification based on Type-2 Diabetes Treatment Recommendation model	538-543
P106	1570679281	Writer Identification System Based on Offline handwritten Text in Gurumukhi Script	544-549
P107	1570679382	Object Recognition Using Image Segmentation	550-556
P108	1570666381	Industry4.0: A Study of India's Readiness as Preferred Investment Destination in Automotive & Auto Component Industry	557-560
P109	1570677049	Advanced Image Segmentation Technique using improved K Means Clustering Algorithm with Pixel Potential	561-565





P110	1570679045	Resource and Task Clustering based Scheduling Algorithm for Workflow Applications in Cloud Computing Environment	566-570
P111	1570675535	Synchronization in Parallel Programming Models for Heterogeneous Many-Cores	571-576
X001	1570681335	Root Search Algorithm with Time Complexity Analysis	No Show
X002	1570675372	Detection of Attacks through Lateral Movement in an Organization Network	No Show
X003	1570675428	Human Action Recognition using CNN-SVM model	No Show





UGC AUTONOMOUS

St. MARTIN'S ENGINEERING COLLEGE

Autonomous Institution - UGC, Govt. of India

A NON MINORITY COLLEGE, AFFILIATED TO JNTUH, APPROVED BY AICTE, ACCREDITED BY NBA & NAAC A+, ISO 9001:2008 CERTIFIED, SIRO RECOGNITION BY MINISTRY OF SCIENCE & TECHNOLOGY, GOVT.OF INDIA. DHULAPALLY, NEAR KOMPALLY, SECUNDERABAD - 500 100, TELANGANA STATE, INDIA, WWW.SMEC.AC.IN



CERTIFICATE OF APPRECIATION

Paper ID: CS0063



This is to certify that
JAWAHAR THAKUR,
HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY, SHIMLA, INDIA
Has participated and presented paper on
**“DELVING INTO VYPER: A SECURITY ORIENTED LANGUAGE FOR SMART CONTRACT
DEVELOPMENT”**

In the Online International Conference on
**“Intelligent Systems, Electrical and Communication Technology-2021”
(ICISECT-2021)**

Organized by Departments of ECE, EEE, CSE & IT
St. Martin's Engineering College, Dhulapally, Secunderabad, T.S, India
on 9th & 10th April 2021.


Dr. M. Narayanan
Convener & HOD (CSE)


Dr. P. Santosh Kumar Patra
Patron, Program Chair & Principal



www.smec.ac.in



UGC AUTONOMOUS

St. MARTIN'S ENGINEERING COLLEGE

Autonomous Institution - UGC, Govt. of India

A NON MINORITY COLLEGE, AFFILIATED TO JNTUH, APPROVED BY AICTE, ACCREDITED BY NBA & NAAC A+, ISO 9001:2008 CERTIFIED, SIRO RECOGNITION BY MINISTRY OF SCIENCE & TECHNOLOGY, GOVT. OF INDIA. DHULAPALLY, NEAR KOMPALLY, SECUNDERABAD - 500 100, TELANGANA STATE, INDIA, WWW.SMEC.AC.IN



CERTIFICATE OF APPRECIATION

Paper ID: CS0061



This is to certify that
JAWAHAR THAKUR,
HIMACHAL PRADESH UNIVERSITY, SHIMLA, INDIA
Has participated and presented paper on
“BLOCKCHAIN TECHNOLOGY FOR CURBING INPUT TAX CREDIT FRAUD IN INDIA”
In the Online International Conference on
“Intelligent Systems, Electrical and Communication Technology-2021”
(ICISECT-2021)
Organized by Departments of ECE, EEE, CSE & IT
St. Martin's Engineering College, Dhulapally, Secunderabad, T.S, India
on 9th & 10th April 2021.


Dr. M. Narayanan
Convener & HOD (CSE)


Dr. P. Santosh Kumar Patra
Patron, Program Chair & Principal



www.smec.ac.in



14-04-2023, 15:17

▼ Chapter

EUR 29.95

Price includes VAT (India)

- DOI: 10.1007/978-981-16-9573-5_20
- Chapter length: 15 pages
- Instant PDF download
- Readable on all devices
- Own it forever
- Exclusive offer for individuals only
- Tax calculation will be finalised during checkout

Buy Chapter

▼ eBook

EUR 192.59

Price includes VAT (India)

- ISBN: 978-981-16-9573-5
- Instant EPUB and PDF download
- Readable on all devices
- Own it forever
- Exclusive offer for individuals only
- Tax calculation will be finalised during checkout

Buy eBook

▼ Softcover Book

EUR 229.99

Price excludes VAT (India)

- ISBN: 978-981-16-9572-8
- Dispatched in 3 to 5 business days
- Exclusive offer for individuals only
- Free shipping worldwide
[See shipping information.](#)
- Tax calculation will be finalised during checkout

Buy Softcover Book

[Learn about institutional subscriptions](#)

References

1.

Kim, H., Feamster, N.: Improving network management with software defined networking. Commun. Mag. IEEE **51**(2), 114–119 (2013)

2.

Jain, S., Kumar, A., Mandal, S.. et al.: B4: experience with a globally-deployed software defined WAN. In: Proceedings Conference on Applications, Technologies, Architectures, and Protocols for Computer Communication, SIGCOMM 2013, vol. 43, pp. 3–14 (2013)

3.

ETSI: Network Function Virtualization: An Introduction, Benefits, Enablers, Challenges, & Call for Action. portal.etsi.org/NFV/NFV_White_Paper.pdf (2012)

4.

Li, Y., Chen, M.: Software-defined network function virtualization: a survey. IEEE Access **3**, 2542–2553 (2015)

5.

Kreutz, D., Ramos, F.M.V., Verissimo, P.: Towards secure and dependable software-defined networks. In: Second ACM SIGCOMM Workshop on Hot Topics in Software Defined Networking, pp. 55–60 (2013)

6.

Ha, T.J., Narantuya, J., Lim, H., Kim, J.: Scalable network intrusion detection on virtual SDN environment. In: Proceedings of the 2014 3rd IEEE International Conference on Cloud Networking, CloudNet 2014, pp.

264–265, Luxembourg (2014)

7. Ali, S.T., Sivaraman, V., Radford, A., Jha, S.: A survey of securing networks using software defined networking. *IEEE Trans. Reliab.* **64**(3), 1086–1097 (2015)
8. McKeown, N., Anderson, T., Balakrishnan, H., Parulkar, G., Peterson, L., et al.: OpenFlow: enabling innovation in campus networks. *ACM SIGCOMM Comput. Commun. Rev.* **38**(2), 69–74 (2008)
9. Zhang, H., Cai, Z., Liu, Q., Xiao, Q., Li, Y., et al.: A survey on security-aware measurement in SDN. In: *Hindawi Security and Communication Networks*, vol. 2018, Article ID 2459154
10. Tang, J., Liu, A., Zhao, M., Wang, T.: An aggregate signature based trust routing for data gathering in sensor networks. In: *Security and Communication Networks*, vol. 2018, Article ID 6328504, 30 pages (2018)
11. Holz, R., Riedmaier, T., Kammenhuber, N., Carle, G.: X.509 forensics: detecting and localising the SSL/TLS men-in-the-middle. In: *17th European Symposium on Research in Computer Security (ESORICS 2012)*, pp. 217–234 (2012)
12. Huang, C.Y., Chi, T.M., Ting, C.Y., Chieh, C.Y., Ren, C.Y.: A novel design for future on-demand service and security. In: *Proceedings IEEE 12th International Conference on Communication Technology, ICCT'2010*, pp. 385–388 (2010)
13. Wang, B., Zheng, Y., Lou, W., Hou, Y.T.: DDoS attack protection in the era of cloud computing and software-defined networking. *Comput. Netw.* **81**, 308–319 (2015)
14. Saidane, A., Nicomette, V., Deswarte, Y.: The design of a generic intrusion-tolerant architecture for web servers. *IEEE Trans. Dependable Secure Comput.* **6**(1), 45–58 (2009)
15. The Open Information Security Foundation (OI SF): Suricata, Article available at: <https://suricata-ids.org/about>
16. Roesch, M.: Snort—lightweight intrusion detection for networks. In: *Proceedings of the 13th USENIX Conference on System Administration LISA '99*, pp. 229–238, USENIX Association, California, USA (1999)

17. Fraga, J.S., Powell, D.: A fault- and intrusion-tolerant file system. In: Proceedings of the 3rd International Conference on Computer Security, pp. 203–218 (1985)

18. Bangalore, A.K., Sood, A.K.: Securing web servers using self cleansing intrusion tolerance (SCIT). In: Proceedings of the 2009, 2nd International Conference on Dependability, DEPEND 2009, pp. 60–65, Greece (2009)

19. Nguyen, Q.L., Sood, A.: Designing SCIT architecture pattern in a cloud-based environment. In: Proceedings of the Dependable Systems and Networks Workshops (DSN-W), IEEE/IFIP 41st International Conference, pp. 123–128, HongKong (2011)

20. Lim, J., Kim, Y., Koo, D., Lee, S., Doo, S., Yoon, H.: A novel adaptive cluster transformation (ACT)-based intrusion tolerant architecture for hybrid information technology. *J. Supercomput.* **66**(2), 918–935 (2013)

21. Nguyen, Q.L., Sood, A.: A comparison of intrusion-tolerant system architectures. *IEEE Secur. Priv.* **9**(4), 24–31 (2011)

22. Heo, S., Lee, S., Jang, B., Yoon, H.: Designing and implementing a diversity policy for intrusion-tolerant systems. *IEICE Trans. Inf. Syst.* **94-D**(4), 1–12 (2016)

23. Jang, B., Doo, S., Lee, S., Yoon, H.: Hybrid recovery based intrusion tolerant system for practical cyber-defense. *IEICE Trans. Inf. Syst.* **E99D**(4), 1081–1091 (2016)

24. Lee, Y., Lee, S., Seo, H., Yoon, C., Shin, S., Yoon, H.: Duo: software defined intrusion tolerant system using dual cluster. In: Hindawi Security and Communication Networks Volume 2018, Article ID 6751042, 13 pages

25. Shin, S., Gu, G.: Attacking software-defined network: a feasibility study. In: ACM SIGCOMM Workshop on Hot Topics in SDN (2013)

26. Tran, T.V., Ahn, H.: FlowTracker: a SDN stateful firewall solution with adaptive connection tracking and minimized controller processing. In: International Conference on Software Networking (ICSN)

27. Hu, H., Han, W., Ahn, G.J., Zhao, Z.: Flowguard: building robust firewalls for software-defined networks. In: Proceedings of the Third Workshop

on Hot Topics in Software Defined Networking, pp. 97–102. ACM (2014)

28. Caprolu, M., Raponi, M., Pietro, R.D.: FORTRESS: an efficient and distributed firewall for stateful data plane SDN. In: Hindawi Security and Communication Networks (2019)

29. Han, B., Yang, X., Sun, Z., Huang, J., NN, J.: OverWatch: a cross-plane DDoS attack defense framework with collaborative intelligence in SDN. In: Hindawi Security and Communication Networks (2018)

30. Scarfone, K., Mell, P.: Guide to intrusion detection and prevention systems (IDPS). NIST Spec. Pub **800**, 94 (2007)

31. Sultana, N., Chilamkurti, N., Peng, W., Alhadad, R.: Survey on SDN based network intrusion detection system using machine learning approaches. In: Peer-to-Peer Networking and Applications, pp. 1–9 (2018)

32. Kwon, D., Kim, H., Kim, J., Suh, S.C., Kim, I., Kim, K.J.: A survey of deep learning-based network anomaly detection. In: Cluster Computing, pp. 1–13 (2017)

33. Xiao, C.C., Bn, X.Y.: Research on load balance method in SDN. Int. J. Grid Distrib. Comput. **9**(1), 25–36 (2016)

34. Gabriel, I.M., Valeriu, P.V.: Achieving DDoS resiliency in a software defined network by intelligent risk assessment based on neural networks and danger theory. In: Proceedings of IEEE 15th International Symposium on Computational Intelligence and Informatics (CINTI), Budapest, Hungary, pp. 319–324 (2014)

35. Latah, M., Toker, L.: Artificial intelligence enabled software defined networking: a comprehensive overview. In: IET Networks

36. Phan, T.V., Toan, T.V., Tuyen, D.V., Huong, T.T., Thanh, N.H.: OpenFlowSIA: an optimized protection scheme for software-defined networks from flooding attacks. In: Proceedings of IEEE Sixth International Conference on Communications and Electronics (ICCE), Ha Long, Vietnam, pp. 13–18 (2016)

37. Boero, L., Marchese, M., Zappatore, S.: Support vector machine meets software defined networking in IDS domain. In: Proceedings of IEEE

29th International Teletraffic Congress (ITC 29), Genoa, Italy, pp. 25–30 (2017)

38. Phan, T.V., Bao, N.K., Park, M.: A novel hybrid flow-based handler with DDoS attacks in software-defined networking. In: Proceedings of 2016 International IEEE Conferences on Ubiquitous Intelligence & Computing, Advanced and Trusted Computing, Scalable Computing and Communications, Cloud and Big Data Computing, Internet of People, and Smart World Congress, Toulouse, France, pp. 350–357 (2016)

39. Tariq, F., Baig, S.: Botnet classification using centralized collection of network flow counters in software defined networks. *Int. J. Comput. Sci. Inf. Secur.* **14**(8), 1075–1080 (2016)

40. Le, A., Dinh, P., Le, H., Tran, N.C.: Flexible network-based intrusion detection and prevention system on software-defined networks. In: Proceedings of IEEE International Conference on Advanced Computing and Applications (ACOMP), Ho ChiMinh, Vietnam, pp. 106–111 (2015)

41. Tanf, F., Li, L., Barolli, L., Tang, C.: An efficient sampling and classification approach for flow detection in SDN-based big data centers. In: Proceedings of IEEE 31st International Conference on Advanced Information Networking and Applications (AINA), Taipei, Taiwan, pp. 1106–1115 (2017)

42. Leng, B., Huang, L., Qiao, C., Xu, H.: A decision-tree-based on-line flow table compressing method in software defined networks. In: Proceedings of IEEE/ACM 24th International Symposium Quality of Service (IWQoS), Beijing, China, pp. 1–2 (2016)

43. Latah, M., Toker, L.: Towards an efficient anomaly-based intrusion detection for software-defined networks. In: IET Networks (2018)

44. Ivannikova, E., Zolotukhin, M., Hamalainen, T.: Probabilistic transition-based approach for detecting application-layer DDoS attacks in encrypted software defined networks. In: International Conference on Network and System Security, Helsinki. Springer, Cham, pp. 531–543, 21–23 Aug 2017

45. Barki, L., Shidling, A., Meti, N., Narayan, D.G., Mulla, M.M.: Detection of distributed denial of service attacks in software defined networks. In: IEEE International Conference on Advances in Computing, Communications and Informatics (ICACCI), Jaipur, India, pp.

2576–2581

-
46. Sahoo, K.S., Sahoo, S., Mishra, S.K., Mohanty, S., Sahoo, B.: Analyzing controller placement in software defined networks. In: IJCA Proceedings on National Conference on Next Generation Computing and its Applications in Computer Science and Technology NGCAST, Sarang, India, pp. 16–12 (2016)
-
47. Jankowski, D., Amanowicz, N.: Intrusion detection in software defined networks with self-organized maps. *J. Telecommun. Inf. Technol.* **4**, 3–9 (2015)
-
48. Nam, T.M., Phong, P.H., Khoa, T.D., et al.: Self-organizing map-based approaches in DDoS flooding detection using SDN. In: IEEE 2018 International Conference on Information Networking (ICOIN), Chiang Mai, Thailand, pp. 249–254 (2018)
-
49. Wang, T., Chen, H.: SGuard: a lightweight SDN safe-guard architecture for DoS attacks. *China Commun.* **14**(6), 113–125 (2017)
-
50. Phan, T.V., Bao, N.K., Park, M.: Distributed-SOM: A novel performance bottleneck handler for large-sized software-defined networks under flooding attacks. *J. Netw. Comput. Appl.*, pp. 14–25 (2017)
-
51. Shan, J.S., Bin, X.Y.: The APT detection method in SDN. In: IEEE 2017, 3rd International Conference on Computer and Communications (ICCC), Chengdu, China, pp. 1240–1245 (2017)
-
52. Fan, Z., Xiao, Y., Navak, A., Tan, C.: An improved network security situation assessment approach in software defined networks. In: Peer-to-Peer Networking and Applications (2017)
-
53. Hurley, T., Perdomo, J.E., Perez-Pons, A.: HMM-based intrusion detection system for software defined networking. In: Proceedings IEEE ICMLA'16, Anaheim, CA, USA, pp. 617–621 (2016)
-
54. MohanPriya, P., Shalinie, S.M.: Restricted Boltzmann Machine based detection system for DDoS attack in software defined networks. In: Proceedings of IEEE Fourth International Conference on Signal Processing, Communication and Networking (IC-SCN), Chennai, India, pp. 1–6 (2017)
-
55. Wang, P., Lin, S.C., Luo, M.: A framework for QoS-aware traffic

classification using semi-supervised machine learning in SDNs. In: Proceedings of IEEE International Conference on Services Computing (SCC), San Francisco, USA, June–July 2016, pp. 760–765

56. Chen, F., Zheng, X.: Machine-learning based routing pre-plan for sdn. In: International Workshop on Multi-disciplinary Trends in Artificial Intelligence, Fuzhou, China, pp. 149–159 (2015)

57. Li, W., Li, G., Yu, X.: A fast traffic classification method based on SDN network. In: Proceedings of the 4th International Conference on Electronics, Communications and Networks (CECNET IV), Beijing, China, pp. 223–229 (2014)

58. Wang, B., Sun, Y., Yuan, C., Xu, X.: LESLA: a smart solution for SDN-enabled mMTC E-health monitoring system. In: Proceedings of the 8th ACM MobiHoc, Workshop on Pervasive Wireless Healthcare Workshop, Los Angeles, USA (2018)

59. Sultana, N., Chilamkurti, N., Peng, W., Alhadad, R.: Survey on SDN based network intrusion detection system using machine learning approaches. In: Peer-to-Peer Networking and Applications.

60. Mehdi, S.A., Khalid, J., Khaiyam, S.A.: Revisiting traffic anomaly detection using software defined networking. In: Recent Advances in Intrusion Detection, pp. 161–180

61. Jankowski, D., Amanowicz, M.: On efficiency of selected machine learning algorithms for intrusion detection in software defined networks. *Int. J. Electron. Telecommun.* **62**(3), 247–252

62. Twycross, J., Williamson, M.M.: Implementing and testing a virus throttle. In: Proceedings of the 12th Conference on USENIX Security Symposium, vol. 12, p. 20. USENIX Association, Berkeley (2003)

63. Gu, Y., McCallum, A., Towsley, D.: “Detecting anomalies in network traffic using maximum entropy estimation. In: Proceedings of the 5th ACM SIGCOMM Conference on Internet Measurement, IMC 2005, p. 32. USENIX Association, Berkeley, (2005)

64. Mahoney, M.V.: Network traffic anomaly detection based on packet bytes. In: Proceedings of the 2003 ACM Symposium on Applied Computing—SAC '03

65. Braga, R., Mota, E., Passito, A.: Lightweight DDoS flooding attack detection using NOX/OpenFlow. In: 35th Annual IEEE Conference on Local Computer Networks, Denver, Colorado

66. Feng, Y., Guo, R., Wang, D., Zhang, B.: Research on the active DDoS filtering algorithm based on IP flow. In: 2009 Fifth International Conference on Natural Computation, pp. 628–632. IEEE (2009)

67. Tuan, T.A., Mhamdi, L., Mclemon, D., Zaidi, S.A.R., Ghogho, M.: Deep learning approach for network intrusion detection in software defined networking. In: International Conference on Wireless Networks Mobile Communications

68. Niyaz, Q., Sun, W., Javaid, A.Y.: A deep learning based DDoS detection system in software defined networking (SDN). CoRR abs/1611.07400

Funding

This research paper is not funded by any funding agency or organization.

Author information

Authors and Affiliations

Department of Computer Science, H.P.University, Summer Hill, Shimla, India

Deepak Kumar & Jawahar Thakur

Editor information

Editors and Affiliations

Department of ECE, RVS Technical Campus, Coimbatore, Tamil Nadu, India

Dr. S. Smys

Departamento de Engenharia Mecanica, Faculdade de Engenharia, Universidade do Porto, Porto, Portugal

Dr. João Manuel R. S. Tavares

Faculty of Engineering, Aurel Vlaicu University of Arad, Arad, Romania

Dr. Valentina Emilia Balas

Ethics declarations

Conflict of Interest

There are no conflicts of interest among authors.

Rights and permissions

[Reprints and Permissions](#)

Copyright information

© 2022 The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Singapore Pte Ltd.

About this paper

Cite this paper

Kumar, D., Thakur, J. (2022). Handling Security Issues in Software-defined Networks (SDNs) Using Machine Learning. In: Smys, S., Tavares, J.M.R.S., Balas, V.E. (eds) Computational Vision and Bio-Inspired Computing. Advances in Intelligent Systems and Computing, vol 1420. Springer, Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-16-9573-5_20

[.RIS](#) [.ENW](#) [.BIB](#)

DOI
https://doi.org/10.1007/978-981-16-9573-5_20

Published	Publisher Name	Print ISBN
31 March 2022	Springer, Singapore	978-981-16-9572-8
Online ISBN	eBook Packages	
978-981-16-9573-5	Intelligent Technologies and Robotics	
	Intelligent Technologies and Robotics (R0)	

Not logged in - 49.36.144.59
Not affiliated
SPRINGER NATURE

© 2023 Springer Nature Switzerland AG. Part of [Springer Nature](#).

जीवन धारा

“काव्य संग्रह”



रोशन लाल जिन्टा एवं अनीता दत्ता

जीवन धारा

"काव्य संग्रह"

रोशन लाल जिन्टा

एवं

अनीता दत्ता



Indu Book Services Pvt. Ltd.

(Publishers & Distributors)

New Delhi

जीवन वाच "साव्य संग्रह"
संग्रह वाच किन्ता एव अनीता वाच

Copyright © Author

First Published: 2020

ISBN: 978-93-86754-71-4

Disclaimer: The views expressed in the book are that of the Authors and not necessarily of the publisher. Authors are themselves responsible for any kind of Plagiarism found in their book and any related issues.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted, by any means, electronic mechanical, photocopying, recording, without permission. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Printed in India:

Indu Book Services Pvt. Ltd.

(Publishers & Distributors)

4638 1st Floor, 21 Ansari Road,

Daryaganj, New Delhi - 110002

Phone : 011-43584152,

Mobile : +91-9873655211, 8851457915

E-mail : indubook@gmail.com

indubook@gmail.com

Website : www.indubookservices.com

Typeset by

SHAGUN GRAPHICS, Delhi-110086

पुस्तक परिचय

मनुष्यों के विचार, भाव एवं व्यवहार, प्रकृति की उन जल, वायु व अग्नि की धाराओं की तरह हैं जो जीवन में उफ़ान-तूफ़ान, सम्मान-समृद्धि, खुशी-गम, दरिद्रता व विकास लाने में अहम भूमिका निभाते हैं। यही जीवन धारा है, जिसमें तीव्र मानसिक वेग है और गंभीर संवेग है। मनुष्य प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा मानसिक कारकों के प्रवाह में गुजर कर अपनी जीवन धारा सुनिश्चित करता है। इन कारकों का मन व मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो तो मन पर नकारात्मक असर पड़ता है व मनुष्य भावनाओं के प्रवाह में आकर विपरीत दिशा में सोचना, समझना, व्यवहार व कार्य करना शुरू करता है। इससे मनुष्य में मानसिक विकृतियाँ आती हैं जिससे वह कुकर्म के रास्ते में चलता है। उदाहरणतः धूम्रपान, मद्यपान, नशीली दवाएँ जैसे कि अफीम, सुल्फ़ा, चिट्ठा व अपराध, आशुकी, रेप, वैश्यावृत्ति, चोरी-डकैती, जुआ, रिश्वतखोरी, विपरीत सोच, शक, सनक, तानेबाजी, बहस, गुस्सा व प्रताड़ना मनुष्यों के जीवन में अफरातफरी मचाकर खलल पैदा करती है जो उसके स्वयं व परिवार के लिए घातक सिद्ध होती है। यदि परिस्थितियों का जीवन में सकारात्मक प्रवाह रहता है तो मनुष्य सृजनात्मक तथा विकासात्मक कार्य करने में अहम भूमिका निभाते हैं। अंततः मानसिक अवस्थाओं व व्यवहारात्मक गतिविधियों का समन्वयन, मनुष्यों व समाज के विकारों को दूर करने तथा खुशहाल बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक जीवन धारा में जीवन के कई रंगों को काव्य संग्रह के रूप में उकेर कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। आशा करते हैं कि आपको यह जीवन धारा "काव्य संग्रह" अवश्य पसंद आएगा।

लेखक परिचय



भारत ज्योति पुरस्कार से सम्मानित प्रो. रोशन लाल जिन्टा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला में प्राध्यापक (मनोविज्ञान) कार्यरत हैं। वर्तमान में प्रो. जिन्टा शिक्षक संघ के अध्यक्ष भी हैं। पूर्व में वे दो बार मनोविज्ञान, एक बार आजीवन शिक्षा विभाग तथा एक बार समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष भी रहे हैं। इन्होंने स्नातकोत्तर मनोविज्ञान में गोल्ड मैडल हासिल किया तथा इसी विषय में विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की है। इनकी पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित हैं तथा 20 साल का कार्यकाल है। प्रो. जिन्टा मशहूर रनसार वैली के गाँव टोड़सा, तहसील चिड़गाँव, रोहड़ू, जिला शिमला हिमाचल प्रदेश, भारत से सम्बंध रखते हैं। वर्तमान पुस्तक जीवन धारा में इन्होंने काव्य संग्रह के माध्यम से जीवन के कई रंगों के प्रवाह को पाठकों के समक्ष प्रदर्शित करने की कोशिश की है।



नेक व्यक्तित्व एवं कुशाग्र बुद्धि की धनी एवं कुशल समाज सेविका, श्रीमति अनीता दत्ता ने "समाजशास्त्र" तथा "राजनीति विज्ञान" में स्नातकोत्तर डिग्रियाँ, बी.एड. तथा कम्प्यूटर में एम.डी.एस.टी. डिप्लोमा हासिल किया है। श्रीमति दत्ता "नावर वैली" रोहड़ू के गाँव कशैणी टिक्कर जिला शिमला हिमाचल प्रदेश, भारत से सम्बंध रखती हैं। लेखिका भी "रनसार वैली" के गाँव ओड़ीधार में जन्मी तथा छवारा के तहसील चिड़गाँव में बसी, अपने पिता जी श्री धर्म प्रकाश व माता जी बेगम की चुलबुली संतान है। इन्होंने वर्तमान पुस्तक जीवन धारा में अपने सृजनात्मक विचारों को काव्य लेखन का रूप देकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।



Indu Book Services Pvt. Ltd.

(Publishers and Distributors)

4638 1st Floor, 21 Ansari Road, Daryaganj,

New Delhi - 110002, Ph. No. 011-43584152

Mob. No. +91-9873655211, 8851457915

Email: indubook@gmail.com, indubook@ymail.com

Visit us at: www.indubookservices.com

₹ 995

ISBN : 978-93-86754-71-4



9 789386 754714



BREAKING THE GLASS CEILING

**Gender and Culture
in Contemporary Literature**

Editors:

Parul Yadav

Roshni Sengupta

Chandni Sengupta



BREAKING THE GLASS CEILING

**Gender and Culture
in Contemporary Literature**

Editors:

Parul Yadav

Roshni Sengupta

Chandni Sengupta



AUTHORS P R E S S

Worldwide Circulation through Authorspress Global Network
First Published in 2021

by

Authorspress

Q-2A Hauz Khas Enclave, New Delhi-110 016 (India)

Phone: (0) 9818049852

E-mail: authorspressgroup@gmail.com

Website: www.authorspressbooks.com

Breaking the Glass Ceiling:

Gender and Culture in Contemporary Literature

ISBN 978-93-90459-95-7

Copyright © 2021 Parul Yadav, Roshni Sengupta & Chandni Sengupta

Concerned authors are solely responsible for their views, opinions, policies, copyright infringement, legal action, penalty or loss of any kind regarding their articles. Neither the publisher nor the editors will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their articles.

Printed in India at Thomson Press (India) Limited

Contents

<i>Foreword</i>	5
<i>Acknowledgements</i>	11
<i>Preface</i>	13
Gender and Culture in Literature: Key Concepts, Complexes and Engagements Editor's Note Roshni Sengupta	17
1. <i>Bama: An Iconic Dalit Woman Autobiographer</i> Nidhi Mishra	49
2. Medini Vennilavu and Social Constructions of Gender, Sexuality and Devadasis: A Feminist Sociological Analysis of ' <i>Chandrotsavam</i> ' Bijitha P.R.	60
3. Gender and Society in Kangra during the Colonial Period Neelam and Anjali Verma	74
4. The Female Experience of Violence in Nagaland: A Critical Study of Temsula Ao's <i>These Hills Called Home: Stories from a War Zone and Laburnum for My Head Stories</i> Adenuo Shirat Luikham	86
5. Cultural Markers of Indian Womanhood: Re-reading of Anita Desai's <i>Fasting, Feasting</i> Aditi Paul	98
6. The Role of Educational Institutions in Gender Sensitisation: An Exploration Gopal Krishna Dwivedi	112

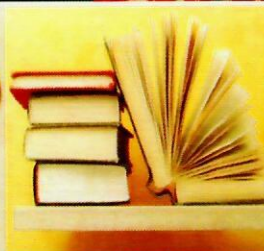
Gender and Society in Kangra during the Colonial Period

Neelam and Anjali Verma

Introduction

Regional history has always played an important role in defining the socio-cultural image of people of that area. Gender relations form the lifeline of this depiction. Moreover, the status of women is defined as the criteria to check the growth or recession of any society. Caste remained another influencing factor in defining the growth or regression of society. The Himalayan region remained one of the paramount interests for researchers for long as it has seen several waves of interaction of indigenous religion and society with Hinduism. Also interactions took place with new rulers like Muslims to the British that influenced the political structure as well.

Kangra district is one of the biggest districts of Himachal Pradesh that has its historical roots going back to Mahabharata times when appeared the name of Shusharman Chandra who had participated in the Mahabharata war siding with the Kurus. (Perry, 1979, p.10) This is known for one of the longest serving dynasties of the area, the Katoch dynasty. Historians indicated that after the war of Mahabharata, Shusharaman Chand and his associates defeated the local kings and Thakur and established Jalandhar and Nagarkot as territories of Katoch dynasties (Hutchison and Vogel, 1933, p.104). During colonial rule Kangra, Kullu and Lahaul-Spiti were under the direct control of the British and continued to be



**Corona Pandemic (COVID-19)
and
Interdisciplinary Issues**



Edited by
Dr. Vijay Singh
Dr. Abhishek Dhiman

Corona Pandemic (Covid-19) and Interdisciplinary Issues

Edited by:
Dr. Vijay Singh
Dr. Abhishek Dhiman



Akshita Publishers and Distributors
Delhi-110053 (India)

Published by :

Akshita Publishers and Distributors

H.No. J-180/5-A, 4th Pusta,

Pahari Hotel Wali Gali

Opposite Ajay Medical Store,

Kartar Nagar, Delhi-110053

E-mail: abooks2019@gmail.com

Mobile: 9968053557, 9811149816

Corona Pandemic (Covid-19) and Interdisciplinary Issues

© Editor

First Edition 2020

ISBN: no 978-81-946186-6-7

All rights reserved no part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the editor.

PRINTED IN INDIA

Published by Akshita Publishers and Distributors, Delhi-110053. Laser Type Setting at Shahabuddin Computers, Printed at Milan Enterprises, Delhi-110002.

Contents

<i>List of Contributors</i>	<i>v</i>
<i>Preface</i>	<i>vii</i>
1. COVID-19 Pandemic and Employee Training and Development –Akaa Samuel Terzungw & Adagba David Teryisa	1
2. COVID-19 Pandemic and its Impact on Human Life –Dushma Thakur	20
3. Impact of Coronavirus (Covid-19) on the Indian Economy: An Overview –Dr. Inderjit Singh	47
4. Tourism ‘Rip Current’ and the Relation with COVID-19 Pandemic: Challenges for Tourism in Torres/RS –Jennifer Bauer Eme & Maria Luiza Cardinale Baptista	62
5. Impact of Covid 19 on Education in Indonesia –Khalim Syamsuddin, Rohana, Tribhuwan Kumar, Muh. Taufiqurrakhman, Digvijay Pandey, Wegayehu Enbeyle	90
6. ‘We are in the Full Sea’! Reflections on Pandemic Times Covid-19, Considering the Weave of Subjective	105

Tourist-Communicational Ecosystems1	105
-Maria Luiza Cardinale Baptista	
7. Impact of Coronavirus in Indian Economy	131
-Rajesh Kumar	
8. Impact of Covid-19 on Lives of Rural Communities Dependent on Ntfps With Reference to Mandi District, Himachal Pradesh	140
-Ritu Sharma, G. S. Goraya & M. K. Seth	
9. Impact of Corona Virus on Health, Economy and Education	154
-Rohana Syamsuddin, A.D. Badr, Wael W Al Buzz, Fatun Fatimah Azahrah, Muh.Taufiqurrakhman & Nurilah Fitrah	
10. COVID-19 in Central Asian Countries: Implications and Policy Responses	173
-Saltanat Adilkhasym Mukash	
11. Temples of Western Himalaya: As Centres of Spiritual Health During the Covid-19	206
-Sunny Kumar	
<i>Index</i>	217

Temples of Western Himalaya: As Centres of Spiritual Health During the Covid-19

-Sunny Kumar

Abstract

The study discusses the importance of religious centres as the natural healing centre for spiritual health. The eighteenth to twentieth century have witnessed the establishment of numerous temples of socio-religious and historic importance in the Western Himalaya. The impact of religious places run deep into our economic and social system, along with these impacts it also has psychological implications on the health of traveler and devotees of these shrines. Study tries to make distinction between the regular devotees and travelers from all over the India to explore nature. Shrines are centre of traditional ceremonies; which have been performed for the well being of progeny. The devotees have great faith in these rituals. The nineteenth and

twentieth century ethno-historical accounts of the Western Himalayas focused on locating spiritual identity of the hills' population, whereas within the western Himalaya an unequaled mixture of faith and natural spirituality is found in them. The deities until worshiped by a little community have emerged as emblem of bigger identities. Presently, devotees have been come from each every corner of the world. This study have four sections; one is on the term temple and historical background of spiritual relationship with religion. Second, how Covid- 19 has been impacted the spiritual health of people all over the world. The third part of the study deals with that how temples plays significant role to revive the spiritual well being of people and fourth is findings of research.

Key word: Religion, Western Himalaya, Spirituality, Covid-19, Temple and Spiritual Health

A temple (Webster Dictionary defined Temple as edifice or place of worship, it is house of God) is a holy place that promulgate the divine faith and beliefs among the people. Etymologically, the word 'temple' is taken from the Latin word, 'templum' which, interpret as a square or a rectangular place marked out by the augur for fulfillment of their rituals and installed the idol of god (Sairam, 1982, page-18). In its ancient and lay man sense, however, this word can be understand as a place marked off as sacred to God, in which the house for God may build (Sairam, 1982, page-18). Functional of spiritual cognition with commitment to social boundaries of human mind the totality of traditions, beliefs and reverence related to functional expression is called deity or temple culture (Singh, 2001, page-51). The temple, originally, conceived as an embodiment of faith to serve the religious and spiritual needs of the community, came to be associated with various social, cultural and economic activities as well. The word 'Temple' denotes as the house of God or holy place or worship. Indian civilization is among the world's oldest civilizations (Mishra,

2011page- 1). Changes and scouring occur in the method of such functional expression but the basic beliefs remain in same. There is also obstruction or attenuation in the discharge of traditions sometimes even a dormant state is attain the era of Babar and Aurangzeb are the best example to substantiate it even in the communist period of Russia is also an example to this movement the freedom of speech millions of people did the candle march and reached churches where are the prime factors of worshipping their concerned god in the particular mythological fields are the minute factors of spiritual culture in this way untidily they constitute the deity culture.

Himachal Pradesh is called '*Deva bhoomi*' or Land of God (Thakur, 1997), the abode of god. A striking feature of the Himalayan topography is the number of shrines, big and small, scattered all over the place (Mishra, 2011, Page 3). Valley of Gods used as the metaphor for the western Himalaya (Sharma, 2007). Western Himalayas have number of big and small religious shrines, which have been developed and evolved from centuries. People from far flung areas of plains have great faith in the majesty of these shrines. The Language and Cultural Academy of Himachal Pradesh catalogued, approximately, 4000 shrines (Mishra, 2011 page-2). Each village have its own temple and total number of these shrines goes up to twenty thousand (Sharma, 2007). Many of these places are quite well known and attract thousands of devotees throughout the year. This is because the Western Himalayan population have presented unique blend of religion and modernity (Kumar, 2020, Page- 254) and religion has been the guiding force to the people of western Himalaya. Himachal lives on terraced fields, orchards, forests and sloppy hills with eternal streams and rivers flowing down the valleys. Himachal lives in the myths and fables, rituals and customs, folk songs and dances, arts and crafts with the legendary village gods

witnessing and participating in every activity of the people (Mishra, 2011). The rock temples of Mashroor, the ancient inscription of *Khaniyara*, the stupas at *Chetru*, the *Gompas* of Lahaul Spiti and Kinnaur, the shrines of *Lakshana Devi*, *Chamunda*, *Bhimakali*, *Bhadrakali*, *Jawalamukhi*, *Vajreshwari*, *Chintapurani*, *Baijnatha*, *Kaleshwar* etc. The wandering monks, the traders and the pilgrims, the search for livelihood and for knowledge kept this region closely linked with the rest of the country. Majority of these shrines, as well as the people, may be broadly categorized as 'Hindu' (Sharma, 2007), though Buddhism was entrenched in some pockets of Chamba, Nurpur, Sirmaur and Kangra-more (Mishra, 2011).

This is because to fulfill the soul with popular among the weavers and buffalo herders. However, more than 95.5 percent professed Hinduism. The Kangra cluster has a large number of temples such as *Ashapuri* temple, *AmbikaDevi*, *Vajreshwari* temple, *ChamundaDevi* temple, *Kaleshvara* temple, *Thakurdvara* temple, *Baijnatha* temple *Indravara* temple, *Jawalamukhi* Temple etc (Mishra, 2011 page -3, Nagar, 2001, page-118). The pilgrimage at the regional level, while trying to establish linkage with the sub continental phenomenon, integrates the villages and localities and provides a collective religious identity to these temples (Sharma, 1995). The entire region is called *Jalandharapeetha*. The *Jalandharpeetha* is the foremost among the 51 Shakti peethas (Sharma, 1995) and is shaped like a bow, spread, as it is over 12 *yojans* (64 miles) (Shastri, 1983, page- 16). The *peetha* is dotted all over with luminous goddesses. Those who undertake pilgrimage to the tirtha (pilgrimage) of various gods or goddesses in the *peetha* are liberated from the reoccurrences of rebirth and death and attain salvation. The Main goddesses of the *Jalandharpeetha* are *Brajesvari*, *Jayanti*, the most benevolent is *Jawalamukhi* and the widely worshipped goddess is *Ambika*. *Jalandharpeethadipika* have

mentioned one forty one pilgrim places to be covered in sixty eight days on foot journey (Shastri, 1983, page -16). The pilgrimage is considered auspicious if the pilgrim visits the *ChamundaDevi* temple situated on the east of the northern gate i.e *Nandikeshwar*. Next to be visited is *Bhrithasi*, a temple of Shiva. Then to be visited are *Tumbiksha*, *Paliksha*, *Ashapuri*, *Sidhehwam*. *Baidyanatha* another temple dedicated to Shiva i.e., *Baidyanatha* which is considered to be as significant as the *Kashi* of Benaras. Take its *parikrama* and then start a journey for *Ashapuri* and on the way, pay a visit to *Mahakal*, and *Latuksha* (Iyengar, 2004, page-206). Geographic locations of these temples have great importance because environmental peace provides a calm and pleasant atmosphere to devotees of metropolitan cities.

Covid -19 pandemic shakes the world in twenty first century and people are disturbed with mental and physical health issues. Throughout the globe people are facing the Covid -19 with unprecedented consequences both to physical and mental health. The world has been stopped for few months and locked themselves in the homes, which have great impact on their mental and physical health (Lima CKT, 2019), because during the twenty first century consider as the age of globalization, it is most difficult to stay in a room for months. As Covid-19 safeguard, social distancing is first and major step and country like India, whose society is known for the festivities throughout the year. It has been observed that the number of domestic violence cases, suicide and stress patients rises surprisingly. Western Himalaya is one among the effected places of Covid-19, but it has strong spiritual connections with spirituality prevalent widely in the region. Total number of shrines and pilgrimage centres has been indicated the importance of these places in western Himalayas.

Covid -19 have been affected economic position of the world, economic statistics by different economic forums

indicate that how pandemic slow down the world economic growth. Indian economy has been devastated by this locked position and demand in markets has been reduced to half. All lockdown position has been raised the stress and mental problems. It becomes necessary to curtail such environment. Religion has great importance to cure the mental stress and maintain the spiritual health. Temple and religious activity provide environment to come out of stress.

Himalayan geography and environment have great spiritual vibrations. More than 20000 religious places established throughout the Himalayan ranges. Each village has its own place of worship. The socio-cultural life of hills based on religion and religious activities (Handa, 2004). People come from far flung areas to satisfy their spiritual requirements. Hinduism is the religion which gives people peace. Hinduism is not a religion but a way of life that promotes the belief that god resides in each human and every atom of universe. It can be observed through number of devotees annually pay homage in the Himalayan temples. The news papers daily reports various stress based analysis and suicidal cases from different regions. This is also indicated that how stress had impacted our society. Temples and rituals help people to have a routine and discipline to follow for well mental health. God become an anchor to the rocking boat and strengthen believe that god will cure their worries. This will also help people to come out of dilemma and do their bit of *Karma* and move on. By performing the rituals man have the faith that he is not alone and god help him in his problems. The idol in the temple becomes the medium of dialogue for man with god. When people come to temple and observed the strict discipline by sitting on temple floor, meditating, reading scripture and join rituals have impacted his mind and keep him calm and reduce his stress.

REFERENCES

1. Ahluwalia, M.S., History of Himachal Pradesh, New Delhi: Intellectual Publishing House, 1983.
2. Ahluwalia, M.S., Social, Cultural and Economic History of Himachal Pradesh, New Delhi: Indus Publishing Company, 1998.
3. Atkinson, Edwin T., (1882) 1973. The Himalayan Gazetteer, Vol. II, Part I, Cosmo Publications: Delhi.
4. Atkinson, Edwin T., Religion in the Himalayas, Delhi: Cosmo Publication, 1974 (Reprint).
5. Behl, Yogesh, Religious Tourism in Himachal Pradesh- A Study of Shakti Peeth Circuit of Himachal Pradesh, Ph.D Thesis (Unpublished) Himachal Pradesh University, Shimla, 2012.
6. Beotra, B.R. Gazetteer of Suket State, New Delhi: Indus Publishing Company, 1927(reprint).
7. Berreman, Gerald D. 1960, Cultural Variability and Drift in the Himalayan Hills, American Anthropologist 62(5): pp. 774-794.
8. Berreman, Gerald D. 1963. Hindus of Himalayas: Ethnography and Change, New Delhi: Oxford University Press.
9. Berreman, Gerald D. 1964. Brahmins and Shamans in Pahari religion, The Journal of Asian Studies 23, pp. 53-69.
10. Berti, Daniela, 2009a. Divine Jurisdictions and Forms of Government in Himachal Pradesh, In Territory, Soil And Society in the South Asia, (ed.) Daniela Berti and Gilles Tarabout, Delhi: Manohar, pp. 311-339.
11. Berti, Daniela, 2009b. Kings, Gods and Political Leaders in Kullu (Himachal Pradesh), In Bards and Medium in the Khas Kingdom, (ed.) Marie Lecomte-Tilouine, Almora/Delhi: Himalayan Book Depot, pp. 107-136.
12. Bindi, Serena, 2012, When There Were Only Gods, Then There Was No Disease, No Need For Doctors: weakening Bodies and Forsaken Deities in the Indian

- Himalayas, Anthropology and Medicine¹⁹ (1), pp. 85-94.
13. Business standard, 6th October, 2017, https://www.business-standard.com/article/pti-stories/kullu-dussehra-concludes-with-symbolic-lanka-dahan-117100601188_1.html, searched on dated, 14/04/2020. Searched on dated, 14/04/2020.
14. Census of India: 1961, Vol. - XX, Himachal Pradesh, Part - VII-B, Fairs and Festivals, Shimla, 1967.
15. Charak, Sukhdev Singh, History and Culture of Himalayan State Volume - III, Himachal Pradesh Part Three, New Delhi: Light and Life Publishers, 1979.
16. Chatterjee, Partha, Secularism and Tolerance, in Secularism and Its Critics ed. Rajeev Bhavargava, Delhi: Oxford University Press, 1998, 297-320.
17. Chauhan, Suman, Social Organization and Land Control: A Study of the Role of Temples in Kullu and Shimla, Ph. D Thesis, Shimla: Himachal Pradesh University, 1997.
18. Cohen, Bernard, 1962, Political System in eighteenth Century in India: The Benares Region, Anthropologist Among the Historian and Others Essay, New Delhi: Oxford University Press, pp. 483-499
19. Elmore, Mark, Becoming Religious in a Secular Age, California: University of California Press, 2016.
20. Emerson, W.H., Punjab Gazetteer, Mandi State, Vol. XXI-A, Lahore: Punjab Government, 1920
21. Gazetteer of Kangra District Part- I (Kangra 1883-1884) New Delhi: Indus Publishing Company, 1994 (reprint first ed. 1883-1884).
22. Griesson, George Abraham, Linguistic Survey of India, Indo-Aryan Family, Vol. - 9, Part -4, Calcutta, 1916.
23. Gupta, Shanta, Historical and Cultural Study of Fairs and Festivals of Himachal Pradesh, Ph. D Thesis, Shimla: Himachal Pradesh University, 1993.
24. Handa, O. C., Naga Cults and Traditions in the Western Himalayas, Delhi: Indus Publishing Company, 2004.

214 Corona Pandemic (Covid-19) and Interdisciplinary Issues

25. Handa, O. C., *Pashchami Himalaya Ke Lok Kalian* (Hindi), New Delhi: Indus Publishing Company, 1988.
26. Handa, O. C., *Temple Architecture of Western Himalayas-Wooden Temples*, New Delhi: Indus Publishing Company, 1998.
27. Haranata, S. R., *Himachal Ke Mandir Aur Unse Juri Lok Kathan* (Hindi), Shimla: Minerva Book House, 1991.
28. Hutchison, J. and J. Ph. Vogel, *History of Punjab Hill States Vols. I-II*. Shimla: Department of Language and Culture, Himachal Pradesh, 2000 (reprint, first ed.1901).
29. Ibbetson, D., *Punjab Caste*, Lahore: Government of India Press, 1916.
30. Ibbetson, D., *Punjab Caste*, Lahore: Government of India Press, 1916.
31. *Imperial Gazetteer of India (Punjab) Provincial Series, II Vols. Calcutta: 1908*
32. Iyengar, Tit. *Hindu Mythology, Vol I and Vol II combined in one Vol*, New Delhi: Intellectual Book Corner, 2004, p. 206.
33. Justa, H. R. and Som P. Ranchan, *Folk Tales of Himachal Pradesh*, Bombay: Bhartiya Vidya Bhawan, 1981.
34. Kaushal, R.K, *Himachal Pradesh A Socio, Economic, Geographical and Historical Survey*, Reliance Publishing house, Delhi, 1988, p. 3.
35. Kumar, Sunny, 'Realm of Gods and Modern Democracy in Western Himalayas', in *New Radical Approach in Interdisciplinary Research*, (ed.) Vijay Singh & Aastha Agnihotri, New Delhi: Akshita Publishers and Distributors, 2020. Pp. 253-268.
36. Kumar, Sunny, 2020, *The Cult of Baba Balak Nath In Himachal Pradesh: A Historical Perspective*, in *Our Heritage Vol. -68 (1)*, pp. 13608-13614.
37. Language and Culture Department, *Himachal Pradesh Ke Mandir*. Survey number L Shimla. n.d.
38. Lima, CKT, Carvalho PMM, Lima I et al. The Emotional Impact of Coronavirus2019-nCoV (new coronavirus disease) *Psychiatry Res* 2020;287:112915.

39. Majumdar, Dharendra Nath, 1962, *Himalayan Polyandry: Structure, functioning and cultural Change. A Field Study of Jaunsar- Bawar*. Bombay: The times of India Press.
40. Mishra, Pallavi, *Temple Economy in Himachal Pradesh A Case Study of Jawalamukhi Kangra 1905-2000*, Ph.D Thesis (Unpublished) Panjab University, Chandigarh, 2011.
41. Nagar, S.L, *The Temples of Himachal Pradesh*, Aaditya Prakashan, Delhi, 2001, p. 115.
42. O'Malley, L.S.S., *Popular Hinduism the Religion of the Masses*, London: Cambridge University Press, 1935.
43. Rose, H. A., *A Glossary of the Tribes and Castes of India and Northwest Frontier*, 3 Vols. Patiala: Languages Department Punjab, 1970 (reprint, first ed. 1901).
44. Sairam. T.V. *Indian Temple Forms and Foundations*. Delhi: Agamkala Prakashan, 1982, p. 18.
45. Sax, William, 2006 b, *Rituals of the Warrior Khund*, *European Bulletin of Himalayan Research* 29-30: pp. 120-130
46. Sax, William, 2009, *Gods of Justice: Ritual Healing and Social Justice in the central Himalayas*. New York: Oxford University Press.
47. Sharabi, Asaf and Shalev, Hagar (2016) "From Ruler to Healer: Changes in Religious Experience in the western Himalayas" *HIMALAYA, the Journal of the Association for Nepal and Himalayan Studies*: Vol.36: No. 2, Article 7. Available at: [//digitalcommons.macalester.edu/Himalaya/vol36/iss2/7](http://digitalcommons.macalester.edu/Himalaya/vol36/iss2/7)
48. Sharma, B. R., *Gods of Himachal Pradesh*, Institute of Integrated Himalayan Studies Shimla, New Delhi: Indus Publishing Company, 2006.
49. Sharma, Mahesh, *Concentric rings of pilgrimage Local, regional and Subcontinental*, 'Studies in Humanities and Social Sciences' Vol-II, 1995, page-97-109.
50. Shastri, P.R (tr & ed.), *Jalandhar Peetha Deepika*, 1864, Kangra, rpt. 1983, p. 16.

216 Corona Pandemic (Covid-19) and Interdisciplinary Issues

51. Singh, Mian Goverdhan, (2010) Himachal Pradesh History, Culture and Economy, Shimla: Minerva Publisher & Distributors (reprint first ed. 1985)
52. Singh, Mian Goverdhan, Festivals, Fairs and Customs of Himachal Pradesh, New Delhi: Indus Publishing House, 1992.
53. Singh, Rajbahdur, Mandir Sanskriti, New Delhi: Raj Publishing House, 2001.
54. Thakur, M. R., Myths Rituals and Beliefs in Himachal Pradesh, New Delhi: Indus Publishing Company, 1997.

New Radical Approach in Interdisciplinary Research



Edited by:
Dr. Vijay Singh
Aastha Agnihotri

New Radical Approach in Interdisciplinary Research

Contributors

Edited by:

Dr. Vijay Singh

&

Aastha Agnihotri



**Akshita Publishers and Distributors
Delhi-110053 (India)**

Published by :

Akshita Publishers and Distributors

H.No. J-180/5-A, 4th Pusta,

Pahari Hotel Wali Gali

Opposite Ajay Medical Store,

Kartar Nagar, Delhi-110053

E-mail: abooks2019@gmail.com

Mobile: 9968053557, 9811149816

New Radical Approach in Interdisciplinary Research

© Editor

First Edition 2020

ISBN: 978-81-946186-0-7

All rights reserved no part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the editor.

PRINTED IN INDIA

Published by Akshita Publishers and Distributors, Delhi-110053. Laser Type Setting at Shahabuddin Computers, Printed at Milan Enterprises, Delhi-110002.

Contents

<i>Contributors</i>	<i>v</i>
<i>Preface</i>	<i>ix</i>
1. State Crime of Cultural Genocide in Tibet <i>–Aastha Agnihotri</i>	1
2. Socio-Economic Changes Among Bhot Tribe: A Study of Pangi Region of Himachal Pradesh <i>–Ajit Kumar</i>	13
3. Corporate Social Responsibility in Business <i>–Akaa Samuel Terzungwe</i>	24
4. Crimes Against Women in India <i>–Anjali Banal</i>	38
5. A Review on the Perceived Benefits of Using Facebook of Teenagers <i>–Chanyanan Somthawinpongsai, Thitipan somthawin, Thanyanant Chansongpol, Keratiwan Kalayanamitra, Muzammil Naseer, Aphinan Busabok, Nattapat klayjindawarit, Walaiporn Buabok, Jaruwat Kansri & Tassanai Wankong</i>	50
6. Ambedkar's Perspective on Education and its Relevance in Contemporary Indian Education <i>–Chunni Lal & Rajesh Kumar</i>	57
7. Corona Pandemic Crises and Rural Development in India: A Theoretical Study <i>–Dushma Thakur</i>	65
8. Impact of Microfinance on Poverty and Employment Generation <i>–Gurleen Kaur Anand & Dr. Ankita Srivastava</i>	81

9.	Problem of Women Empowerment in Indian Society: A Study -Itika	89
10.	Right to Privacy: Constitutional Rights and Private Laws -Jeetu Kanwar	98
11.	Rhizomatic Matrices: Proposition of Signals for Transdisciplinary Research in Tourism -Maria Luiza Cardinale Baptista	107
12.	Comparative Studies of Spatial Transformations as the Reflections of Territorial Identity-Case Study of Zaporizhzhia City, Ukraine -Mariia Rastvorova	116
13.	Examining the Role of Afghan Parliament in Promoting Good Governance: A Study -Mohammad Kazim Barati	131
14.	Demand Analysis Based on Heterogeneity of Goods in Market -Neetu Kanwar	148
15.	Parenting: Its Styles and Outcomes -Pooja Thakur	161
16.	Ensuring Rights: A Comparative Study of Female Rights in Manu Smṛti, Indian Constitution and Hindu Law -Prem Lal	173
17.	Crypto Currency: Awareness Among New Investors -Rahul Chauhan	180
18.	Growth of Scheduled Caste Population in Himachal Pradesh, 2001-2011: A Spatial Analysis -Rajesh Kumar, Dr. M. L. Mankotia & Chunni Lal	190
19.	Role of Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna in Financial Inclusion-A scheme of Financial Inclusion -Rajesh Kumar	203
20.	Implication of Savi Model (Somatic, Auditory, Visual & Intellectual) to Improve the Learner's Motivation -Dr. Rohana & Dr. Vijay Singh	213
21.	Empirical Analysis of Entrepreneurial Intentions (EI) of University Students: An Evidence from the Management Students of University of Kashmir -Dr. Sameer Jan Bhat & Zubair Ahmad Khan	227
22.	Role of Education in the Empowerment of Rural Women -Dr. Sapna Devi	242

23.	The Realm of Gods and Modern Democracy in the Western Himalayas —Sunny Kumar	253
24.	Service Quality of Railway Services in Kashmir Division: An Empirical Perspective —Dr. Zameer Ahmad & Zubair Ahmad Khan	269
25.	कोरोना का श्रमिक वर्ग पर प्रभाव —अजय बन्याल	278
26.	वर्तमान में जैविक खाद की आवश्यकता: महत्व एवं कृषि विकास का अध्ययन —अर्चना सतनामी	287
27.	गंगा नदी की वर्तमान स्थिति एवं इससे प्रभावित लोक—जीवन —सरोज कुमारी	298
		315

Index

Chapter-23

The Realm of Gods and Modern Democracy in the Western Himalayas

-Sunny Kumar

Abstract

The nineteenth and twentieth century ethno-historical accounts of the Western Himalayas focused on locating spiritual identity of the hills' population, whereas within the western Himalaya an unequal mixture of faith and polity is found. Here democratic state developed parallel to spiritual democracies, which is constant from the centuries. This paper focuses on the link between state and faith. As the tribals rise in the state affairs, so their faiths and gods also rise into the regional or all India pantheon. The deities until worshiped by a little community have emerged as emblem of bigger identities. There has been a copious exchange between rock bottom and remotest strata of society with modern polity, and its high reaches. It'll conjointly discuss the paragon of secularism; how the state intervenes and protects this relationship. Indian law permits a private to administer the religious establishments, however, on the other hand state has the duty to produce peaceful atmosphere to the varied sections to grow equally in Indian

society. The study includes four sections; one is on the historical background of spiritual relationship with modernism. Second, how is state and religious traditions protected? The third part of the study deals with questions arising on this parallel running of democratic state and faith. The fourth part of the study deals with the findings of research.

Key words: Village god, religion, Western Himalaya, democratic relationship, secularism.

The Realm of Gods and Modern Democracy in the Western Himalayas

I

Himachal, known as land of Gods (*Dev Bhumi*) from ancient times (Thakur, 1997) is situated in the heart of Western Himalaya (Ahluwalia, 1988) and also known as valley of Gods (Sharma, 2007) covered a province of India i.e. Himachal Pradesh (Gupta, 1993), which came into existence in nineteen forty eight as C category state of newly independent India. Till from his existence takes more than two decades to get full statehood status (Elmore, 2016). It is 18th state of Indian union (Gupta, 1993). Being a new independent democratic country India has been established as a secular state. The constitution of India provides the right to freedom of religion, as the fundamental right to citizens. Western Himalayas have presented a unique blend of religion and modernity from centuries, with the time monarchical form of government replaced with modern democratic form of government. Geographically region is hilly terrain ranges from three hundred meters to seven thousand meters from sea level (Gupta, 1993). In nineteen forty eight first democratic government established in the province, before independence region was ruled by autocratic rulers, who were under the paramountcy of British Empire. Newly formed state is facing numerous challenges to balance the old traditions and achieve new heights of modernity in the socio-economic fields. It has been one of the difficult tasks to keep intact the religious acculturation and maintain harmony in the state.

Religion plays a vital role in human's life. In India religion has exert more influence on socio-political life than any other human settlement on the earth. Religion has different forms for every person and it effects directly and indirectly of his devotional as well as secular practices. There have been two types of divisions in the Indian religious practices, enigmatic (the faith of ascetics, which is mysterious in nature) and faith of masses (Religion of common people). Scholar paid too much attention to study enigmatic school and faiths of masses is neglected for decades. Theologians were considered that Indian religious practices circled around the Vedic traditions (Atkinson, 1974 pp. 699).

India has been portrayed as a soil of distinctions, and nothing are the differentiate more stamped in Hinduism, in which distinction between the convictions and practices of refined classes and those of the masses, generally unlettered villagers, are so extraordinary that they nearly appear to be contrasts of kind instead of degree. The religion of the afterward has few of the higher otherworldly conceptions of Hinduism and speaks to within the primary its lower side. A blend of standard Hinduism and of that primitive shape of religion which is known as animism, it combines Brahmanical customs and observances with the fetishism of lower factions. Offerings are made both to the extraordinary divine beings of Brahmanical pantheon, whose title is army, for distinctive towns have special neighborhood divinities of their claim. As could be anticipated in nation with so expansive a zone and so tremendous populace, a nation, besides, in which distinctive segments of the individuals are at broadly diverse stages of mental improvement, here are incredible varieties of conviction and practice, but there are moreover certain common characteristics (Malley, 1935, pp. vii-viii).

To study the religious practices and traditions of the people, it is necessary to study the socio-geographical composition and history of the region under study. The number of writings on Western Himalayas has been talked about a series of migrations over the centuries. Since the very beginning of civilization in the Indian subcontinent up to the middle of present century, people of diverse cultural strains, religious affiliations and racial characteristics have been drawn to this region to seek peaceful and secure living. That continuous and profound process has inspired a socio-cultural metamorphosis to form a distinct Pahari (local word use for the residents of hills) culture of Himachal Pradesh (Singh, 1992). The migrants came principally from the Indian plains and also from some other areas (Chauhan, 1997, Elmore, 2016, Thakur, 1997, Gupta, 1993). Hindus constitutes the majority of population in the Himachal Pradesh, but migrants have formed four major cultures, each distinguished by its characteristic features based on the socio-economic aspects of their community. The people of proto-historic Indian culture came to the Himachal area from the south settling in the southern and central hills. The distinctive features of this culture were *Kolarian* language, indigenous, religious-system and a mixed economy (Gupta, 1993). Today's *Koli*, *Hali*, *Chamars*, *Rehars*, *Chanals*, *Lohars*, *Beri*, *Dagis*, *Dhakis* (Ibbetson, 1916) or *Turis* (H.A., 1970 (reprint, first ed. 1901) etc. are the descendents of this race. They were forming the lower strata of the society and mostly involved in the profession of crafts (Gupta, 1993).

The second, migration have been noticed in the region of the people of Aryan origin, identified as the Khasha community of hills (Punjab Government, District Gazetteer, Mandi, 1920), who penetrated from north-west region of Indian subcontinent and settled in the mid- mountain range of Himalayas from Kashmir to Nepal (Griesson, 1916, pp. 2). The distinguished feature of their

culture was the language closely allied to the Sanskrit, known as the Paharidialect of hills. Today they have been constituted the majority of the population in the region. Third settlement in the region is of Indo-Mangloids, and has been identified as the Kirata, or Bhota. They are mention as the resident of north-east in Sanskrit literature. The people of this culture settled in the northern most fringes of the region and with the time intermingled with indigenous population of hills and principle features of their culture is Tibeto-Burman language, Lomastic, Buddhism and mixed economy (Griesson, 1967, pp 8-9, Gupta, 1993).

Fourth transmigration of people has been observed in the medieval period. They are Indo Aryan or upper class Hindus of the plains and come to the region for number of reasons like the location of holy shrines in and around the Western Himalayas. When Rajput princes did not get due shares of empire in the parent state. They moved towards hills with their followers to establish new state. The high caste Hindus migrated to the Shivalik hills during the Muslim invasion in the twelfth century to fifteenth century to save themselves and religion. The Distinct feature of their culture was Indo-Aryan languages, caste system and settled agriculture, in the religious system they added Vaishnavism (Gupta. 1993) and cult of Gugga (serpent god) believes to be the descendent of Rajput clan. Fifth, migration has been noticed during the eighteenth century, in awake of Ahmad Shah Abdali's frequent invasions, people who were reside in bordering area of Shivalik hills, penetrated and settled into the deeper forests to save themselves from devastating invasions of Ahmad Shah Abdali. They had brought new mixed language of Punjabi, Persian and Hindi in the region. They were mostly followers of Sikhism, but had faith in Hindu traditions and mostly belong to the Jat, Gujjars, trader and merchant communities (Singh, 2010, pp. 42-44).

Although, Himachal Pradesh have a large number of Hindu population, but Buddhism, Jainism, Sikhism, Christianity and Islam are also among the main religious system. In spite of main religious system people have the tradition of village deity. The people of hills are simple and very honest. They are also known for the physical strength and women for natural beauty (Ahluwalia, 1983). Hence the kind of religion and nature of society predominant in Himachal Pradesh may be considered to speak to their primitive and antiquated frame. In show disdain toward of impacts from the fields over the centuries, the religio-social structure within the early state still uncover the fossils and remaining of an old social system (Charak, 1979 pp. 8-9) O.C Handa in the introduction of Mian Goverdhan Singh's work on fairs and festivals of Himachal Pradesh stresses on the conventional social orders where the tremendous limbs of the hybrid innovation have not yet influenced the life fashion of individuals, their fairs and celebrations are the straight to the point and brazen record of their socio-cultural legacy and collective mental reaction

to the challenges of the world around them. Himachal Pradesh located within the north-west corner of the subcontinent in Himalayas; isolation has been the dwelling place of such individuals. Religion and religious beliefs are closely interlinked with society and culture of Himachal Pradesh (Mark Elmore, 2016).

II

'Welcome to the Dev Bhumi' these words found at various entry point to the himachal Pradesh. These words can be translated as divine territory of gods (Berti, 2009a, pp. 1). The very first question struck in the mind of visitors. Is it possible in twenty first century to be in the divine territory of god? Yes, it is possible only in Himachal Pradesh, because territorial division according to divine jurisdictions found here. The institution of village gods is the major overseer of the exercises in a village society. The village gods control viably the social and devout system in a rural settlement. Village god is emblem of village culture (Sharma, 2007 pp. 13). The village gods' lives within the delimited domains, especially within the Himalayas have appeared the political. Authoritative and financial measurements included in such local cults. In common hypothesis on Himachal's society, Mark Elmore, suggests that political and financial power, as well as domain is isolated from the ideological circle of religion, but they are enveloped by it and subordinate to it.

While examining the social and cultural life of hills, religion cannot be overlooked. The people of hills are exceptionally devout minded and clearly it has vital part in their day to day life. They have firm conviction in their local gods close to the main stream Hindu pantheon (Handa, 2004). Himachal is the arrive of Gods, that it has an uncannily tranquil past and present, that its theistic convention are tied to the natural scene, that its religion hones and myths are profoundly diverse from those of plain's people that these hones and myths are unaltered from original time, which is interesting character of hill people permits, them to at the same time embrace the past and future, in this manner making them prevalent not as it were to the occupants of other locale in India but moreover to those in present day social orders in general (Elmore, 2016).

Myths and custom behavior work as the conceptual device within the life of a family, a tribe or a community, large number of ceremonies are performed with a view to attain a few objective or conclusion. The conclusion may be physical like great wellbeing magnificence life span etc. social like popularity, riches, strength and so on, and naturally like precipitation protection during floods, dry seasons, ample crops etc. these objectives are accomplished by combination of commendable activity and custom performances. Hence the myths and customs of antiquated individuals that have come down to us are of logical esteem since their investigation tosses light on the ubiquity and primitive contemplations. They talk of mental discernment of their environment wonders (Thakur, 1997). Mark Elmore, agreed on the point of recognition of

their belief and practices as religious activity and that is the religion of people in Western Himalayas. He has raised several questions on the relationship of religion and state. Partha Chatterjee and Mark Elmore agreed on the same point, why all the time relations between religion and state are termed as secular and non-secular. In Himachal Pradesh, religion and state are interpenetrating systems (Mark Elmore, 2016, pp. 139).

On the one hand Himachal Pradesh kept up old inborn conventions and on the other it received the profoundly created culture impact of the Indian Plains and the social influx of the north east. The acquired and imported components made an amalgam which gave Himachal its particular character (Gupta, 1993). Numerous cults are prevalent in Himachal Pradesh in fact each village has its own deity called as Gram Devta (Village God) in Local language (Handa, 2004, Sharma, 2007). It is dynamic in Shimla, Solan, Sirmaur, Mandi, Kinnaur, Lahaul & Spiti and parts of Chamba district, but in lower Shivalik ranges like Bilaspur, Una, Kangra, Hamirpur and Mandi and indeed certain parts of Solan area, this has taken the shape of setting up sanctuaries within the villages and revering the symbols or pictures of divine beings there (Sharma, 2007, pp. 13). These deities worshipped for the prosperity and safety of progeny, animal and other benefits of mankind (Handa, 2004). The major village gods within the Western Himalayas are Mahasu in Shimla and zones bordering Uttarakhand, eighteen village gods in Kinnaur are said to be the off springs of Banasur and Hadimba. The Narayan are minor or junior divine beings in Kinnaur and their palanquins are found even within the villages. Within the Kullu region Raghunathji is the chief god; in whose court the neighborhood gods pay tribute to him amid Dussehra celebration each year and number is approximately three sixty. Indeed Nags are the divine beings of production and success. Pauranic rishis, such as Parashar, Vyas, Bhrgu, Parshuram etc. are village divine beings (Sharma, 2007 pp. 19-22).

In Himachal Pradesh, Hindus and Muslims together, in practices worship rituals, however they have (a group of hero deities) Pirs and fakirs (used for saints in Islamic tradition) are venerated by both the communities with equal faith and even after partition there are many mazars of Pirbaba Dumey Shah at Nagrota and Nadaun care taker of the tomb is a Brahmin and devotees are from both community (Thakur, 1981). Its century's ancient culture properly warrants a profound intrigued and regards (Gupta, 1993). The foundation of village gods overwhelm the social scene within the western Himalayas locale and this framework has firm social, devout and social noteworthiness, which has made a difference individuals to stay joined together, devout and lively the ancient frameworks of life (Sharma, 2007 pp. 22).

The studies with respect to local Devta within the Western Himalayas ordinarily clarify the theistic and political context of religion within the region by centering within the recognizable pieces of proof between the divine and

the political measurement of the Devta (Sharabi, 2016). (Berti, 2009a, 2009b) in her works has been focused on the significance of domain within the setting of the Devta's territorial administering system. Some of these Devta have influence over one village or more, and their followers linked to each other at the kinship and the regional level. Other Devta have more influence and magnitude, and regarded by their followers as kings (Sax, 2003). In hill traditions Devta have direct relations with human (Thakur, 1997) rulers and human followers. The people have man to man ties like worldly relationship. They hold spiritual control over territory and people and 'have both civil and criminal authority' (Sax, 2003, pp.120). Actually he even guides marriages and deaths and indeed suggests the supporters to permit or refuse a new guest to the village (Sharma, 2007 pp. 13) just like the head of family, who control the all day to day or worldly relations of the family. Indeed when a village god is connected to a specific family within the locale, he differs from the category of 'lineage deity' (known as *Piyukta Siddha* or maternal divinity (Kumar, 2020) by holding sway over all those who live in his domain. A alter of home does not essentially disjoin the links of a god with the initial ha ?r. For instance, village girls used to marry outside their natal village and go to live with in-laws' house since of virilocal framework of home. Amid the period of hardship a married girls tends to ended up closer to her natal village god again. This deity, counseled through medium, may say that god need to be setup within the in-laws' house and be revered there. Incase this request is acknowledged, the god will settle within the in-laws' house not as a village divinity, but as a family or house god. This does not anticipate ladies, once married, from being beneath the specialist of her husband's heredity god or of her husband's town divinity (Berti, 2009a, pp.25). It has been observed that deity is the protector of all times and all over the region, whenever his devotees required or in distress rather than territorial limits.

(Sax, 2006 b) pointed out the significance of celebrations and ceremonies in deciding the region of the 'little kingdom' at both village level and territorial level of religious control. The Devta sanction their (political) office through customs representations in a strategy of mystically run the show that's locally known as 'Devta ka raj' or the 'government by deity' (Southerland, 2003). After their movement into the seizure of power in a domain, the people of Har (divine territory of the village god) have been governed through signs of their theistic sovereignty, like images, swords, maces, thrones, palanquins i.e. travel to the own realm or neighboring gods realm, termed as *Indralok Yatra* (Sharma, 2007, pp. 14-15, Southerland, 2004, Thakur, 1997, Mark Elmore). The Devta performs movements within their territories on their palanquins (ghori) and mark their sovereignty as kings (Sharma, 2007, Thakur 1997, Berti, 2009a, 2009b, Sax 2006b, Southerland, 2003, 2006, Elmore, 2016). It is not imaginary role of the kings, but rather 'a political construction of gods as rulers' (Southerland, 2006, pp.83).

It becomes necessary to know the component of a state, population, territory, sovereignty and authority. In h r (territory of god) ha ?rye (inhabitants of divine territory of god) sovereignty of deity over the inhabitant of his territory and defined as its political subjects. A temple committee, constituted by the deity, manages the affairs of the shrine of a village god. Mohatmin or the managers is responsible for the property of the temple including land belonging to the god. Earlier, in many cases, the whole of the village land was considered to be the property of the village gods, but now, under existing land reform rules, the gods have been left with small pieces of land (Sharma, 2007 pp. 15, Thakur, 1997, pp. 81, Berti, 2009a, pp. 3). The Gur, Grokch, Mali, Devahan or Kinkar, is the oracle of the deity who conveys the wishes of the gods after receiving messages from him through trance. Thus he is the medium of conversation with the god. Pujari, Bhandari, kayath, Wazir as chief manager of a village temple in the Shimla region. The Kardar, in the Shimla region are elected out of the devotees of various villages to form a temple committee. They are religious representatives of the villagers and collect revenue and grains for the temple as per tradition. Kardars served as the bridge between the villagers and village temple (public representative) (Sharma, 2007 pp. 14-19, Berti, 2009a, pp.4). Employment has been to the inhabitant of the divine territory.

In ancient times trades and monetary affairs also conduct in the name of deity. Village deities have all four components in his credit, required for the state formation. Tradition of Village gods is centuries old, various aspects are also attached to this tradition, there are many type of village gods, Natural, Ancestors, Goddesses, and Sati Stones. The impact that village gods still exercised on the people of their divine kingdom through their medium is often presented by ethno-historian as one of the reasons that constrained past kings of the region to establish the political relations with them, by means of alliances, subjugation or recognizing the new cults. The rulers of Himalayan hills had given large number land grants to local deities.

III

Jagat Singh the ruler of Kullu state in seventeenth century introduces the worship of the Raghunath in his kingdom. The king declares this god to be the real king of the Kullu, and all court affairs run on the name of Raghunath. From this onwards all local deities had to bow in reverence and obedience in the front of Raghunath. The similar incident have been observed in the Mandi state, Madhorao considered as the lord of Mandi state and all local deities had to vow in reverence and obedience. These two major events celebrated as Dussehra and Shivratri inMandi,when all local deities come to meet the chief deity (Elmore, 2016). In addition to this act of politico-religious centralization, rulers also assigned land grants to different village deities as remuneration or

expenditure of travel also paid by the rulers. Now the gods became *mu?f?d?r devt?* (revenue free land). Following this, as a sign of political subordination, the village gods were obliged to pay a yearly tribute (*nazar?n?*) to Raghun?th and Madhor o. They moreover, for fear of being fined, had to visit the capital once a year amid the yearly celebration in arrange to pay respect to the regal god and to his human designated, the rulers of Kullu (Berti, 2009a, pp. 4) and Mandi (Elmore, 2016).

The king exercised authority over the management of worship within the villages by influencing, for instance, the selection of a medium, the nomination of the temple administrator, or perhaps by imposing the precise vogue during which a god's litter had to be engineered (Berti, 2009a, pp. 5). This was because of the actual fact that, since the design of a palanquin is related to a particular kingdom, it'd have meant that the god's supporters had established the alliances with neighboring divine empire (Vidal, 1998, pp. 64). Thus the fact was the power exercised by the king over the management of the cults had politico-territorial implications, for example, the protection of the boundaries of the dominion. As a rule villagers weren't allowed to vary the fashion of their god's litter unless thus licensed by the king (Emerson 1920, pp. 63-65). He might additionally exercise some 'pressure' on village gods in reference to the facility or power (*?akti*) they were presupposed to have over atmospherically conditions inside their territorial jurisdiction. In times of drought, for example, the king accustomed organize within the palace a 'universal consultation' (*jagt? p?ch*) of all the deities of the dominion (through their mediums) so as to raise them to provide rain. Local narratives add that, once the demand wasn't happy, the king would think about the mediums in command of the gods' failure and would threaten to own their heads bring to a halt if the rain has not come directly. Villagers might additionally decision upon the king's mediation to unravel cases of a lot of restricted 'territorial droughts'. The measures to be taken in such circumstances were ordinarily determined by the king or, in his absence, by one among his representative (Berti, 2009a, pp. 5). The territorial implications of native cults therefore seem to have been an important component in royal politics. On the one hand, the assignation of land (*mu?f?*) to village deities will be taken as a political and spiritual variety of centralization, for the prerogatives that native deities already enjoyed in their own territories currently had to be sanctioned by the palace. Consequently, the king might conjointly delegate to a neighborhood god his royal presence in distant regions (Emerson 1920, pp. 63-65). Colonial administrators did not disrupt the system prevalent in the region; in fact they continued with the system and allow local deities to enjoy the sovereignty over their divine kingdom. There no class noticed during the colonial period. British rule adopted the traditional divine measurements to collect land revenue in the hills (Lyll, 1869).

In present times deities had played vital role in the correspondence between the fiscal-administrative territories and ritual territories doesn't exclude the

changes within their several limits as a result of the social and political transformations that have been taken place in the region. Even nowadays the executive system and therefore the ritual system aren't stiffly mounted. In fact, village panchayats covers with ancient commercial units of the ph?t? (group of villages under the influence) still in use. We've got seen that transformations within the pantheon conjointly passed within the past, before and through the colonial period: some deities may lose their dominion whereas others may conquer additional territories. If, for the past, we have a tendency to aren't able to document intimately such transformations in their historical and social science context, anthropology knowledge show however such transformations is coupled to political interests or motivations at numerous levels at intervals their own territories, dev?-dev? categorical their can on all non-public or public problems, together with the selection of a candidate to regional election (Berti, 2009a, pp. 19-20).

IV

Yashwant Singh Parmar the creator of Himachal Pradesh has played an important role in shaping the present relationship with local deities and preserves the ancient culture of the hills. The department of language and culture, and department of tourism have been established under directions of new government. It took form within the months following the granting of full statehood in early 1971, the new departments like all government departments, emerged, out of perceived desires. In the long struggle to get statehood, it was felt that region does not have authentic details of the antiquated culture. These departments were responding to three acute needs, the need to define the state's relationship to the languages of the region, the need to catalog the region's cultural traditions and need to unite the states diverse regions (Elmore, 2016, pp.141). The State archives established to preserve the cultural heritage of the state. The department of Language and Culture, Achieve Department, and Tourism in the collaboration with different departments of state and district levels administrative departments organized and managed various cultural activities related to region.

To understand the relationship of state and religion, three events would be discussed, first is about the enumeration (termed as nazar?n?) hike by the chief ministers of himachal Pradesh (The Tribune 15/10/2019, 23/03/2020, The Statesman, Himachal Watcher, 15.02/2018, Times of India, 29th October, 2017). The percentage of hike varies yearly; it ranges from five to twenty percent. Few other facilities and privileges may give to the deities, like hike ration quota of deity (India.Com, 9th March, 2016, Himachal Watcher, 15.02/2018) and enumeration to the *Bajantries* (musicians accompanied god, Himachal Watcher, 15.02/2018). Chief Minister Shri Jairam Thakur has assured the left out deities registered with government in a phase wise manner. Moreover, at ritual level, transformations have obvious if one takes into consideration the cults of the

questionable 'new deities' (*naî devtâ*). At the origin of those new cults, there's sometimes the 'discovery' within the earth of a sculpture or of a tinny face, and therefore the resulting manifestation of the divinity possessing somebody – sometimes its future medium; it reveals its name and asks to be got wind of during a temple and adopted by the whole village, whose territory can return underneath its influence (Berti, 2009a, pp. 19-20).

Second, the divine parliament (Samachar First, 24th November, 2019) has been called to resolve the issues with administration and deities, who were angry over uncleanness of the Dhalpur (Place of *Dussehra*) ground. The *Dhumal Dev* of Kullu called gods to instruct the administration to maintain cleanliness in the ground because it is the divine land where gods worshiped and performed meditation. It is auspicious land. In response to divine parliament's (*jagti*) Maheshwar Singh (Chief *Chhadibdar* of Lord Raghunath, Ex. MLA, Ex. MP and Member of Kullu Royal Family) agreed to do whatever the gods instructed and he requested the gods that harsh punishment should be given the culprit. It would be lesson for the other that no one tries to do it again. Durvasa god through his medium warns the administration that he will shake up to Delhi, if his instruction does not fulfil.

Lastly HPCA (Himachal Pradesh Cricket Association) and Indru Nag (Amarujala, 29/02/2020, 11/03/2020). The only HPCA cricket stadium in Himachal Pradesh located in Dharamshala. Dharamshala is considered to be under the divine control of Indru Nag. The Nagas are known as the lords of water and rain. Dharamshala have maximum rainfall in Himachal Pradesh. HPCA had been scheduled a cricket match between India and South Africa on dated 12th March, 2020, Indru Nag has divine power to stop untimely rainfall. So the HPCA go to the Indru Nag temple (Amarujala-Himachal Pradesh, 29th February, 2020), as they did earlier several times before match, but forgot to fulfill last promise they had made to *Dev*. They worshiped the *Dev* and promised a free feast every year on 23rd March, but untimely continued rainfall from couple of days destroyed the charm (Amarujala-Himachal Pradesh, 11th March, 2020).

All above mentioned events have a major role to decide the relationship of state and religions. Mark Elmore (2016) observed thin layer between the state and religious culture of

Himachal Pradesh. The elected representatives are among the people of common origin, in some cases family member fight elections. They have to pass the electoral test (will of people). It is observed in Kinnaur and high hills that election in modern times had influence of local deity. Deity is the deciding figures in the local election. Moreover the success of a politician depends each upon his personal magnetism and on the approval he has receives from the native deity (Singh, 1989). Village gods are not spectators in Himachal Pradesh, directly or indirectly they contributed in the welfare of people. The significance

of village gods and their realm also explains the sustained political significance of village gods in the different systems of government that have historically succeeded one another in the region (Berti, 2009b, pp. 24). In the second event discussed above verify their importance as after several hints and instruction which had given to the administration about pollution of ground. Now gods have called divine parliament to give a strong message of distressfulness over administration's failure. In first event concluded that local deities have been participated in state fairs. Amid village celebrations, in which hârye of distinctive divinities take part, each villager distinguishes himself with his claim 'god-palanquin', who hence gets to be a referent not for characterizing his ancestry or his caste, but for characterizing the place from where he comes or, more precisely, where he lives (Berti, Daniela, 2009b, pp. 24). Local deities have influence over the political and religious life of people. They had established close associations with rulers in the past. Those protected them from misfortune and rulers generously granted endowments. In the nineteenth and first half twentieth century, they had cordial relation with the British administrators. Now the political leaders (caretaker of state) have alliances with local deities. Himachal Pradesh has a mixed culture of brahmanical and independent godlings. The people of hills followed brahmanical tradition of ritual celebrations and called themselves as *Hindu*. They visited the main religious establishments occasionally, but the local deities on regularly. It is not possible to group the Western Himalayan local religion into one particular religion.

REFERENCES:

1. Ahluwalia, M.S., *History of Himachal Pradesh*, New Delhi: Intellectual Publishing House, 1983.
2. Ahluwalia, M.S., *Social, Cultural and Economic History of Himachal Pradesh*, New Delhi: Indus Publishing Company, 1998.
3. Amarujala-Himachal Pradesh, 11th March, 2020, <https://www.amarujala.com/photo-gallery/shimla/india-vs-south-africa-odi-match-in-hpca-stadium-dharamshala-hpca-takes-blessings-of-god-indrunag?fbclid=IwAR2pjHiO0W2eW6zjvgS2QTgS4YcD19LkP-H7Z1Vnwuw1RjwmQtWo3nWZgQ>, searched on dated, 14/04/2020.
4. Amarujala-Himachal Pradesh, 29th February, 2020, https://www.amarujala.com/shimla/hpca-will-apologize-to-indrunag-devta-bhandarawill-now-be-held-on-23-march-every-year?fbclid=IwAR2mLUcCNc0B8mYxZ5v33fLYReZR_a685qjdVrWbnsIMcXn6CyFh5t-UjM, searched on dated, 14/04/2020.
5. Atkinson, Edwin T., (1882) 1973. *The Himalayan Gazetteer*, Vol. II, Part I, Cosmo Publications: Delhi.

6. Atkinson, Edwin T., *Religion in the Himalayas*, Delhi: Cosmo Publication, 1974 (Reprint).
7. Beotra, B.R. *Gazetteer of Suket State*, New Delhi: Indus Publishing Company, 1927(reprint).
8. Berreman, Gerald D. 1960, Cultural Variability and Drift in the Himalayan Hills, *American Anthropologist* 62(5): pp. 774-794.
9. Berreman, Gerald D. 1963. Hindus of Himalayas: Ethnography and Change, New Delhi: Oxford University Press.
10. Berreman, Gerald D. 1964. Brahmins and Shamans in Pahari religion, *The Journal of Asian Studies* 23, pp. 53-69.
11. Berti, Daniela, 2009a. Divine Jurisdictions and Forms of Government in Himachal Pradesh, In *Territory, Soil And Society in the South Asia*, (ed.) Daniela Berti and Gilles Tarabout, Delhi: Manohar, pp. 311-339.
12. Berti, Daniela, 2009b. Kings, Gods and Political Leaders in Kullu (Himachal Pradesh), In *Bards and Medium in the Khas Kingdom*, (ed.) Marie Lecomte-Tilouine, Almora/Delhi: Himalayan Book Depot, pp. 107-136.
13. Bindi, Serena, 2012, When There Were Only Gods, Then There Was No Disease, No Need For Doctors: weakening Bodies and Forsaken Deities in the Indian Himalayas, *Anthropology and Medicine* 19 (1), pp. 85-94.
14. Business standard, 6th October, 2017, https://www.business-standard.com/article/pti-stories/kullu-dussehra-concludes-with-symbolic-lanka-dahan-117100601188_1.html, searched on dated, 14/04/2020. Searched on dated, 14/04/2020.
15. Census of India: 1961, Vol. - XX, Himachal Pradesh, Part - VII-B, Fairs and Festivals, Shimla, 1967.
16. Charak, Sukhdev Singh, *History and Culture of Himalayan State Volume - III, Himachal Pradesh Part Three*, New Delhi: Light and Life Publishers, 1979.
17. Chatterjee, Partha, *Secularism and Tolerance*, in *Secularism and Its Critics* ed. Rajeev Bhavargava, Delhi: Oxford University Press, 1998, 297-320.
18. Chauhan, Suman, *Social Organization and Land Control: A Study of the Role of Temples in Kullu and Shimla*, Ph. D Thesis, Shimla: Himachal Pradesh University, 1997.
19. Cohen, Bernard, 1962, Political System in eighteenth Century in India: The Benares Region, *Anthropologist Among the Historian and Others Essay*, New Delhi: Oxford University Press, pp. 483-499
20. Elmore, Mark, *Becoming Religious in a Secular Age*, California: University of California Press, 2016.
21. Emerson, W.H., *Punjab Gazetteer, Mandi State*, Vol. XXI- A, Lahore: Punjab Government, 1920.

22. Gazetteer of Kangra District Part-I (Kangra 1883-1884) New Delhi: Indus Publishing Company, 1994 (reprint first ed. 1883-1884).
23. Griesson, George Abraham, Linguistic Survey of India, Indo-Aryan Family, Vol. - 9, Part -4, Calcutta, 1916.
24. Gupta, Shanta, Historical and Cultural Study of Fairs and Festivals of Himachal Pradesh, Ph. D Thesis, Shimla: Himachal Pradesh University, 1993.
25. Handa, O. C., *Naga Cults and Traditions in the Western Himalayas*, Delhi: Indus Publishing Company, 2004.
26. Handa, O. C., *Pashchami Himalaya Ke Lok Kaliaan (Hindi)*, New Delhi: Indus Publishing Company, 1988.
27. Handa, O. C., *Temple Architecture of Western Himalayas-Wooden Temples*, New Delhi: Indus Publishing Company, 1998.
28. Haranata, S. R., *Himachal Ke Mandir Aur Unse Juri Lok Kathen (Hindi)*, Shimla: Minerva Book House, 1991.
29. Himachal Watcher, 15th February, 2018, <https://himachalwatcher.com/2018/02/15/himachals-traditional-mandi-shivratri-fair-begins-today/>, searched on dated, 14/04/2020.
30. Hutchison, J. and J. Ph. Vogel, *History of Punjab Hill States Vols. I-II*. Shimla: Department of Language and Culture, Himachal Pradesh, 2000 (reprint, first ed. 1901).
31. Ibbetson, D., *Punjab Caste*, Lahore: Government of India Press, 1916.
32. Imperial Gazetteer of India (Punjab) Provincial Series, II Vols. Calcutta: 1908.
33. India.com, 9th March 2016, <https://www.india.com/news/india/himachal-pradesh-cm-virbhadr-singh-inaugurates-international-shivratri-mandi-fair-1017453/>, searched on dated, 14/04/2020.
34. Justa, H. R. and Som P. Ranchan, *Folk Tales of Himachal Pradesh*, Bombay: Bhartiya Vidya Bhawan, 1981.
35. Kumar, Sunny, 2020, The Cult of Baba Balak Nath In Himachal Pradesh: A Historical Perspective, in *Our Heritage* Vol. -68 (1), pp. 13608-13614.
36. Lecomte - Tilouine, Marie, 2009, Reflections on Kingship, Mediumism and Territory in the Central Himalayas. In *Bards and Mediums - History, Culture and Politics in the Central Himalayan Kingdoms* (ed.) Marie Lecomte - Tilouine, Almora: Almora Book Depot. pp. 11-25.
37. Luchesi, Brigitte, 2006, Fighting Enemies and Projecting Territory: Deities as Local Rulers in Kullu, Himachal Pradesh, *European Bulletin of Himalayan Research* 29-30: pp. 62-81.
38. Majumdar, Dharendra Nath, 1962, *Himalayan Polyandry: Structure, functioning and cultural Change. A Field Study of Jaunsar- Bawar*. Bombay: The times of India Press.

39. O'Malley, L.S.S., *Popular Hinduism the Religion of the Masses*, London: Cambridge University Press, 1935.
40. Rose, H. A., *A Glossary of the Tribes and Castes of India and Northwest Frontier*, 3 Vols. Patiala: Languages Department Punjab, 1970 (reprint, first ed. 1901).
41. Samachar First, 24th November, 2019, <http://samacharfirst.com/2019/11/Kullu-dev-parliament-orders-to-cleanse-the-ground-25228>, searched on dated, 14/04/2020.
41. Sax, William, 2000, In Karna's Realm: An Ontology of Action, *Journal of Indian Philosophy* 28 (3): pp. 295-324.
42. Sax, William, 2003, Divine Kingdoms in the Central Himalayas, In *Sacred Landscapes of the Himalayas* (ed.) Niels Gutschow, et al., Vienna: Verlag der Österreichischen Akademie Der Wissenschaften. pp. 177-194.
43. Sax, William, 2004, Healing Rituals: A Critical Performative Approach, *Anthropology and Medicine* 11 (3): pp. 293-306.
44. Sax, William, (2006 a) A Divine Identity – Crisis, In *Ritual and Identity: Performative Practices as effective Transformations of Social Reality* (ed.) Klaus-Peter Kopping et al., pp. 101-127.
45. Sax, William, 2006 b, Rituals of the Warrior Khund, *European Bulletin of Himalayan Research* 29-30: pp. 120-130.
46. Sax, William, 2009, *Gods of Justice: Ritual Healing and Social Justice in the central Himalayas*. New York: Oxford University Press.
47. Sharabi, Asaf and Shalev, Hagar (2016) "From Ruler to Healer: Changes in Religious Experience in the western Himalayas" *HIMALAYA, the Journal of the Association for Nepal and Himalayan Studies*: Vol.36: No. 2, Article 7. Available at: [//digitalcommons.macalester.edu/Himalaya/vol36/iss2/7](http://digitalcommons.macalester.edu/Himalaya/vol36/iss2/7)
48. Sharma, B. R., *Gods of Himachal Pradesh*, Institute of Integrated Himalayan Studies Shimla, New Delhi: Indus Publishing Company, 2006.
49. Singh, Mian Goverdhan, (2010) *Himachal Pradesh History, Culture and Economy*, Shimla: Minerva Publisher & Distributors (reprint first ed. 1985)
50. Singh, Mian Goverdhan, *Festivals, Fairs and Customs of Himachal Pradesh*, New Delhi: Indus Publishing House, 1992.
51. Singh, Jogishwar, 1989. Bank, Gods and Government: Institutional and Informal Credit Structure in a Remote and Tribal Indian District (Kinnaur, Himachal Pradesh 1960-1985), Wiesbaden: Frans Steiner Verlag.
52. Sutherland, Peter, 2003, Very little Kingdoms: the Calendrical Order of West Himalayan Hindi Polity, In *Sharing Sovereignty- Royalty on a small Scale. The Little Kingdom in the south Asia*. (ed.) G Berkermer and M. Frenz Berlin: Klaus Schwarts Verlag. Pp. 31-61.

53. Sutherland, Peter, 2004, Local Representation of History and the History of Local representation: Timescapes of theistic Agency in the Western Himalayas, *European Bulletin of Himalayan Research* 25/26: pp. 80-118.
54. Sutherland, Peter, 2004, T (r) opologies of Rule (Raj): Ritual Sovereignty and Theistic Subjection. *European Bulletin of Himalayan Research* 29-30: pp. 82-119.
55. Thakur, M. R., *Myths Rituals and Beliefs in Himachal Pradesh*, New Delhi: Indus Publishing Company, 1997.
57. The Statesman, Shimla, <https://www.thestatesman.com/cities/jai-ram-announces-5-pc-increase-in-honorarium-for-deities-1502701075.html>, searched on dated, 14/04/2020.
58. The times of India, 29th October, 2017, <https://timesofindia.indiatimes.com/city/shimla/Kullu-Dussehra-concludes/articleshow/49576144.cms>, searched on dated, 14/04/2020.
59. The Tribune, 15th October, 2019, <https://www.tribuneindia.com/news/archive/himachal/cm-hikes-nazrana-of-deities-by-5-847150>, searched on dated, 14/04/2020.
60. The Tribune, 23rd March, 2020 <https://www.tribuneindia.com/news/himachal/cm-announces-10-hike-in-nazarana-45664>, searched on dated, 14/04/2020.

Peer Reviewed ISSN Approved | Impact Factor: 7.17

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Open Access Journal
E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and
Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google
scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research
Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major
database & Metadata, Citation Generator, Digital Object
Identifier (DOI), UGC Approved Journal NO: 43602(19)

Publisher and managed by: IJ Publication

Website: www.ijrar.org | E-mail: editor@ijrar.org



IJRAR | www.ijrar.org

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR)

International Peer Reviewed & Refereed Journal, Open Access Journal
E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138 | Impact factor: 7.17 | ESTD Year: 2014

Scholarly open access journal, Peer-reviewed, and Refereed Journal, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier (DOI), UGC Approved
Journal No: 43602(19)

Impact Factor : 7.17 (calculated by google scholar)	Monthly, Multidisciplinary and Multilanguage (Regional language supported)
International Journal	Peer Review Journal Refereed Journal
Journal Soft copy, Research Paper, Certificate, DOI and Hard copy of Journal Provided.	Indexing In Google Scholar, SSRN, ResearcherID-Publons, Semantic Scholar AI-Powered Research Tool, Microsoft Academic, Academia.edu, arXiv.org, Research Gate, CiteSeerX, ResearcherID Thomson Reuters, Mendeley : reference manager, DocStoc, ISSUU, Scribd, and many more
Automated Metadata Citation Generator	Fast Process and Low Publication Charge
Provide the Mail and SMS notification	Approved, Open Access Journal
Highly Secure SSL Website	Managed By IJPUBLICATION



INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS
E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

IJRAR

IMPACT FACTOR: 7.17 BY GOOGLE SCHOLAR

Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier(DOI)

EDITOR@IJRAR.ORG
MO: 9354477117
WWW.IJRAR.ORG

CALL FOR PAPER
Paper Submission Till:
29th of Current Month
Submit Your Paper online @
www.ijrar.org

Benefits of Publishing Paper in IJRAR
Editor and Society Review and Publication Process
A digital object identifier (DOI), and hard soft copy of Certificate
Email and SMS Support to Author
Free e-Journal Process and Research tool design
e-Journal and DOI, ISSN website and Author Page
Free online ResearcherID Thomson Reuters, CiteSeerX
Social, arXiv, Semantic Scholar, ResearchGate, Mendeley, DocStoc, ISSUU, Scribd, and many more
ResearcherID Thomson Reuters, CiteSeerX, Mendeley, DocStoc, ISSUU, Scribd, and many more

Contact us For bulk paper Publications and Conference @
editor@ijrar.org
Major Indexing



Submit Your Manuscript/Papers To
editor@ijrar.org | www.ijrar.org



E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138

©IJRAR, All Rights Reserved | www.ijrar.org | editor@ijrar.org



पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों का चिंतन

¹प्रदीप सिंह ²योगराज

¹पीएचडी शोध छात्र दीनदयाल पीठ हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला।

² सहायक आचार्य राजनीतिक शास्त्र इकडोल विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल शिमला।

शोध सार: दीनदयाल उपाध्याय जी एक राष्ट्र ऋषि लेखक उच्च कोटि के भारतीय राजनीतिक विचारक थे उन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्र धर्म और समाज की सेवा में अर्पित किया। दीनदयाल जी हमेशा ही समाज और राष्ट्र हित के विषय में चिंतन करते थे उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के तौर पर संघ का कार्य शुरू किया उसके बाद भारतीय जनसंघ में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ कार्य करते हुए जनसंघ का काम आगे बढ़ाया। दीनदयाल एकात्म मानववाद के प्रेरणा स्त्रोत है उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में गरीब से गरीब व्यक्ति का भी उत्थान होना अति आवश्यक है अंतिम पंक्ति में खड़ा व्यक्ति भी इस देश में प्रगति का भागीदार बने इसी संदर्भ में उन्होंने एकात्म मानववाद का चिंतन दर्शन रखा था वे चाहते थे कि समाज में सभी समान रूप से आगे बढ़े कोई किसी का शोषण ना करें सामाजिक समरसता और सद्भावना के लिए पंडित दीनदयाल जी हमेशा कटिबद्ध रहे। इस शोध पत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों और संघ में उनकी भूमिका के बारे में प्रकाश डाला गया है। उनका मानना था कि राजनीति में राष्ट्र हित ही सर्वोपरि होना चाहिए और राजनीतिक दलों को अपने सिद्धांतों के साथ कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए वे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद के समर्थक थे।

मूल शब्द: पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राजनीतिक विचार, राष्ट्रवादी, जनतंत्र।

प्रस्तावना

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का ऋषि तुल्य व्यक्तित्व था श्रम सौजन्य और शालीनता के प्रतीक थे अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा अनेक विषयों के विद्वान थे लेखनी पर उनका असाधारण अधिकार था असाधारण प्रतिभा के धनी पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सच्चे लोकतंत्रवादी व मौलिक विचारक थे उनकी कथनी और करनी में कभी भेद नहीं रहा वह अंधविश्वासी तथा रूढ़िवादी भी नहीं थे उनके विचार युवा अनुकूल गतिमान हैं उनकी दृष्टि समग्रतावादी थी। उनकी सांगठनिक क्षमता अद्भुत थी, वह दयालुता सौम्यता तथा सादगी की प्रतिमूर्ति थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विषय में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के लिए राजनीति साधन थी साध्य नहीं यह मार्ग था मंजिल नहीं वे राजनीति का अध्यात्मकीकरण करना चाहते थे भारत के उज्ज्वल प्रतिष्ठा से प्रेरणा लेते थे तथा उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना चाहते थे उनकी आस्था सदियों पुराने अक्षय राष्ट्र जीवन की जड़ों से रसग्रहण करती थी किंतु वह रूढ़िवादी नहीं थे भविष्य के निर्माण के लिए भारत को समृद्ध शाली आधुनिक राष्ट्र बनाने की कल्पना लेकर चलते थे।¹ वर्तमान भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों एवं वातावरण में एकात्ममानव दर्शन के आधार पर जाति धर्म भाषा और क्षेत्र के आधार पर विभक्त समाज को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है यदि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को भी सशक्त बनाने पर बल दिया जाए सच्चा विकास तभी कहलाएगा जब समाज के प्रत्येक वर्ग को बराबर अधिकार मिले। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी समाज में बढ़ती अवसरवादीता के खिलाफ थे। वे भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में देखना चाहते देखना चाहते थे लेकिन इसके लिए आवश्यक है देश में विकास और ज्ञान की गंगा बहे भाईचारा विकसित हो धर्म और जाति के आधार पर क्षेत्र के आधार पर वर्ग

कोविड-१९ के परिप्रेक्ष्य में

भारतीय बौद्धिक एवं सांस्कृतिक चिन्तन धारा

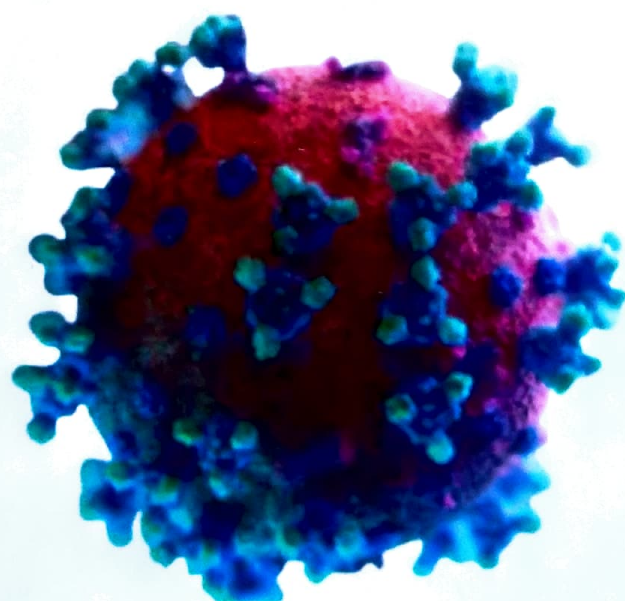
INDIAN INTELLECTUAL AND CULTURAL TRADITIONS
IN CONTEXT OF COVID-19

सम्पादक

डॉ. चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

सह-सम्पादक

डॉ. अवनीश कुमार सिंह



- | | | |
|-------|---|-----|
| 18. | भारतीय संस्कृति व शिक्षा की सामयिकता | 178 |
| | —डॉ० रमा शर्मा | |
| ✓ 19. | भारतीय संस्कृति और भूमण्डलीकरण | 186 |
| | —डॉ० ऊषा रानी | |
| 20. | भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का मध्यवर्गीय अवलोकन | 194 |
| | —राजेश कुमार सिन्हा | |
| 21. | भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य | 202 |
| | —डॉ० अंजली उपाध्याय | |
| 22. | उत्तर कोरोना काल में मानव और प्रकृति में
अंतर्सम्बन्ध : एक अध्ययन | 207 |
| | —डॉ० नियाज अहमद अन्सारी एवं डॉ० कन्हैयालाल धुर्वे | |
| 23. | उत्तर कोरोना काल में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम
के प्रति जागरूकता का एक अध्ययन के सन्दर्भ में— | 214 |
| | —डॉ० मीता सरल एवं कु० निधि गोंड | |
| 24. | कोरोना काल में सामाजिक समस्याएं | 223 |
| | —डॉ० भाग्यश्री जे० राजपुत | |
| 25. | कोरोना महामारी और महिलाओं के प्रति बढ़ती घरेलू हिंसा | 230 |
| | —ममता गौतम | |
| 26. | मानव और प्रकृति का अन्तःसम्बन्ध | 237 |
| | —डॉ० आशुतोष कुमार त्रिपाठी | |
| 27. | मानव और प्रकृति का सम्बन्ध | 245 |
| | —डॉ० ममता चौधरी | |
| 28. | मानव और प्रकृति का सम्बन्ध | 250 |
| | —रामसजीवनपाल | |
| 29. | स्वदेशी : आधुनिक भारत के निर्माण की ताकत | 258 |
| | —भूपेन्द्र प्रताप सिंह | |

भारतीय संस्कृति और भूमण्डलीकरण

डॉ० ऊषा रानी

सारांश

भारत एशिया के दक्षिण में एक विशाल व सम्पन्न देश है। भारतीय संस्कृति समन्वय एवं संश्लेषण के युगतटों के बीच प्रवाहित होने वाली सदान्तर शाश्वती धारा है। जिसने केवल इसी राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं में जन्मी अथवा पली जातियों का मानस-सिंचन नहीं किया है, वरन् वह तो अनन्त काल से सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः के महत् लक्ष्य को धारण करते हुए समस्त विश्व के श्रेयस् के लिए अमृत वर्षण करती रही है, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की संस्कृतियों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सभ्यता और संस्कृति का प्रयोग साथ-साथ होने से इन्हें एक सिक्के के दो पहलू भी कहा जाता है। इतना ही नहीं इन दोनों को एक दूसरे का पर्यायवाची भी समझा जाता है, परन्तु इन दोनों में इतनी घनिष्टता होते हुए भी काफी विभिन्ता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति विश्व की प्राचीन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों में से एक है और विश्व की संस्कृतियों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। जिस समय संसार के अनेक देश अन्धकारमय जीवन व्यतीत कर रहे थे उस समय भारत को विश्व का गुरु माना जाता था। भारत ने उस समय

कहानी-संग्रह

सुनो तुम मुझसे वादा करो

संपादक

डॉ. कामराज सिंधु • डॉ. दीप्ति जोशी गुप्ता

20.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	संदीप फिरोजाबादी	151
21.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	सन्ध्या गोयल सुगम्या	158
22.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	डॉ. सुनीता शर्मा	162
23.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	सुषमा शांडिल्य	167
24.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	कमला जोशी	176
25.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	लेफ्टिनेंट कर्नल महावीर सिंह	180
26.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	ममता भट्ट पांडेय	186
27.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	मंजू महेश	190
28.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	डॉ. मंजुल मठपाल	196
29.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	डॉ. मंजुला पाण्डे	205
30.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	माया पंत	211
31.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	विनोद मिश्र 'सुरमणि'	215
32.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	यशपाल निर्मल	223
33.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	डॉ. दीप्ति जोशी गुप्ता	228
34.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	डॉ. सरिता शुक्ला	241
35.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	बीना खुल्वे	252
36.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	लक्ष्मी नेगी	259
37.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	प्रीति जोशी	265
38.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	रीता जोशी	273
39.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	सरिता गुप्ता	278
40.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	विदुषी शर्मा	283
41.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	ऊषा रानी	289
42.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	किरण गुप्ता	292
43.	सुनो तुम मुझसे वादा करो	मुकेश कुमार	299

सुनो तुम मुझसे वादा करो



ऊषा रानी

स्कूल से सेवानिवृत्त हुए आज अनुप्रिया को लगभग छः माह हो गए थे। किन्तु आज भी वो अपने आप को बहुत व्यस्त रखती थी और अपनी दिनचर्या में भी कोई रुकावट नहीं आने देती थी प्रातःकालीन उठकर पूजापाठ कर दिन की शुरुआत करती थी। शिमला में उसकी मन पसन्द जगह रिज का मैदान था। उसका मन आज उदास है। जब भी वह उदास होती थी तो रिज पर आ जाती थी। वह जब स्कूल में पढ़ाती थी तो छुट्टी अथवा रविवार के दिन अक्सर वहां टहलने को चली जाया करती थी। आज फिर वह तैयार होकर रिज की ओर जाने का प्लान करती है। रास्ते में इंडियन कॉफी हाऊस है वह वहां जाकर बैठ जाती है। और हर बार की तरह इस बार भी उसने दो कॉफी का आर्डर किया। उसके आर्डर के साथ ही वेटर जो उसे अच्छी तरह जानता था उसने हल्की सी स्माइल दी और दो कप कॉफी उसके सामने लाकर रख दी। अनु ने एक के बाद दूसरी कॉफी सिप की और बिल देकर चुपचाप कॉफी हाऊस से निकलकर धीरे-धीरे रिज की तरफ चल पड़ी और चर्च के सामने लगी अपनी मनपसंद बेंच पर जाकर बैठ गई। इस बेंच पर बैठना उसे बहुत सुकून देता है। वो जब भी रिज पर आती है इसी बेंच पर बैठना पसंद करती है किसी और बेंच पर बैठना उसे पसंद नहीं। कई बार अपनी मनपसंद बेंच खाली न होने पर वह बिना बैठे ही टहलते हुए वापस घर आ जाती थी। आज वह फिर उसी बेंच पर जाकर बैठ गई। बेंच पर बैठते ही उसे महसूस होने लगता है कि उसका संगी, उसका प्यार उसके साथ

भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

(दलित, मीडिया, समाज, नारी)



संपादक

डॉ कामराज सिन्धु (गुरुजी)

20.	वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं के समाधानार्थ भारतीय संस्कृति	203
	डॉ. कंचन शर्मा	
21.	महिला सशक्तिकरण में सावित्रीबाई फुले की भूमिका	216
	डॉ. कामराज सिन्धु	
22.	भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्त्व	224
	डॉ. ऊषा रानी	
23.	वाल्मीकि रामायण में सीता वनवास तथा अपहरण	242
	डॉ. कौशल्या देवी	
	डॉ. कामराज गुरुजी परिचय	252

भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्त्व

डॉ. ऊषा रानी

प्रत्येक संस्कृति की मूल चेतना संस्कार की होती है, तथापि एक संस्कृति के तत्त्व किसी दूसरी संस्कृति के तत्त्वों के सर्वथा समरूप नहीं होते। एक संस्कृति की विशेषताएँ ठीक वही नहीं होती, जो किसी दूसरी संस्कृति की विशेषताएँ होती हैं। तत्त्वों या विशेषताओं की विभिन्नता ही सांस्कृतिक अनेकता को जन्म देती है और तात्त्विक भिन्नता ही वह आधार है जिसके कारण किसी एक संस्कृति किसी अन्य संस्कृति से अलग पहचान पाना सम्भव हो पाता है। भारतीय संस्कृति के निम्नोक्त प्रमुख तत्त्व हैं जो इसे एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान कर अन्य संस्कृतियों से पृथक् करते हैं।

1. आध्यात्मिकता की प्रधानता

धर्म संस्कृति का आवश्यक अंग है। धर्म के दो भाग हैं—आध्यात्मिकता (Spirituality) और कर्मकाण्ड अथवा बाह्याडम्बर (Ritualism)। आध्यात्मिकता तो सब धर्मों की एक जैसी है, लेकिन उनके बाह्याडम्बरों में अन्तर है। सब धर्मों ने अपने निजी प्रतीक चिह्न गढ़कर अपनी अलग अस्मिता व पहचान बना ली है। अब तो एक ही धर्म के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न सम्प्रदायों ने भी अपनी अलग पहचान बना ली है। उदाहरणार्थ, दक्षिण भारत में यदि कोई हिन्दू माथे पर लेंटा हुआ चन्दन-तिलक लगाता है तो समझो वह शैव है और यदि सीधा खड़ा हुआ चन्दन-तिलक लगाता है तो समझो वह वैष्णव है। यद्यपि आध्यात्मिकता का न्यूनाधिक अंश प्रत्येक संस्कृति में निहित रहता है, परन्तु भारतीय संस्कृति का तो यह प्राण तत्त्व है। प्रारम्भ से लेकर आज पर्यन्त उसमें आध्यात्मिकता की प्रबलता रही है। यदि सूत्रात्मक रूप में आध्यात्मिकता को भारतीय संस्कृति का



दलित पत्रकारिता

वर्तमान दशा और दिशा

संपादक
डॉ. राम भरोसे

12. दलित पत्रकारिता / नीरा परमार	119
13. सोशल मीडिया का दलितों के जनजीवन पर प्रभाव / नेहा कुमारी	124
14. हिन्दी दलित पत्रकारिता का उद्भव और विकास / रेणु देवी	133
15. दलित पत्रकारिता से दलित साहित्य का उद्भव / नीलम देवी	143
16. डॉ. अम्बेडकर : दलित चेतना और पत्रकारिता / डॉ. मन्जू कोगियाल	153
17. संपादक लक्ष्मी देवी टम्टा और समता : रजत जयंती विशेषांक / डॉ. प्रीति आर्या	164
18. जनसंचार माध्यम और सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में दलित विमर्श / मनीषा गिरी 'मनमुग्ध'	169
19. हिन्दी पत्रकारिता बनाम हिन्दी दलित पत्रकारिता / डॉ. राम भरोसे	176
20. दलित पत्रकारिता पर डॉ. अंबेडकर का प्रभाव / डॉ. गुलाबचंद पटेल	196
21. दलित पत्रकारिता और डॉ. भीमराव अंबेडकर / डॉ. पायल लिल्लहारे	206
22. दलित पत्रकारिता : वर्तमान दशा एवं दिशा / डॉ. दीपक कुमारी	214
23. दलित साहित्य की अवधारणा एवं पत्रकारिता / डॉ. कामराज गुरुजी	221
24. दलित पत्रकारिता : बदलते परिप्रेक्ष्य डॉ. ऊषा रानी	230

दलित पत्रकारिता : बदलते परिप्रेक्ष्य

डॉ. ऊषा रानी

विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं मीडिया ने मानव जीवन के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक तक कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सूचना प्रौद्योगिकी मानव जीवन में क्या परिवर्तन कर देगी। वायुयान, रेडियो, सिनेमा, एन्टीबायोटिक, परमाणु ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स, कम्प्यूटर्स व अन्तरिक्ष अनुसंधान आदि 20वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। भारत में पत्रकारिता की शुरुआत दो सदी पूर्व हुई थी और हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत ठीक-ठाक ढंग से डेढ़ सदी पूर्व 'उदंत मार्तंड' हिन्दी पत्रकारिता का प्रस्थान बिन्दु था। तब से लेकर आज तक हिन्दी पत्रकारिता अनेक पड़ावों से होकर गुजरी है और निरन्तर विकसित और उन्नत हो रही है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दलित समाज के अधिकांश लोग हाशिए पर रहे हैं। वैसे ही उनके सवाल, साहित्य व पत्रकारिता भी हाशिए पर रही है। सवर्ण समाज के कुछ लेखक व पत्रकार अपनी तरह से दलितों पर लिखते रहे हैं। दलितों की भागीदारी उनकी पत्रकारिता में बहुत कम रही। सवर्ण पत्रकारों ने दलित पत्रकारिता के बहाने नकारात्मक रवैया अपनाया। मनुष्य के विचारों को पत्रकारिता इधर से उधर आदिकाल से ढोती हुई एक सेतु का काम करती रही है। बदलाव हुआ भी है किन्तु जितना होना चाहिए था उतना नहीं हुआ। आज भी भारतीय समाज में ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी बरकरार है। समता मूलक समाज बनाने के लिए शिक्षित समाज व दलित पत्रकारिता के आगे आकर बड़ी बेबाकी से सवाल उठाने होंगे। अम्बेडकर और मीडिया का रिश्ता साथ-साथ चलता दिखता है। उन्होंने कई मीडिया प्रकाशनों की शुरुआत की उनका संपादन किया। सलाहकार के तौर पर काम किया और मालिक के तौर पर उनकी रखवाली की।



गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल

(NAAC Accredited 'A' Grade College)

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सम्बद्ध)

आन्तरिक गुणवत्ता विश्वस्तता प्रकोष्ठ

प्रमाण – पत्र



प्रमाणित किया जाता है कि प्रो०/डॉ०/श्रीमान/श्रीमती..... उषा रानी

पदनाम सहायक आचार्य विश्वविद्यालय/महाविद्यालय हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

ने एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्ष/मुख्य अतिथि/वक्ता/शोध-पत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में

दिनांक 17-02-2021 को भाग लिया तथा कबीरदास की सामाजिक चेतना

विषय पर व्याख्यान/शोध पत्र प्रस्तुत किया।

हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ० जी. के. सपड़ा
प्राचार्य

डॉ० प्रवीण कुमार वर्मा
प्रभारी

IQAC

डिग्ले
आयोजन-सचिव
हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञानपथ, समरहिल-शिमला

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् 'ए' ग्रेड विश्वविद्यालय)

द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार



विषय : हिन्दी साहित्य के बदलते परिदृश्य

दिनांक : 26 मार्च, 2021

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **डॉ. उषा रानी**, सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, इक्डोल, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला ने हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में **दलित साहित्य का बदलता परिदृश्य** विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. भवानी सिंह

संयोजक (सेमिनार)

हिन्दी-विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

डॉ. नरेश कुमार

सह-संयोजक (सेमिनार)

हिन्दी-विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

डॉ. पान सिंह

अध्यक्ष

हिन्दी-विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
सांध्यकालीन अध्ययन विभाग शिमला

सहभागिता प्रमाण पत्र

Dr. Usha Rana

ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के सांध्यकालीन अध्ययन विभाग द्वारा
01-04-21 को आयोजित राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी "रामायण की प्रासंगिकता
: वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में" में सफलतापूर्वक भाग लिया है।



Sapna

डॉ० सपना चंदेल
संयोजक

Y. J. J.

प्राचार्य मीनाक्षी एफ० पॉल
सांध्यकालीन अध्ययन विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
सांध्यकालीन अध्ययन विभाग शिमला

सहभागिता प्रमाण पत्र



Dr. Usha Rani



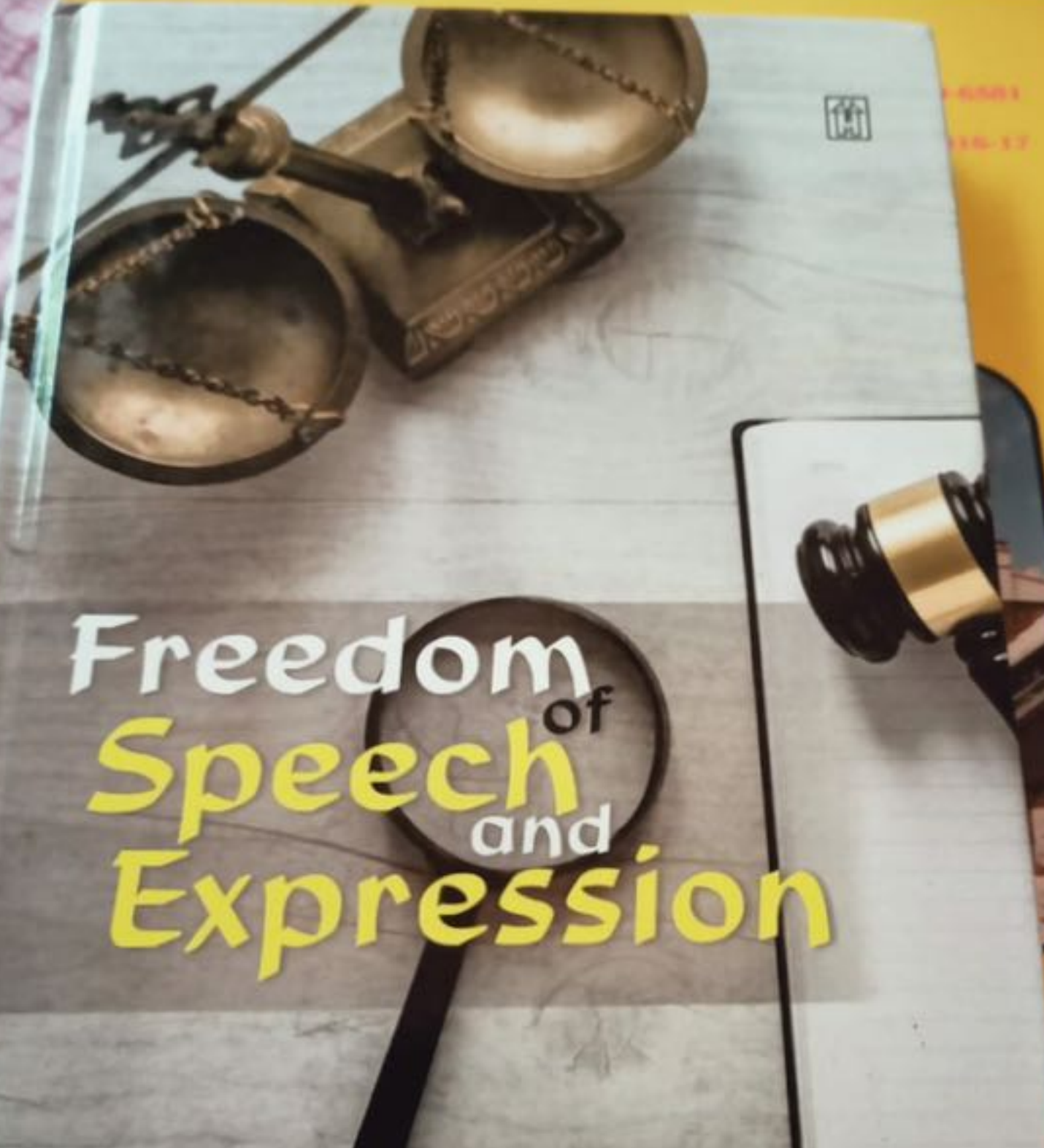
ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के सांध्यकालीन अध्ययन विभाग द्वारा
03-04-21 को आयोजित राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी "रेणु जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में
फणीश्वर नाथ रेणु: आंचलिक साहित्य" में सफलतापूर्वक भाग लिया है।


डॉ० सुनीता जसवाल
संयोजक


प्राचार्य मीनक्षी एफ० पॉल
सांध्यकालीन अध्ययन विभाग

3.4.6: Number of books and chapters in edited Volumes /books

Sr.No	Name of Faculty	Title of Book	Title of Research Paper	Page No.
1.	Dr. Seema Kashyap	Freedom of Speech and Expression		2-3
1	Dr. Rekha Suman	Fundamental Media Law on	Role of electronic media in education during COVID	4-5

A brass balance scale is positioned in the upper left corner, and a wooden gavel with a brass band is in the upper right corner. The background is a light-colored, textured surface.

Freedom of Speech and Expression

Edited by:
Prof. Sanjay Sindhu
Dr. Seema Kashyap
Mrs. Reetika Rana

Published by :
M/s University Book House (Pvt.) Ltd.
79, Chaura Rasta, Jaipur-3
Tel. (0141) 2311466, 2313382
e-mail : Uni_bookhouse@yahoo.com

ISBN : 978-81-945288-8-3

First Edition : 2020

Laser Type Setting & Printer
Neha Graphic, Jaipur & Mahaveer Enterprises Delhi

All rights reserved. No part of this work may be copied, adapted, abridged or translated, stored in any retrieval system, computer system, photographic or other system or transmitted in any form by any means whether electronic, mechanical, digital, optical, photographic or otherwise without a prior written permission of the copyright holders M/s University Book House (P) Ltd, Jaipur.

This book is sold subject to the condition that it, or any part of it, shall not by way of trade or otherwise, be sold, re-sold, displayed, advertised, or otherwise circulated, without the publisher's prior written consent, in any form of binding, cover of title other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser (s).

Any breach of any of these rights or conditions will entail civil and criminal action without further notice.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the author nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken on advice rendered or accepted on the basis of this work.

Rights of Publication reserved with the Publishers.



1st Edition 2021

© Publisher

Tu Hi Nirankar
With the blessing of
Satguru Mata Savinder Hardev Ji Maharaj
&
Shirdi Sai Baba Ji
Dedicated to Our Loving Father Late Shri Harish Chuttani



Published by

SHREE RAM LAW HOUSE

S.C.O - 71- 73, Sector - 17 - C, Chandigarh

Ph: 0172-2709277

Email: shreeramlaw@gmail.com, Website: www.onlinebooksbazaar.com

Authorised Distributor in Delhi

Allied Book Company

F - 4, Gokhale Market, Delhi

PH: 011 - 43502244, 23959639, 9810150323, 9958859973

Website: www.alliedbookco.in

Disclaimer: While every effort has been made to ensure that this journal/ book is free from errors or omissions, the authors, editors, publishers, printer, and other officer shall not be liable in any manner whatsoever for any action taken or omitted to be taken, opinions expressed, advice rendered or accepted based on any materials or information published in this book.

No part of this publication may be reproduced or copied in any form (including graphic, electronic or mechanical form) or by any means (including photocopying, recording, scanning, taping, or storing in any information retrieval system) or reproduced in any disc., tape, perforated media or any other information storage device, or translated in any other language without prior written permission of the Publisher. Any infringement shall result in criminal prosecution and civil claim for damages.

Your suggestions regarding the improvement of book is always welcome.

All disputes are subject to Chandigarh Jurisdiction only.

Printed at: Sai Printo Pack

RESEARCH ARTICLE | NOVEMBER 05 2020

First principle study of electronic and optical properties of functionalized Stanene quantum dot

Sushila Devi ; Munish Sharma; Brij Mohan; P. K. Ahluwalia; Shyam Chand

 Check for updates

+ Author & Article Information

AIP Conference Proceedings 2265, 030372 (2020)

<https://doi.org/10.1063/5.0016700>

A Stanene quantum dot in triangular shape has been investigated within the Density Functional Theory. The effect of edge passivation with hydrogen, fluorine and chlorine atoms on electronic and optical properties has been explored. We observed that HOMO-LUMO energy gap in functionalized structures varies from 0.33 eV to 0.27 eV and magnetic moment variation from $2.52 \mu_B$ to $1.98 \mu_B$. In dielectric function, red shift is observed for halogens (-F, -Cl) passivation comparative to hydrogenation and plasmons lie in infrared region of frequency spectrum.

Topics

HOMO and LUMO, Density functional theory, First-principle calculations, Plasmons, Magnetic dipole moment, Optical properties, Quantum dots, Topological insulator, Hydrogenation process

REFERENCES

1. A. H. Castro Neto, F. Guinea, N. M. R. Peres, K. S. Novoselov and A. K. Geim, *Rev. Mod. Phys.* 81 109–162 (2009). <https://doi.org/10.1103/RevModPhys.81.109>
Crossref

<https://pubs.aip.org/aip/acp/article/2265/1/030372/726117/First-principle-study-of-electronic-and-optical>

3.4.6 Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the year 2020-21

3.4.6.1: Total number of books and chapters in edited volumes / books published, and papers in national/international conference-proceedings during the year 2020-21

INDEX

Sr.No.	Title of the Chapter	Title of the book/chapters published	Page No.
1.	Biosynthesis and applications of metal nanomaterials	Green Nanomaterials: Processing, Properties and Applications	1-4
2.	Bionanomaterials from agricultural wastes	Green Nanomaterials: Processing, Properties and Applications	
3.	The lipases and their applications with emphasis on food industry	Microbial Biotechnology in Food and Health	5-7
4.	Circular economy: transforming solid-wastes to useful products	Current Developments in Biotechnology and Bioengineering	8-9
5.	Alginate based bionanocomposites in dental applications	BioNanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine	10-16
6.	Commercialization of bionanocomposites	BioNanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine	
7.	Future perspectives of bionanocomposites	BioNanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine	

8.	Updates on health and safety aspects of green nanomaterials	Green Functionalized Nanomaterials for Environmental Applications	17-19
9.	Traditional Fermented Foods: Present Status and Future Strategies	Post harvest management of fruits and vegetables	20-24
10.	Enzymes in fruits and vegetable processing. In: Post harvest management of fruits and vegetables	Post harvest management of fruits and vegetables	
11.	Culture of wine yeast and bacteria.	Concise Encyclopedia of Science and Technology of Wine	25-26

Advanced Structured Materials

Shakeel Ahmed
Wazed Ali *Editors*

Green Nanomaterials

Processing, Properties, and Applications

 Springer

Contents

Introduction to Green Nanomaterials	1
Pintu Pandit and T. Nadathur Gayatri	
Green Nanomaterials: A Sustainable Perspective	23
Sukanchan Palit and Chaudhery Mustansar Hussain	
Characterisation of Green Nanomaterials	43
T. Anukiruthika, S. Priyanka, J. A. Moses and C. Anandharamakrishnan	
Green Synthesis of Metal Nanoparticles for Electronic Textiles	81
Ashish Kapoor, Pramod Shankar and Wazed Ali	
Green Nanofillers for Polymeric Materials	99
T. P. Mohan and K. Kanny	
Biosynthesis and Applications of Metal Nanomaterials	139
Shweta Kishen, Akshita Mehta and Reena Gupta	
Carbon Dots from Renewable Resources: A Review on Precursor Choices and Potential Applications	159
Perumalsamy Vishnukumar, Sivashunmugam Sankaranarayanan, Muruganandham Hariram, Singaravelu Vivekanandhan and Rodrigo Navia	
Advances with Synthesis and Applications of Green Bionanomaterials	209
Aswathy Jayakumar, K. V. Heera, Thoniparambil Sunil Sumi, Meritta Joseph and E. K. Radhakrishnan	
Green Nanomaterials for Wastewater Treatment	227
Poonam Singh, Sanjay Kumar Yadav and Mohammed Kuddus	
Bionanomaterials from Agricultural Wastes	243
Manpreet Kaur, Akshita Mehta, Kamal Kumar Bhardwaj and Reena Gupta	



Green Nanomaterials pp 139–157 | [Cite as](#)

[Home](#) > [Green Nanomaterials](#) > [Chapter](#)

Biosynthesis and Applications of Metal Nanomaterials

[Shweta Kishen](#), [Akshita Mehta](#) & [Reena Gupta](#) 

Chapter | [First Online: 17 March 2020](#)

511 Accesses | 3 Citations

Part of the [Advanced Structured Materials](#) book series (STRUCTMAT, volume 126)

Abstract

Biosynthesis of nanoparticles is an emerging technology with conventional methods. Green synthesis of metal nanoparticles (MNPs) has been done from various biological materials like bacteria, fungi and plants extracts. Leaves extracts contain phytochemicals which play a major role in formulating and enhancing bioactivity of nanoparticles. Two main approaches used to synthesize nanoparticles are “top-down” and “bottom-up” approaches. Studies on green biosynthesis of MNPs particularly focus on copper, cobalt, silver, gold, platinum, zirconium, palladium, iron, cadmium and metal oxides such as titanium oxides, zinc oxides. These various MNPs have diverse applications in food industries, drug delivery system, nano-filtration, UV-protectant paints, biomedical field, agricultural, environmental and physiochemical areas. They also have applications as artificial enzymes, nanocatalysts, lubricant additives and as therapeutic agents. This chapter mainly pivots around the biosynthesis and applications of green and advanced nanomaterials.

Keywords

Nanoparticles

Nanocatalyst

Bioactive

Biomedical

Ultraviolet



Green Nanomaterials pp 243–260 | [Cite as](#)

[Home](#) > [Green Nanomaterials](#) > [Chapter](#)

Bionanomaterials from Agricultural Wastes

[Manpreet Kaur](#), [Akshita Mehta](#), [Kamal Kumar Bhardwaj](#) & [Reena Gupta](#) 

Chapter | [First Online: 17 March 2020](#)

495 Accesses | **1** Citations

Part of the [Advanced Structured Materials](#) book series (STRUCTMAT, volume 126)

Abstract

Agricultural biomass is the organic material left as a by-product after agricultural activities, particularly in developing countries. Present-day scenario witnesses a declined supply of raw materials which is a cause for concern. Natural fiber possesses properties that make them a suitable alternative material to be used in local timber industries for the production of value-added products. Agricultural cellulose offers many advantages because of its renewable and biodegradable properties. Cellulose fibers exhibit a unique structural hierarchy derived from their biological origin. Cellulose nanofibers (CNFs) owing to their morphology and physical properties have been proven a promising material not only in the fields of cosmetics, medicine, biocomposites and health care but are also progressing immensely to many other unlimited applications including high gas barrier packaging material, filter material and electronic devices. Depletion of natural resources, growing population and environmental concerns has increased the attention for the extreme development and use of nanomaterials from biomass. Marvelous and complex structure of bionanoparticles is helpful while understanding the chemical applications, and as a result the bionanomaterials can serve as the filler/reinforcement in polymer composites. The goal of this chapter is to discuss the properties of agricultural wastes along with its use as a bionanomaterial and its potential applications.

Keywords

Cellulose

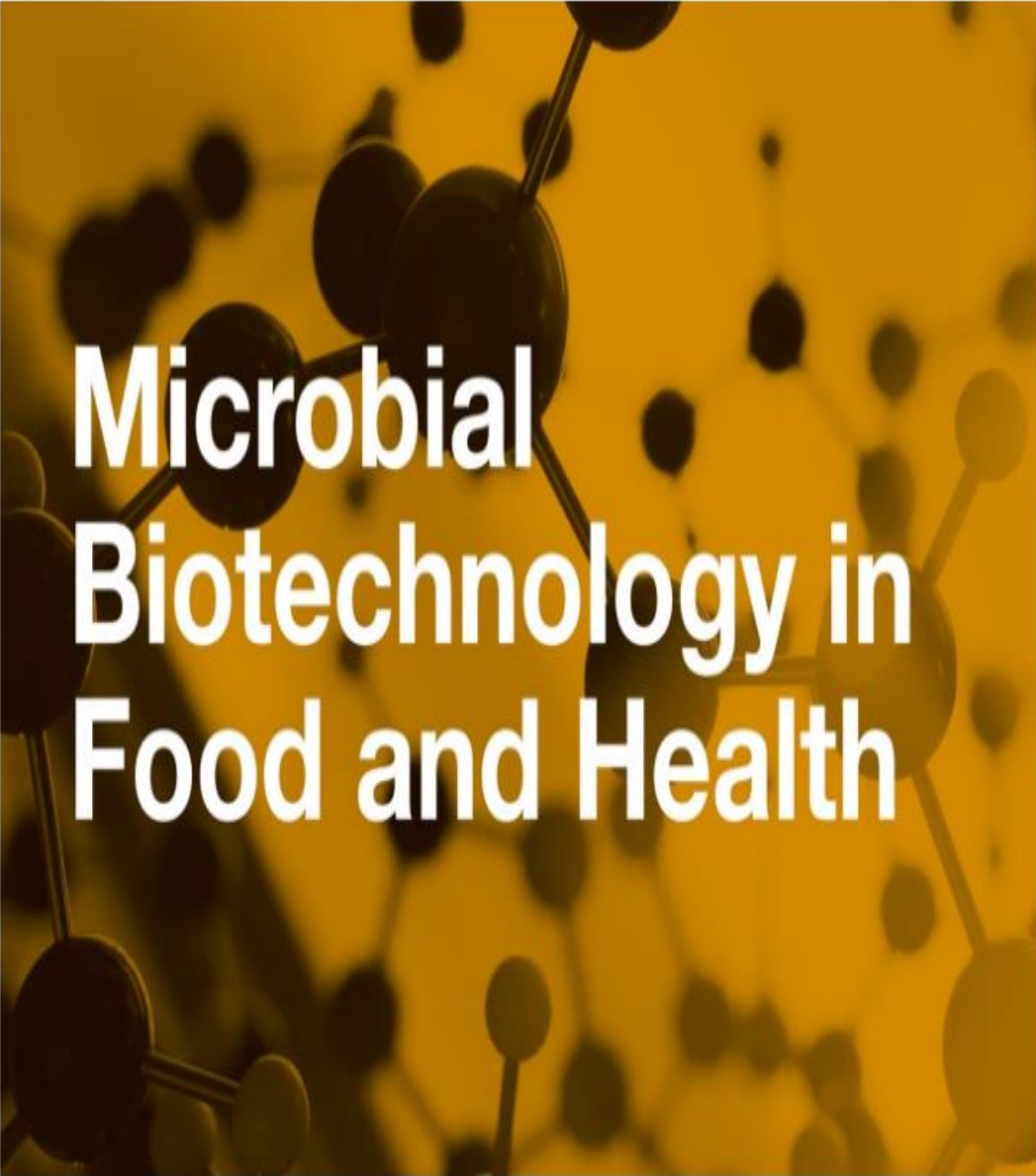
Bionanomaterials

Agricultural biomass

Biocomposites

Biopolymers

Microbial Biotechnology in Food and Health



Preview - Microbial Biotechnology in Food and Health



5.7. Microalgae in food supplements

5.8. Food supplements global trend, environmental and regulatory issues

5.9. Challenges, future perspectives and concluding remarks

6. The lipases and their applications with emphasis on food industry

6.1. Introduction

6.2. Sources of lipases

6.3. Process optimization of lipase

6.4. Crisper gene editing

6.5. In silico simulation and bioinformatic analysis

6.6. Applications of lipases

6.7. Conclusion

7. Biogenic amines in fermented vegetables: food safety issues

7.1. Introduction

7.2. Mechanism of BAs production



6 - The lipases and their applications with emphasis on food industry

Akshita Mehta, Suman Guleria, Roji Sharma, Reena Gupta

Show more ▾

+ Add to Mendeley  Share  Cite

<https://doi.org/10.1016/B978-0-12-819813-1.00006-2> ↗

[Get rights and content](#) ↗

Abstract

Today, lipases stand among the most important biocatalysts carrying out novel reactions in both aqueous and nonaqueous media. Lipases (EC 3.1.1.3) are a class of enzymes which catalyze the hydrolysis of long-chain triglycerides. They can act on a variety of substrates including natural oils, synthetic triglycerides, and esters of fatty acids. Lipases are produced by animals, plants, and microorganisms. At present, microbial lipases are achieving much awareness with the fast progress of enzyme technology. Lipases of microbial origin find an interesting role in biotechnology, as many of them are stable over a wide range of pH, at elevated temperature and organic solvents. They signify the most important group of biocatalysts for industrial applications. The present chapter defines various sources and industrial applications of microbial lipases especially in food processing, detergent industry, pulp and paper industry, fat and oleochemical industry, medical, and pharmaceutical. Lipases can be further exploited in many newer areas where they can serve as potential biocatalyst.

Current Developments in Biotechnology and Bioengineering





Chapter 10 - Circular economy: transforming solid-wastes to useful products

[Supriyanka Rana¹](#), [Puranjan Mishra¹](#), [Reena Gupta²](#), [Zularisam ab bin Wahid¹](#), [Lakhveer Singh¹](#)

Show more ▾

+ Add to Mendeley Share Cite

<https://doi.org/10.1016/B978-0-444-64309-4.00010-6> ↗

[Get rights and content](#) ↗

Abstract

Present 21st century world has started facing several challenges (such as waste management, bioresource scarcity, food/and energy security, climate change, global warming and health risks) as a heavy price of reckless usage/or exploitation of natural resource. In such a scenario, the implementation of circular economy model (based on use, produce, consume, waste recovery/or recycling, sharing, leasing, reusing, repairing, renovating, refurbishing and using waste feedstock to produce secondary products) emerged as the best sustainable option than linear economy model (based on use, produce, consume and waste discard). Inculcation of circularity in every aspect of our life (behavior, livelihood, economy, infrastructure) can help us in attaining long-term goals of sustainability and harmonizing human existence on planet Earth. Recent technological advancements have assisted in creating sustainable methods (incineration, pyrolysis, composting, anaerobic digestion) for treating or recycling the enormous solid waste, thereby enhancing valuable product recovery (such as heavy metals, biogases, bioelectricity, feedstock). So, it is necessary to develop more efficient sustainable waste-to-energy technologies capable of reutilizing solid wastes and helping to safeguard the environment from waste generated hazards. This chapter deals with sustainable ways to incorporate solid wastes into the circular loop of circular economy model. This chapter will present practical solutions for solid waste recycling and for fully realizing the potential of solid waste in circular economy in terms of more revenues.

Preview - Bionanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine



Preview - Bionanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine

15.7: Conclusions

16: Alginate-based bionanocomposites in dental applications

Abstract

Acknowledgments

Conflict(s) of Interest(s)

16.1: Introduction

16.2: What are alginates?

16.3: Structure of alginates

16.4: Properties of alginates

16.5: Biosynthesis of alginate

16.6: Alginates in dentistry

16.7: Impression materials

16.8: Future prospective

16.9: Conclusion

Alginate-based bionanocomposites in dental applications



Vibhuti Sharma, Manpreet Kaur, Rutika Sehgal, and Reena Gupta
Department of Biotechnology, Himachal Pradesh University, Shimla, India

16.1 Introduction

Preservation of environment is a major point of attention since the excessive use of petrochemicals is causing a lot of environmental hazards like pollution, climatic changes, etc. This has resulted in an eminent interest of industries and researchers in the discovery of new bio-based materials. Therefore, researchers are now moving towards the identification of new nanocomposites of biological origin [1]. These bio-based materials have become a potential and sustainable material in many different applications; thus, they can replace the petroleum-based materials [2]. Bionanocomposites have become one of the developing groups of bio-based hybrids, which comprise inorganic materials and biopolymers. These biopolymers can be obtained from natural resources such as starch, chitosan, alginate, cellulose, lignin, etc.

Bionanocomposites are renewable polymers, fabricated by combining a number of biomaterials, including proteins, polysaccharides, and nucleic acids along with some inorganic materials. These materials contain components of biological origin and particles within the dimension range of 1–100 nm. Production and synthesis of bionanocomposites can be executed by following various master plans such as in situ methods, solvent casting, grafting, etc., which further results in different functionalities and properties of bionanocomposites. Properties of bionanocomposites include biocompatibility, biodegradability, and antimicrobial activity; as a result, they can be frequently used in a variety of fields such as medical, pharmaceutical, packaging, etc. [3, 4]. Biopolymers are acquired naturally from plants, animals, and microorganisms, and alginate is one such polymer which is playing an extensive role in different areas like dentistry, tissue engineering, drug delivery, drug formulation, etc.

Alginates are naturally occurring linear biopolymers and belong to a carbohydrate family. Their structure comprises β -D-mannuronic acid (1–4 linkage) and α -L-guluronic acid (1–4 linkage) residues linked to each other by (1–4) glycosidic bonds. These are renewable resources derived from the cell wall of brown algae (like *Macrocystis pyrifera*, *Laminaria hyperborea*, *Laminaria digitata*, *Laminaria japonica*) and some bacterial strains (like *Azotobacter vinelandii* etc.) [5–7]. Alginates with an utmost configuration, which contains 100% mannuronate, can be obtained from bacteria, whereas alginates with a very large amount of guluronate can be obtained from tissues of algae like the outer cortex stipes of *Laminaria hyperborea*.

Preview - Bionanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine

30.7: Conclusion

31: Commercialization of bionanocomposites

Abstract

Acknowledgments

Conflict(s) of interest(s)

31.1: Introduction

31.2: Matrices used for the preparation of bionanocomposites

31.3: Reinforcements used for the preparation of bionanocomposites

31.4: Properties and characterization

31.5: Classification of composites

31.6: Production method

31.7: Techniques to improve the properties for commercialization

31.8: Important commercial aspects of bionanocomposites

31.9: Global forecast of bionanocomposites

31.10: Bionanocomposite-manufacturing technology: Area of critical national need

31.11: Future perspectives

Commercialization of bionanocomposites

31

Vani Angra, Rutika Sehgal, Manpreet Kaur, and Reena Gupta
Department of Biotechnology, Himachal Pradesh University, Shimla, India

31.1 Introduction

The word “composite” means materials that are made from a combination of two or more materials that influence the chemical and physical properties. These composites are made up of two materials—a matrix and reinforcement. The matrix can be polymeric, metallic, or ceramic in nature, which helps in the protection of the fiber from the environment. The reinforcement further helps in enhancing the chemical and physical properties of the matrix. Synthetic nanocomposites have been used since many years, but bionanocomposites have gained all the attention nowadays due to their biodegradable nature (Fig. 31.1). Bionanocomposites are made from a combination of synthetic and natural materials in the range of 1–100 nm. The nanoparticles used in the preparation of these bionanocomposites vary in their shapes, which directly influence their properties. They have unique properties such as biocompatibility, antimicrobial activity, biodegradability, which make their use highly widespread in various areas [1, 2]. This field is highly versatile with having wide applications in engineering plastics, electronics, packaging, and biomedical field (Fig. 31.2). The use of natural materials, such as lignin, cellulose, chitosan, and starch, opens a wide number of business opportunities for various industries [2]. Polymers due to their renewable nature form the basis for the economic development of a country, due to this reason they are also called green composites [3]. They can be substantially used in replacing petroleum-based polymers. The chemical and physical properties of these polymers can be improved by the use of nanomaterials such as kaolinite, montmorillonite, zinc oxide, and titanium oxide out of which clay and carbon nanotubes are the most widely used [4]. Nanoclays being cheap and having properties such as high absorption and high cation exchange make them the most widely used inorganic composites in the preparation of bionanocomposites. Sepiolite and palygorskite are the examples of natural microfibrous clay minerals. The increasing cost of nanoclays poses a very big problem on an economic scale; therefore, halloysite overcomes this problem by being a naturally occurring polymer. The biggest application of these bionanocomposites is the making of boat from glass fiber composites, turbines, and food packaging [5, 6]. The main obstructions to this growing field of bionanocomposites are the absence of proper production and processing methods, high cost of raw materials, lack of proper dispersion in the matrix that leads to precipitation and formation of jelly-like substances, and

Preview - Bionanocomposites in Tissue Engineering and Regenerative Medicine

32: Future perspectives of bionanocomposites

Abstract

Acknowledgments

Conflict(s) of interest(s)

32.1: Introduction

32.2: Properties of bionanocomposites

32.3: Biopolymers used in bionanocomposites

32.4: Applications of bionanocomposites

32.5: Nanosafety

32.6: Advantages of bionanocomposites

32.7: Disadvantages of bionanocomposites

32.8: Challenges of bionanocomposites

32.9: Conclusion



32 - Future perspectives of bionanocomposites

[Divya Sharma](#), [Kamal Kumar Bhardwaj](#), [Reena Gupta](#)

Show more ▾

+ Add to Mendeley  Share  Cite

<https://doi.org/10.1016/B978-0-12-821280-6.00001-5>

[Get rights and content](#)

Abstract

The nanocomposite is an interdisciplinary area encompassing physics, chemistry, biology, materials science, and engineering. During the last few years, bionanocomposite has emerged into a typical term to assign to those nanocomposites including a naturally occurring polymer (biopolymer) mixed with an inorganic moiety, and appearing no less than one measurement on the nanometer scale ($1\text{ nm}=10^{-9}$). They are the materials of 21st century in view of possessing design uniqueness and property combinations that are not found in conventional composites. Bionanocomposites have an annual growth rate of about 25% and have the fastest demand to be in engineering plastics and elastomers. The potential of bionanocomposites is so striking that they are useful in several areas ranging from packaging to biomedical applications. Natural bionanocomposites combine a high resilience and tolerance toward failure, adaptation, modularity, and multifunctionality. Natural polymers, which are preferred from an environmental standpoint, including starch, polylactic acid (PLA), cellulose acetate, etc. have been widely used in the past few years. Some applications of bionanocomposites are that they act as catalysts, gas-separation membranes, contact lenses, and bioactive implant materials. Bionanocomposites are also used in the fabrication of scaffolds, implants, diagnostics and biomedical devices, and in drug-delivery systems. They can be used in gene delivery for the purpose of anticancer therapy and have application in cosmetics as well.



Preview - Green Functionalized Nanomaterials for Environmental Applications^X

nanomaterials

Chapter 18: Updates on health and safety aspects of green nanomaterials

Abstract

18.1: Introduction

18.2: Preparation of nanomaterials

18.3: Generation of green nanomaterials

18.4: Types of green nanomaterials

18.5: Health aspects

18.6: Assessing the hazard

18.7: Safety aspects

18.8: Controlling the hazard

18.9: Assessing the risk

18.10: Regulation

18.11: Conclusion and future recommendations

Updates on health and safety aspects of green nanomaterials

Manpreet Kaur, Abhishek Kumar, and Reena Gupta

Department of Biotechnology, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla, India

18.1 Introduction

The word nanotechnology refers to a widespread domain of technologies executed with numerous applications in the field of production and utilization of physical, chemical, and biological systems at the nanoscale. Nanoscale is a scale whose range varies from single atoms or molecules to around 100 nm (Rothen Rutishauser et al., 2006; Jitendra et al., 2016). Nanotechnology is contributing innovative ideas that can perhaps empower various fields of research and applications for the betterment of human health and environmental health as well. Green nanomaterials are intentionally designed and prepared nanomaterials by using green methods with expanded applications in various fields. Nanomaterials have found applications in computer parts, medicines, cosmetics, drug delivery, diagnosis methods and treatment methods of various diseases, etc. (Ueli et al., 2011).

Nanoparticles may enter crucial organs such as cerebrum and lungs, possibly causing damage to the organs or death of the individual, moreover, the dispersion of the nanoparticles into the earth may damage our environment (Yokel and Macphail, 2011). It has been seen that nanotechnology can have health, safety, and environmental advantages such as decreasing vitality utilization, release of ozone-depleting substances, contamination; remediating ecological harm; preempting sicknesses; and providing a new range of safety enhancing substances, which are self-repairing, stronger, and known to provide safety (Auffan et al., 2009). A new branch termed nanotoxicology demonstrates the possible health risks of nanomaterials. The unusually tiny measurements of green nanomaterials imply that they are considerably more directly absorbed by individuals rather than large particles.

Green nanotechnology is one of the areas of green information technology, stable with green building and green energy, which uses green engineering principles and green chemistry. As a new and vast sector, nano-science provides a bright moment to apply principles of green

editor

V.K. JOSHI

POSTHARVEST MANAGEMENT OF FRUITS AND VEGETABLES



Contents

<i>Dedication</i>	v
<i>About the Editor</i>	vii
<i>Preface</i>	ix

PART-2

Section-4 : Fermented Foods

22. Traditional Fermented Foods: Present Status and Future Strategies	463
<i>Tek Chand Bhalla, Savitri, Monika and Navdeep Thakur</i>	
23. Fermentation in Food Preservation	483
<i>S.K. Sharma, V.K. Joshi, and Deepa Saini</i>	
24. Technological Interventions in Vegetable Fermentation	499
<i>Somesh Sharma and Surabhi Sharma</i>	
25. Importance, Nutritive Value, Role, Present Status and Future Strategies in Fruit Wines in India	521
<i>V.K. Joshi and Vikas Chopra</i>	
26. Wine Preparation Technology	547
<i>V.K. Joshi</i>	
27. Utilization of Wild Fruits for Wine and Brandy Production	579
<i>V.K. Joshi and Manisha Kaushal</i>	
28. New Approaches and Future Strategies in Oenology	599
<i>An Overview</i>	
<i>V.K. Joshi and Naveen Kumar</i>	

Section-5 : Waste Utilization of Fruits and Vegetables

29. Value Added Products from Fruit and Vegetable Waste	629
<i>S.K. Sharma and Deepa Saini</i>	

Traditional Fermented Foods Present Status and Future Strategies

Tek Chand Bhalla, Savitri, Monika and Navdeep Thakur

*Department of Biotechnology, Himachal Pradesh University, Summer Hill
Shimla, Himachal Pradesh*

1. INTRODUCTION

Food fermentation is the oldest method of food preservation and have originated several million years ago. It plays an important role in ensuring the food security of millions of people around the world particularly marginalized and vulnerable groups. It is relatively efficient, low energy consuming process which needs no refrigeration or other energy intensive food preservation technologies but increases the shelf-life of foods. Fermentation ensures not only increased shelf-life and microbiological safety of food but may also make some foods more digestible and lower or eliminate the toxicity of substrate like cassava.

The food fermentation technology utilizes the ability of growth of microorganisms on various substrates for the production of a variety of fermented foods, beverages and pickles like bread, beer, cheese, *idli*, *tempeh*, *miso*, sauerkraut, fermented sausages, *etc.* Fermented foods are popular throughout the world since antiquity and in some regions these are the major component of the diet of millions of individuals. Indigenous fermented foods such as bread, cheese and wine have been prepared and consumed since ages and have occupied important place in culture, religion and tradition of people all over the world.

The significant role of fermentation is in enrichment of diet through development of diversity of flavours, aroma and textures in food substrates and therefore, adds variety to the men's diet. It is a potent tool to preserve the food by producing metabolites inhibitory to pathogenic organisms through the activities of microorganisms involved

30. Production of Value Added Products by Solid State Fermentation of Apple Pomace	643
<i>V.K. Joshi and Devender Attri</i>	
31. Technological Interventions for Extraction and Value Addition of Kernel Oils from Stone Fruit	657
<i>P.C. Sharma, Anil Gupta and Anil K. Verma</i>	
Section-6 : Production of Additives	
32. Developments in Food Additives in Fruit and Vegetable Products	669
<i>Anju K. Dhiman, Surekha Attri and Preethi Ramachandran</i>	
33. Enzymes in Fruits and Vegetables Processing	687
<i>Tek Chand Bhalla, Savitri, Sheetal and Navdeep Thakur</i>	
34. Production of Biocolours	705
<i>V.K. Joshi and Sangeeta Sharma</i>	
35. Microbial Production of Natural Flavours	719
<i>Ranjeeta Bhari and R.S. Singh</i>	
36. Biotechnological Interventions in Fruit and Vegetable Processing	765
<i>Shubhneet Kaur and Parmjit S. Panesar</i>	
37. Bioplastics in Food Packaging	777
<i>Satish Kumar, K.S. Thakur and V.K. Joshi</i>	
Section-7: Quality, Safety and Marketing of Fruit and Vegetable Products	
38. Sensory Evaluation of Food	795
<i>V.K. Joshi</i>	
39. Flavour in Sensory Science: Role, Chemistry, Interactions, Profiling, Electronic Nose and its Applications in Food	821
<i>V.K. Joshi and Mutum Preema Devi</i>	

Enzymes in Fruits and Vegetables Processing

Tek Chand Bhalla, Savitri, Sheetal and Navdeep Thakur

*Department of Biotechnology, Himachal Pradesh University
Summerhill, Shimla, Himachal Pradesh*

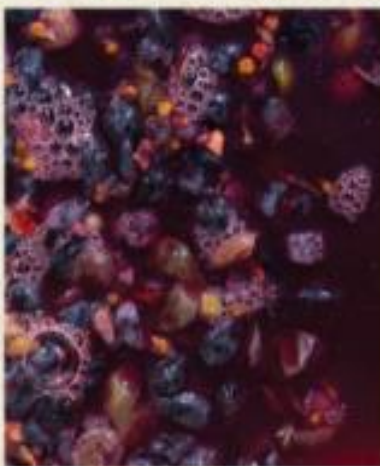
1. INTRODUCTION

Enzymes are proteins with highly specialized catalytic functions responsible for many essential biochemical reactions in microorganisms, plants, animals and human beings. Enzymes play an important role in many aspects of life since the dawn of civilization that have used enzymes for thousands of years without understanding what they were or how they work. Food processing through the use of biological agents/enzymes is historically a well-established approach. The earliest applications go back to 6000 BC or earlier, with the brewing of beer, bread baking, cheese and wine making. Whereas the first purposeful microbial oxidation dates back 2000 BC, with vinegar production. In the late 19th century, Christian Hansen reported the use of rennet for cheese making and production of bacterial amylases was started at Takamine (latter became part of Genencor). Pectinases have been used for juice clarification in the 1930s and during World War II, invertase was also employed the production of invert sugar syrup in a process that pioneered the use of immobilized enzymes in the sugar industry. Still, the large-scale application of enzymes could only be really established in the 1960s, when the traditional acid hydrolysis of starch was replaced by an approach based in the use of amylases and amyloglucosidases (glucoamylases) and glucose (xylose) isomerase. From then onward, the trend for the design and implementation of processes and production of products by the use of enzymes has steadily increased.

Food and beverages and household care industries represent the largest application areas of enzymes, followed by animal feed, biofuels, textile and other technical industries. Recently, several new developments have taken place in the application of enzymes in fruit and vegetable



CONCISE ENCYCLOPEDIA OF SCIENCE AND TECHNOLOGY OF WINE



Edited by
V. K. Joshi

Associate Editors

Matteo Bordiga
Fernanda Cosme
Laura Fariña
Ronald S. Jackson
António Manuel Jordão
Aline Lonvaud-Funel
Creina Stockley



UNIT 5 Process of Winemaking

Chapter 24 Winemaking: Fermentation Operations Machinery and Equipment.....	343
<i>Wamik Azmi, Kriti Kanwar and Alka Rani</i>	
Chapter 25 Preparation of Grape Must for Wine Production	357
<i>Devina Vaidya, Manoj Vaidya, Swati Sharma and Nilakshi Chauhan</i>	
Chapter 26 Culture of Wine Yeast and Bacteria.....	367
<i>Tek Chand Bhalla, Navdeep Thakur and Savitri Kapoor</i>	
Chapter 27 Bioreactors in Wine Fermentation	375
<i>R.S. Singh</i>	
Chapter 28 Wines and Brandies: Maturation Aspects.....	389
<i>Shashi Bhushan, Ajay Rana and Somesh Sharma</i>	
Chapter 29 Chemical and Microbiological Stabilization of Wines	403
<i>Nivedita Sharma, Bhanu Neopane and Poonam Sharma</i>	
Chapter 30 Packaging Technology of Wines.....	415
<i>S.S. Marwaha, S.K. Soni and U. Marwaha</i>	
Chapter 31 Technology of Waste Management in Wineries and Distilleries	423
<i>Chetan Joshi</i>	

UNIT 6 Technology for Production of Wine and Brandy

Chapter 32 Production of Table Wines	443
<i>Ronald S. Jackson</i>	
Chapter 33 Fortified Wines: Production Technology	455
<i>Vandana Bali, Parmjit S. Panesar, V.K. Joshi and Somesh Sharma</i>	

INDEX

Sr. No.	Name of the content	Name of Author	Year	Page No.
1.	Sharirik Shiksha me Parikshan, Mapan evm Mulyankan	Dr. SanjaySharma	2020	2-3
2.	Human Anatomy and Physiology	Dr. SanjaySharma	2020	4-5
3.	Health and Physical Education	Dr. SanjaySharma	2020	6
4.	Women warriors: The arjunas QUEENS of Indian sports	Dr. SanjaySharma	2020	7-9
5.	Sports Psychology	Dr. Hari Singh	2020	10
6.	Khel Prakshishan ke vegyanik sidhant	Dr. Hari Singh	2020	11-12



फ्रेंड्स
पाठ्यपुस्तक
श्रृंखला
MPCC - 101

डॉ. संजय शर्मा

शारीरिक क्षमता, परीक्षण, मापन और मूल्यांकन

एन.सी.टी.ई द्वारा निर्धारित एम.पी.एड. के लिए संशोधित पाठ्यक्रम



शारीरिक शिक्षा में परीक्षण, मापन और मूल्यांकन
डॉ. संजय शर्मा

ISBN - 978-93-90649-02-0

© 2021 फ्रेंडज पब्लिकेशनज (इंडिया)
प्रथम संस्करण

इस पुस्तक के किसी भी भाग का मुद्रण, अथवा प्रसारण
प्रकाशक व लेखक की लिखित आज्ञा के बिना वर्जित है।

प्रकाशक

फ्रेंडज पब्लिकेशनज (इंडिया)

101-103, 4787/23, अन्सारी रोड,

दरियागंज, नई दिल्ली-110002

011-23246222, 23246333, 09811197091

frienpub@yahoo.com

friendpublicationsindia@gmail.com

कवर चित्रण - कामिनी बिजोरिया, दरियागंज, दिल्ली - 110002

लेजर टाइपसेटिंग

श्री साई प्रिंटोग्राफर्स, दरियागंज, दिल्ली - 110002

मुद्रक

आर. के. प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

भारत में प्रकाशित

मूल्य - 595/-

पृष्ठ सं. 162

पुस्तक आकार - 5.5x8.5
कागज - 80gsm

एन.सी.टी.ई. द्वारा निर्धारित एम.पी.एड. के लिए संशोधित
पाठ्यक्रम

विषय कोड - (MPEC 101)

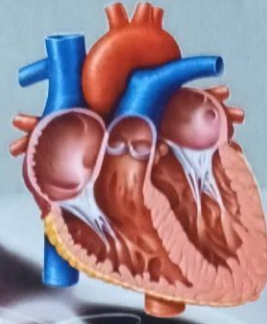
यूनिट - I : परिचय (Introduction)

- परीक्षण, मापन व मूल्यांकन का अर्थ व परिभाषा
(Meaning and Definition of Test, Measurement and Evaluation)
- परीक्षण व मूल्यांकन की आवश्यकता व महत्त्व
(Need and Importance of Test, Measurement and Evaluation)
- परीक्षण के चयन के लिए मानदंड-वैज्ञानिक प्रामाणिकता, प्रशासनिक विचार, शैक्षिक प्रयोग
(Criteria for Test Selection-Scientific Authenticity, Administrative Considerations and Educational Applications)
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण या प्रामाणिकता : वैधता, वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता, मानक, स्तरीय मानक
(Scientific Authenticity : Validity, Reliability, Objectivity, Norms, Duplicate Forms and Standard Directions)

यूनिट - II : शारीरिक क्षमता परीक्षण (Physical Fitness Test)

- शारीरिक क्षमता : अर्थ व परिभाषा
(Physical Fitness : Meaning and Definition)

Kapila's



मानव शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान

HUMAN ANATOMY AND PHYSIOLOGY

DR. SANJAY SHARMA

DR. SUNIL SEN

KAPILA PUBLICATIONS

JALANDHAR - DELHI - ROHTAK

प्रकाशक :

कपिला पब्लिकेशन्स

272-ई.डी. डन मुहल्ला, जालन्धर

मोबाइल : 6283771716, 9316608710,
9464188710, 9465500710, 9464500710

© कपिला पब्लिकेशन्स

Every effort has been made to avoid errors & omissions in this publication. In spite of this, errors may have crept in. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to our notice which shall be taken care of in the next edition. It is notified that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of action to any one, of any kind, in any manner, therefrom. It is suggested that to avoid any doubt the reader should cross-check with other authentic works on the subject. For binding mistake, misprints or for missing pages, etc., the publisher's liability is limited to replacement or repair within six months of the purchase by similar edition.

ISBN - 978-81-947485-8-8

Price : ₹121.00

लेजर टाइप सैटिंग : स्टार प्लस कम्प्यूटर्ज, जालन्धर शहर

मुद्रक : प्रीमियम प्रिंटर्ज, जालन्धर शहर

SYLLABUS

Year -II

THEORY COURSE

COURSE CODE : PED201TH

(DSC-IC & DSC-IIC)

Credits: 4

(L=44+T=16+P=0)=60

Marks : (ET E=50+CCA=30)=80

HUMAN ANATOMY AND PHYSIOLOGY

Unit-I

1. Basic Concept of Anatomy and Physiology.
2. Muscular System : Types of Muscles, Structure and Functions of Muscles, Types of Muscular Contraction-Isotonic, Isometric and Isokinetic Contractions, Effects of Exercises and Training on Muscular System.
3. Skeletal System : Introduction, Functions and Importance of Skeletal System, Types of Bones-Skull, Upper Limbs, Lower Limbs and Trunk, Effects of Exercises and Training on Skeletal System.

Unit-II

1. Respiratory System : Introduction, Structure and Function, Types of Respiration, Organs of Respiration, Mechanism of Respiration, Respiratory Capacities and Volumes, Measurement of Respiratory Capacities and Volumes, Effects of Exercises and Training on Respiratory System.
2. Circulatory System : Structure of the Heart, Chambers of Heart, Arteries, Veins and Capillaries, Systematic and Pulmonary Circulation, Functions of Heart, Cardiac Output, Heart Rate, Stroke Volume, Blood Volume, Blood Flow, Athlete's Heart, Effects of exercises and Training on Circulatory System

Unit-III

1. Digestive System : Introduction, Importance of Digestion, Functions and Process of Digestion, Organs of Digestive system, Mechanism of Digestive system, Effects of Exercises and Training on Digestive System
2. Nervous System : Structure and Function of Brain and Spinal Cord, Autonomous Nervous System, Peripheral Nervous System,

ABOUT THE AUTHOR'S



Dr. Manohar Lal is currently working as a Professor and Coordinator, Department of Physical Education, G.H.G Khalsa College Gurusar Sadhar (Ludhiana), Punjab (India). He has received his doctoral degree (Ph.D) in Physical Education in 2010 from the Himachal Pradesh University, Shimla. He has subject specialization as Research Methodology and Sports Biomechanics, and sports specialization are Athletics and Weight lifting. He has been awarded University Gold medal for his top position in the Master of Arts in Physical Education in 2004. He has supervised research work of Physical Education students for their doctoral and master's degrees; has evaluated research theses of Ph.D. & M. Phil in Physical Education. His research papers have been published in various international and national reputed journals. He has the credits to present research papers in different national and international conferences and has attended workshops and faculty development programmes in different areas of Physical Education and Research Methodology. He has been three times state Gold medallist in Weight Lifting and participated two times in Sr. National Weight Lifting championship and three times in All India Inter-university championship. He was also declared the best Weight Lifters of Himachal Pradesh for the session 2003-2004. He has been rendering his teaching services in the Physical Education domain in different Universities and Colleges in India for the past fifteen years.



Dr. Sanjay is at present serving as an Assistant Professor in the Department of Physical Education, Himachal Pradesh University, Shimla and is native of small village Khaniyara, a suburb of Dharamshala town, situated in the foothills of Dhauladhar mountains, in Kangra district of Himachal Pradesh. Prior to this appointment he has served as PGT (Physical Education) at MRA DAV Public School, Solan (H.P.) and as PET at Jawahar Navodaya Vidyalaya, Pandoh (H.P.). After Graduating in BSc (Medical) from Prestigious Government Post Graduate College, Dharamshala, he accomplished his M.A. (Physical Education), MPhil (Physical Education) and PhD in Physical Education from Department of Physical Education, Himachal Pradesh University, Shimla. He is former national level athlete having represented Himachal Pradesh at Nationals in the event of discus throw. Moreover, he has also been the member of state Handball and Basketball teams. A versatile personality, Dr. Sharma has an expertise in the field of Human Anatomy, Exercise Physiology, Sports Medicine and Sports Biomechanics. He has successfully guided 05 PhD and more than 30 MPhil scholars. He has to his credit over 40 research publications published in a range of International and National research journals. He has by now, authored 05 books in the subject of Human Anatomy, Exercise Physiology and Sports Medicine. When he's not writing or researching, he can be found active in the social work. Currently he lives in Shimla with his wife and two sons.



Dr. Mehak Mangi

Dr. Mahak (Ph.D) presently working as a lecturer, Department of Physical Education, GDC Kathua, Jammu and Kashmir (India). Two scales of psychological variable have been published in NPC Agra. 8 research papers have been published at Scopus referred journal and UGC referred Journal.



Khel Sahitya Kendra

The Largest Stockist & Publisher of Sports & Physical Education Books in India

7/26, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002

Ph. (M) 9811088729 (O) 011-42564726, 47090343, 43551324

E-mail : khelsahitya@rediffmail.com, vivekthani@gmail.com

Website: www.khelsahitya.com, www.kskpublisher.com

Rs. 800/-
978-81-90461-20-2

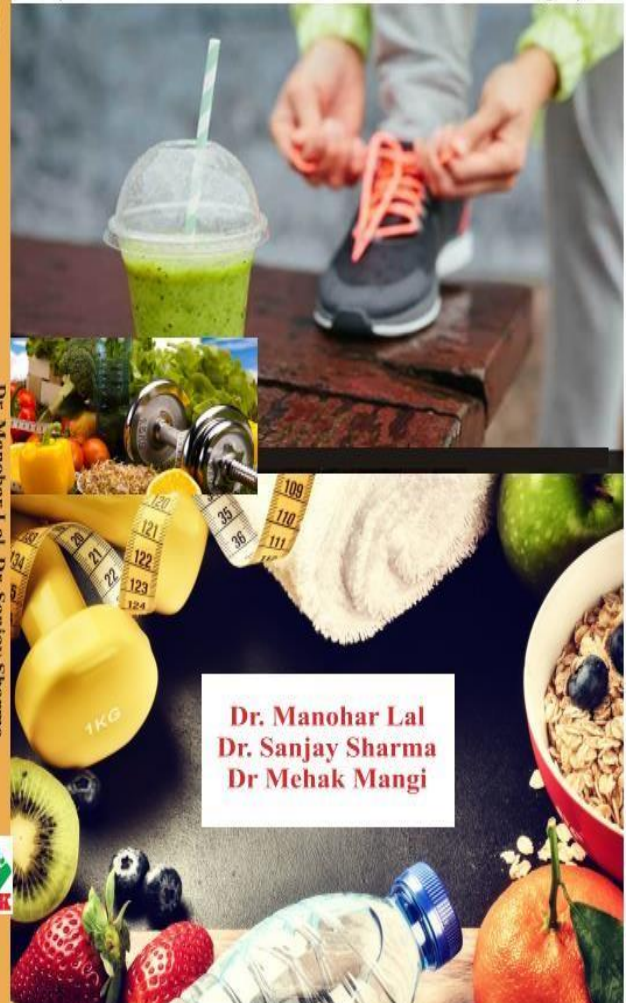


HEALTH AND PHYSICAL EDUCATION

Dr. Manohar Lal, Dr. Sanjay Sharma
Dr. Mehak Mangi

HEALTH AND PHYSICAL EDUCATION

(Text Book for B. Ed Students of Universities and Colleges)



**Dr. Manohar Lal
Dr. Sanjay Sharma
Dr. Mehak Mangi**



Women Warriors: The Arjuna's

QUEENS

of Indian Sports

Editors

Yogesh Chander
Shalini Attri

Published by:



KHEL SAHITYA KENDRA

7/26, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi - 110 002.

Phones 011-42564726, 47090343, 43551324, (M) 9811088729
E-mail: khelsahitya@rediffmail.com, vivekthani@gmail.com
Website: www.khelsahitya.com, www.kskpublisher.com

© 2020 – Editors

ISBN - 978-93-90461-26-4

PRINTED IN INDIA 2020

No part of this publication may be re-produced, stored in a retrieval system or published/distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, scanning, web or otherwise without the written permission of the Publisher. Publisher has obtained all the information in this book from the sources believed to be reliable and true. However, Publisher or its editors or illustrators don't take any responsibility for the absolute accuracy of any information published, and the damages or loss suffered thereupon.

Typeset by:
K.S.K. DTP UNIT, DELHI

Printed at:
ASIAN OFFSET, DELHI

A gl
duly invite d
come to the
sports has be
men. Sports
opportunity
and politica
spheres of o
century. Ma
the notion o
resilient. Sp
dichotomy
women to v
less desirab
their image
time when
Later, they
demograph
women wo
Feminists a

Tod
strengtheni
esteem spo
wholesome
make bette
further inc
mutual unc
world's fir
at Paris
privatizatio

CHAPTER-5

Suman Rawat Mehta: Symbol of Perseverance

Dr. Sanjay Sharma

Suman Rawat, the ‘**Udhan Pari**’ of Himachal Pradesh, is the epitome of hard work and determination, who excelled in the field of sports and achieved greater



heights, right from school level upto Asian Games. She became a champion after surpassing all the hurdles of life, usually faced by a native of Hilly state. An early riser, even in the difficult terrain and harsh climatic conditions of Shimla, Suman never missed her practice, whether it was a snowy day or a 4:00 am chilled twilight. Back in the 70's, our society never allowed women to

go out and especially at such odd hours, but Suman was unaware of such things and her parents strongly stood beside her. With less facilities and no specialised coaching, the roads of Shimla were her track and field to shed the sweat. She was becoming a tough competitor for fellow participants of different states who never wanted her to outshine them.

Assistant Professor, HPU Summer Hills, Shimla

ABOUT THE AUTHORS

डॉ. हरी सिंह
 अध्यक्ष, भारतीय खेल मनोविज्ञान संस्थान,
 भारतीय खेल मनोविज्ञान संस्थान, दिल्ली

डॉ. हरी सिंह एक विद्वान और अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने खेल मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक वर्षों से कार्य किया है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं और अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है।

डॉ. प्रोफेसर जे. एन. शर्मा
 अध्यक्ष, भारतीय खेल मनोविज्ञान संस्थान,
 भारतीय खेल मनोविज्ञान संस्थान, दिल्ली

डॉ. प्रोफेसर जे. एन. शर्मा एक विद्वान और अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने खेल मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक वर्षों से कार्य किया है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं और अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है।

Khel Sahitya Kendra
 The Largest Stockist & Publisher of Sports & Physical Education Books
 7726 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002
 Ph: 011-42564726, 47990543, 43551324 (M) 9811088729
 E-mail: khelsahitya1@gmail.com, khelsthan@gmail.com
 Website: www.khelsahitya.com, www.kspublishers.com

Rs. 1000
 978-93-90461-24-0

खेल मनोविज्ञान

डॉ. हरी सिंह प्रोफेसर जे. एन. शर्मा

खेल मनोविज्ञान

SPORT PSYCHOLOGY

TEAM SELF GOALS CARE TEAM TRUTH

978-93-90461-24-0

एन.सी.टी.ई. द्वारा निर्धारित एम.पी.एड. के लिए संशोधित पाठ्यक्रम

खेल प्रशिक्षण के वैज्ञानिक सिद्धांत

विषय कोड - MPCC - 301

डॉ. हरि सिंह

सहायक आचार्य, शारीरिक शिक्षा विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला (हि०प्र०)



प्रेन्डज़ पब्लिकेशनज़ (इंडिया)

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान पुस्तकों के प्रकाशक
नई दिल्ली-110002

Human Rights



Issues and Challenges

Forwarded by

Hon'ble Mr. Justice C B Barowalia
Judge, High Court of Himachal Pradesh

Prof. Sanjay Sindhu | Dr. Kusum Chauhan



Human Rights : *Issues and Challenges*

Peer Reviewed

Editors

**Prof (Dr.) Sanjay Sindhu
Dr. Kusum Chauhan**



University Book House (P) Ltd.

CHANDER BHUSAN BAROWALIA



JUDGE
HIGH COURT OF HIMACHAL PRADESH
SHIMLA-171001

FORWARDING REMARKS

Animal behavior means "survival of the fittest" but the human behavior is opposite to it, that is, supporting the weakest and giving the weakest a dignified life. This concept exists from the time of existence of humanity. In times the values regulating it were codified and now a great effort in this regard is made through this book titled "Human Rights: Issues and Perspective" by the Himachal Pradesh University Institute of Legal Studies. Human Rights are the rights which differentiate us from other beings as we are beings with conscience. Such conscience makes us recognize the fundamental ground rights that are inbuilt and cardinal for proper existence.

Human Rights are dynamic, as they should be, evolving from the Cyrus Cylinder of 539 B.C. and were first formally discussed in the Magna Carta of 1215. Later it was reiterated with improvements through the Universal Declaration of Human Rights, 1948. Although in India, these rights have been seen long since the era of सत्य युग "Satya-yuga".

In India, Human Rights have been enshrined in the Constitution of India and from there, they devolve through The Protection of Human Rights Act, 1993. Human Rights revolve around life, liberty, equality and dignity as embodied under this Act.

However, recently we see that the need of these rights is bubbling in the boiling water of atrocities being committed on many. There is awareness for these rights is a must not only in rural but in urban areas as well and a strict approach towards the implementation of these is a want for curtailing the evil elements of our society. These rights imbibe in themselves along with wellness for oneself an imbibed in themselves for others. "Refugeeism" will become

Published by

University Book House (P) Ltd.
79, Chaura Rasta, Jaipur-302 003
Ph. : 0141-2311466, 2313382, 4013697
email : uni_bookhouse@yahoo.com
Website : universitybookhouse.in

ISBN : 978-81-947421-3-5

First Edition : 2021

Laser Typesetting & Printing
Ultimate Computers, Jaipur & Trident Enterprises, Delhi

All right reserved. No part of this work may be copied, adapted, abridged or translated, stored in any retrieval system, computer system, photographic or other system or transmitted in any form by any means whether electronic, mechanical, digital, optical, photographic or otherwise without prior written permission of the copyright holders. Alls University Book House (P) Ltd., Jaipur.

This book is sold subject to the condition that it, or any part of it, shall not by way of trade or otherwise, be sold, re-sold, displaying, advertised, or otherwise circulated, without the publisher's prior written consent, in any form of binding, cover or title other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser(s). Any breach of any of these rights or conditions will entail civil and criminal action without further notice.

While every effort has been made to avoid any mistake or omission, this publication is being sold on the condition and understanding that neither the editors nor the publishers or printers would be liable in any manner to any person by reason of any mistake or omission in this publication or for any action taken or omitted to be taken on advice rendered or accepted on the basis of this work.

Rights of Publication reserved with the Publishers.

All ideas and opinions pertaining to Papers/articles are purely creation of contributor's mind and editors, publishers or printers doesn't owe any liability and copyrights reserve with the contributor of respective papers/articles.

We wish to express our deep sense of gratitude and sincere thanks to Prof (Dr.) Sunil Deshta, Former Dean and Chairman, Faculty of Law, Himachal Pradesh University, Shimla for his constructive advices and support while completing the work. We gratefully acknowledge Prof.(Dr.) Raghuvinder Singh, Present Dean and Chairman, Faculty of Law, H.P. University, for his insight and constant encouragement for academic pursuit as well as all the faculty members for their support.

Collective and individual acknowledgements are also owed to many friends, teachers, colleagues and non teaching staff members of H.P. University, Shimla and H P University Institute of Legal Studies, Ava-Lodge, Shimla for their motivation and support.

Last but not the least, we shall be failing in our duty if we don't acknowledge sincerely the support and concern to Shri Aashish Jain of M/s University Book House, who unhesitatingly agree to publish this Book.

Prof (Dr.) Sanjay Sindhu
Dr. Kusum Chauthan

Contents

Preface.....	III
1. Cultural Genocide and Minority Rights Bhumika Nanda.....	1
2. Human Rights Protection under Indian Legal System Ranjana Dubey.....	9
3. Legal Status of Refugees and Internally Displaced Persons in Jammu and Kashmir and their Human Rights Ashwani Kumar.....	16
4. Fighting Corruption through Lok Pal Bill Lekh Raj and Karuna Machhan.....	22
5. Mob Lynching : The Blatant Violation of Human Rights Ruchi Gupta.....	30
6. International Response to the Protection of Human Rights Ritika Rana.....	39
7. Human Rights of People living with HIV/AIDS in India with Special Reference to HIV/AIDS (Prevention and Control) Act 2017 Renu Pal Sood.....	51
8. A Relationship Between Environment, Public Health and Human Rights : An Overview Jyoti Jain and Rashmi Chaudhary.....	58
9. Human Rights and Mental Illness: Are We Listening to Them Alanksha Sood.....	64
10. Human Rights and Good Governance in Present Indian Scenario Meera and Sharda.....	68
11. The Violation of Women Human Rights Bhawna Verma.....	82
12. The Neo-Breed of Manual Scavengers : A Case Study of Municipal Corporation Amritsar with Special Reference to Sewage Workers on Contract Basis Vishav.....	88
13. Child Labour : Child Sexual Abuse Vishav.....	90

Dr. Ashwani Kumar,
Assistant Professor, Department of Sociology, HPU,
Shimla

In the State of Jammu and Kashmir (J&K), we find various categories of displaced persons, refugees and migrants such as displaced persons of Pakistan Occupied Jammu and Kashmir (PoJK) of 1947, West Pakistani Refugees (WPRs) of 1947, Chamb displaced persons of 1965 & 1971, Kashmiri migrants of 1989-90, terrorism affected persons and border migrants. State government has denied the 'refugee' status to PoJK displaced people on the ground that Government of India considers PoJK as an 'integral part of India'. On the other hand, WPRs are termed as 'Refugees' because they are legally citizens of Pakistan. West Pakistanian Refugees are the citizens of India but not permanent residents of Jammu and Kashmir although they are living in J&K since 1947. It is only because of Article 35 (A) that enables the State Assembly to define 'permanent residents' and to give them special rights and privileges, as well as to restrict the rights and privileges of all citizens of India who do not fit into this definition of 'permanent resident'. In the present paper, an attempt will be made to understand the legal status of refugees and internally displaced persons in J&K who are mainly settled in Jammu region and highlight their sufferings due to violation of their human rights. Further, the present paper will make an effort to show how Article 35 (A) is affecting the lives of WPRs in J&K who are till now not a permanent resident of J&K and are being denied the basic human rights.

In the State of Jammu and Kashmir, Jammu region has been named as "*Land for Displaced People and Refugees*". In Jammu, we find various categories of displaced persons, refugees and migrants such as Displaced Persons of Pakistan Occupied Jammu, Kashmir (PoK) of 1947, West Pakistani Refugees (1947), Chamb Displaced Persons of 1965 and 1971, Kashmiri migrants of 1989-90 and terrorism affected persons.

Refugee is defined as under the 'United Nations Convention Relating to the Status of Refugees of 1951' (Article 1A) as a person who "owing to a well-founded fear of being persecuted for reasons of race, religion, nationality, membership of a particular social group, or political opinion, is outside the country of his nationality, and is unable to or, owing to such fear, is unwilling to avail himself of the protection of that country"; *Internally Displaced Persons* are those who are displaced within their own country. These displaced persons do not cross the boundary of their country.

These displaced persons do not cross the boundary of their country.

In the following sections, we will discuss the legal status of refugees and internally

Eliebeth Mohammad Abdullah, the then Prime Minister of J&K in 1950 named the affected local people of J&K as "*Displaced Persons*" (DPs) vide order No. 1476-C of 1950 dated 16.12.1950 while those who had left Jammu & Kashmir and gone to Pakistan (Yast Pungath) on their own were termed as migrants.

Translating Old Seedlings into New Seedlings:

During 1911 he travelled to different States of India as they found better living conditions in the urban centres at Delhi, Patna, Calcutta, Jammu, Dehradun, Ganga Nagar (Rajasthan) and Kottayam (Kerala) and even in *Basities* at Udhampur, Nowshera, Rajouri and Srinagar (Jammu).

1944-1945 The hospitalized to two distinct categories, the urban and the rural. The former were initially educated members of upper castes, whether Hindus or Sikhs. They were mostly assigned to pretty trade and professions. They usually joined or started their former occupations in new surroundings, after a gap of few months or a year.

But the current population of POJK DPs who had no option but to seek admission to relief camps and up jointly by the central and the State governments. They mostly lived in Pithoragarh (Uttarakhand) and Yel camp (Chimchal Pradesh) in distress, on govt. grant. They had the bitter option but to avail of the relief in those camps. Later on they were shifted to different districts of Jammu province. Out of 12,000,00 POJK DPs, 40 per cent have been resettling a miserable life for the past three generations in Jammu, Kathua, Rajouri, Poonch and Dittahangul districts of Jammu and Kashmir (J&K).

Approximately 1,000,000 refugees from the total population are settled in 34 camps in Jammu province, especially in the Pura and Jammu areas. In Jammu district these refugees are living in areas like Jogiama camp, Bhor camp, Simbal camp, Gadgarh, Hahshi Hagar, Mehool Colony, Gajral, Karan Nagar, Keerian, Gangyal, Badyal, Hahnamat, and H. S. Pura.

THE FINEST KIND OF POLICE OFFICER

The fourth highly influential by the State Government to justify denial of 'refugee' status to POJK is that three Government of India considers POJK as an 'integral part of India'. These arguments from POJK cannot be treated as 'refugees' of country's Partition. Further, referring to their 'non-refugee' status the State Government has adopted a policy of denying them any compensation in settlement of claims for their properties they left behind in their home areas and villages of POJK in 1947. Interestingly, the Central Government has also the 'non-refugee' status of POJK out of the purview of 1954 Act. It is clear that this aspect the issue of providing such compensation for the POJK is not a matter of dispute. What was that Parliament left behind on the ground

[illegible]

...the ...

...and immovable property left

INDEX

3.4.6 Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the last five years (15)

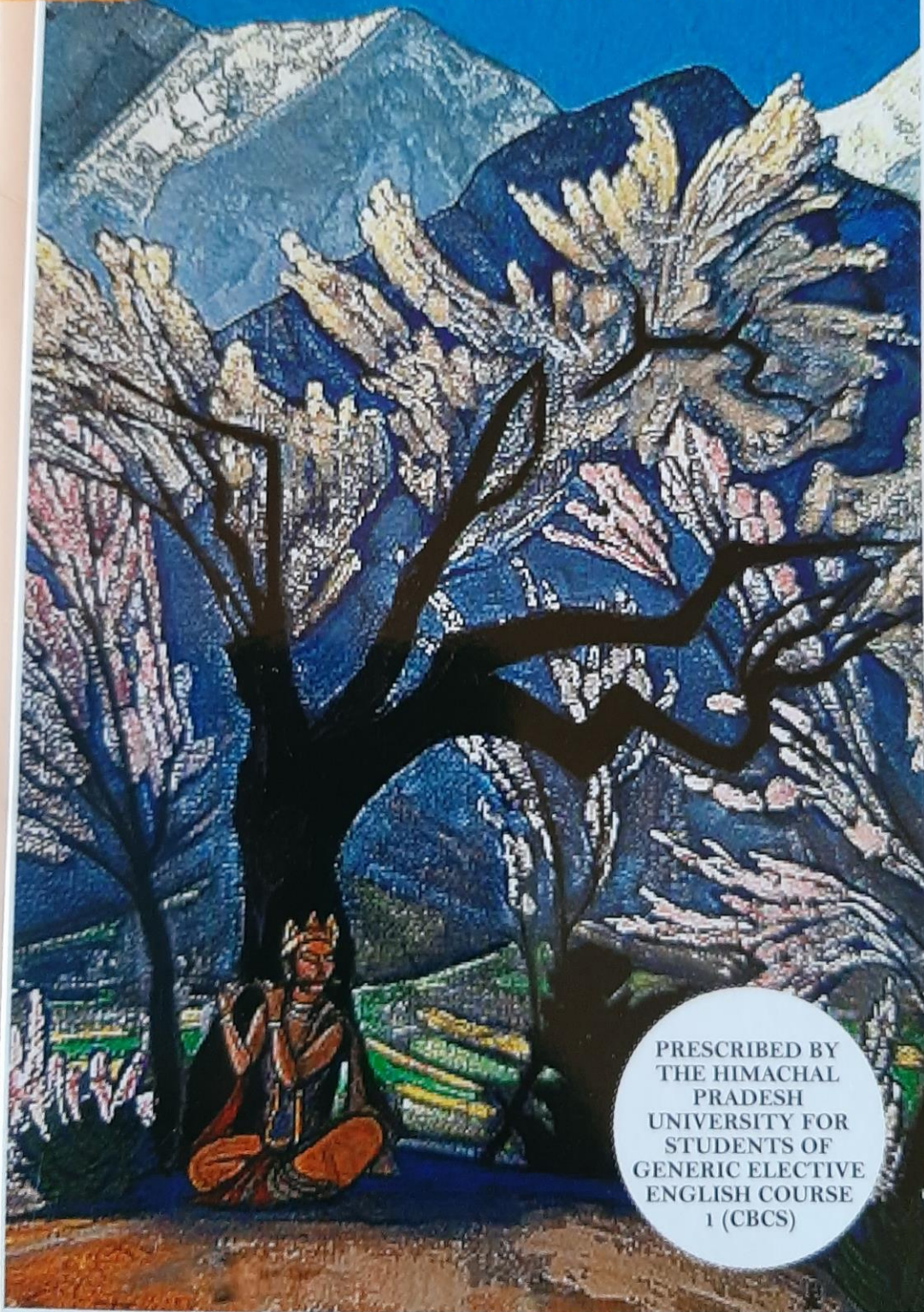
3.4.6.1: Total number of books and chapters in edited volumes / books published, and papers in national/ international conference-proceedings year wise during the last five year

S.No	Title of the Book	Page number
1	<i>Leaves in the Sky</i> (Textbook for GE Course, BA-3, HPU)	2-3
2	Economics of Public Enterprises	4-6
3	Innovative Approaches for Rural Transformation	7-8
4	<i>S R Harnot's Cats Talk</i> . Co- Edited.	9-10
5	<i>Premchand: The Complete Short Stories</i> , Vol. 2, Ed. M Asaduddin Also in <i>Premchand: Stories about Caste</i> . Ed. M Asaduddin	11-13
6	Contemporary Issues in Management Edited by Dr. Luxmi Malodia, Dr. Purva Kansal	14-15
7	Professionalism in Education IPDA	16-19
8	Women Empowerment A New Perspective Edited by Dr. Bhawana Bhardwaj & Dr. Vinod Negi.	20-21
9	<i>Communication Skills</i> Co- Authored	22
10	<i>Cinema and society</i>	23-26
11	<i>Critical voice on Toni Morrison</i>	27-29

PRIMUS
TEXTUS

LEAVES IN THE SKY

Meenakshi F. Paul



PRESCRIBED BY
THE HIMACHAL
PRADESH
UNIVERSITY FOR
STUDENTS OF
GENERIC ELECTIVE
ENGLISH COURSE
1 (CBCS)

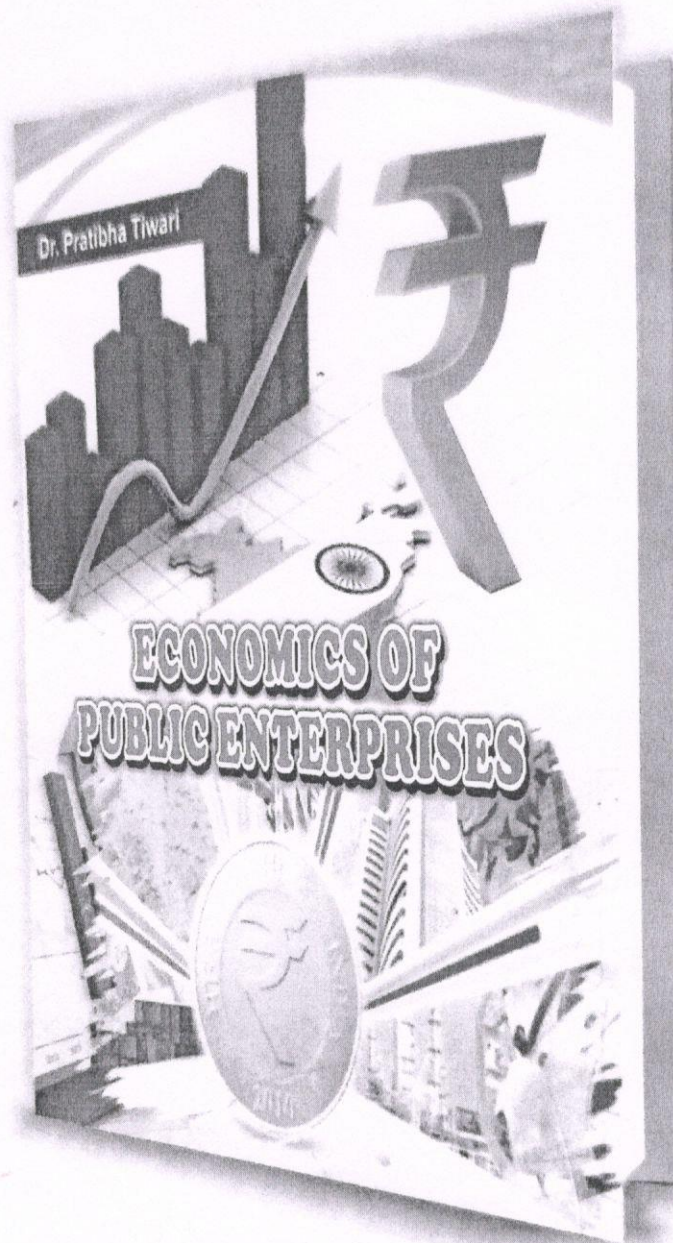
CONTENTS

Introduction	1
Cats Talk.....	9
<i>Billiyan Batiyati Hain</i> Translated by R. K. Shukla and Manjari Tiwari	
The Twenty-Foot Bapu Ji	28
<i>Bees Foot Ke Bapu Ji</i> Translated by Meenakshi F. Paul and Khem Raj Sharma	
The Reddening Tree	46
<i>Lal Hota Darakht</i> Translated by Meenakshi F. Paul	
Daarosh.....	60
<i>Daarosh</i> Translated by Khem Raj Sharma	
The Saddle	77
<i>Jinkathi</i> Translated by R. K. Shukla	
m.com.....	100
<i>Em.Dot.Com.</i> Translated by Meenakshi F. Paul	
Ma Reads.....	106
<i>Ma Padhti Hai</i> Translated by Ira Raja	
Savarna Devta, Dalit Devta	111
<i>Savarna Devta, Dalit Devta</i> Translated by R. K. Shukla and Manjari Tiwari	

Dr. Pratibha Tiwari

ECONOMICS OF PUBLIC ENTERPRISES

Pratibha Tiwari
Principal
HPU Department of Evening Education
The Mall, Shimla-1



ANUSANDHAN PRAKASHAN
KANPUR - 14

127/34 'S' Juhi Gaushala, Kanpur - 208014
Phone : (0512) 2641594, 08765172704
e-mail : sales@anusandhanprakashan.com
Visit us : www.anusandhanprakashan.com



MD. Javed
Principal
HPU Department of Evening
The Mall, Shri Mata-1

- ☐ **Publisher :**
ANUSANDHAN PRAKASHAN
127/34 'S' Juhi Gaushala,
Kanpur - 208014
Phone : (0512) 2641594, 08765172704

40/115-116, Hospital Road,
Parade, Kanpur-208001
e-mail : sales@anusandhanprakashan.com
Visit us : www.anusandhanprakashan.com

- ☐ **First Edition : 2020**

- ☐ **Price : 450/- Rs.**

ISBN- 978-81-944076-2-1

All rights reserved. Any part including title, design, diagram or matter of this book in any form may not be reproduced without prior written permission of the publisher and author.

Although every effort has been made to avoid mistakes and make the book error free, however, there may be possibility of some mistakes being left due to invisibility. This book is released with the understanding that neither author nor publisher will be responsible for such mistakes.

In case of any difficulty, doubt or confusion the author may be consulted at the following address Anusandhan Prakashan, 127/34 'S' Block, Juhi Gaushala, Kanpur-208014.

Published by **Subodh Mishra Prop. Anusandhan Prakashan,**
127/34, 'S' Juhi Gaushala Kanpur-14, Phone : (0512) 2641594,
Printed by: **Shri Puja Printers, Kanpur**

JP
Prave

Principal
HPU Department of Evening studies
The Mall, Shimla-1



SOUVENIER : POST COVID-19 INNOVATIVE APPROACHES FOR RURAL TRANSFORMATION

Faculty of Engineering & Technology

Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya Chitrakoot, Satna [MP]-485334

Dated : 16/05/2020



List of Participant

S.No	NAME OF PARTICIPANTS	TOPIC
1.	Gouraw Beohar Dr Anjaney Pandey	Analysis of Improving Productivity and Quality in Rural Enterprises
2.	Dr. Jitendra Singh Bhadauria	A Study on Current Problems of Villagers Due to COVID 19 Pandemic
3.	Alok Kumar Srivastava	Covid 19 Pandemic : An Overview
4.	Vineet	Post COVID-19: Opportunities for Villages
5.	Dr. Vipin Pandey	"Role of Information as An Infrastructure among Rural Consumers: A Special Reference To Kanpur (U. P.)"
6.	Mr. Alok Kumar	Impact Of Lockdown on Socio- Economic In Covid-19
7.	Dr Shobha Misra	Rural Entrepreneurship Activities Hand Crafts
8.	Vinay Kumar Gautam & M.K. Awasthi	Optimization of Cropping Pattern For Maximizing Farm Net Profits Under Water and Land Constraints for Tribal Area of Jabalpur District
9.	Dr. Sujata Acharya	Post Covid-19 : Innovative Approaches for Rural Transformation
10.	Sandeep Yadav	Improving Health and Sanitation Services for Rural Masses, Doubling Farmers Income Through Cost Effective Technologies
11.	Dr. Alok Kumar Sahu Dr. Subhash Singh Parihar	Emerging New Challenges in Rural Development Area: Corona
12.	Dr.Tarun Shrivastava	Importance Of Social Distancing
13.	Punit Kumar Agarwal	Challenges Of Agriculture and Food Supply Chain In India: Thehavoc Of COVID-19
14.	Prakash Bari	Post Covid-19:-Innovative Approaches for Rural Transformation''
15.	Sunil Kumar et. al.	The Impact Of Social Media
16.	Rishi Kumar Singh et al	Future In Adopted of Organic Farming Practices In India
17.	Vyomkesh Pandey	Innovation For Inclusive Rural Transformation: The Role of The State
18.	Er. Rajesh Kumar Sinha Prof Vandana Sinha	Sustainable Development Model Based On Humanitarian Economy Towards Rural Transformation
19.	Laxmi et al	To Improve Productivity Through Fish Farming Along With Horticulture Crops
20.	Ankita Pandey et al	Impact of Trainings On Dairy Productivity
21.	Akanchha Pandey et al	Effective Role Of Women In Agriculture In Distt. Hoshangabad (Mp)
22.	Dr. Ankita S. Tekade	India's Potential of Recovery in Rural Economy in Post Covid Era
23.	Dr. Pushpa Yadav & Dr. Punit Kumar Agarwal	Opportunities And Challenges of Post COVID-19 Period
24.	Sandeep Yadav	Improving Health And Sanitation Services for Rural Masses, Doubling Farmers Income Through Cost Effective Technologies



S. R. HARNOT'S

Cats Talk



Edited by
Khem Raj Sharma and Meenakshi F. Paul

S. R. Harnot's *Cats Talk*

Edited by Khem Raj Sharma and Meenakshi F. Paul

This book first published 2018

Cambridge Scholars Publishing

Lady Stephenson Library, Newcastle upon Tyne, NE6 2PA, UK

British Library Cataloguing in Publication Data

A catalogue record for this book is available from the British Library

Copyright © 2018 by S. R. Harnot, Khem Raj Sharma, Meenakshi F. Paul
and contributors

All rights for this book reserved. No part of this book may be reproduced,
stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means,
electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without
the prior permission of the copyright owner.

ISBN (10): 1-5275-1357-2

ISBN (13): 978-1-5275-1357-0



Edited by
M. ASADUDDIN

PREMCHAND

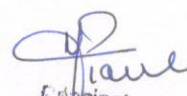
the complete short stories

VOLUME 2

Cyflaw

Principal
HPU Department of Evening Studies
The Mall, Shimla-1

20. A Positive Change	
21. A Battle of Ideals	
22. A Philosopher's Love	
23. The Bridal Sari	
24. Witchcraft	
25. Victory of the Defeated	1
26. Defending One's Liberty	1
27. Cobra Worship	2
28. Turf War	2
29. Hidden Wealth	2
30. A Dhobi's Honour	23
31. Hoodwinked	24
32. Reincarnation	25
33. Test	25
34. A Loyal Subject	264
35. End of Enmity	268
36. The Fool	282
37. Compulsion	290
38. A Home for an Orphan	297
39. Purification	304
40. Autobiography	321
41. The Ornaments	327
42. Revenge	335
43. Trickery	352
44. Satyagraha	362
45. The Roaming Monkey	367
46. The Prophet's Justice	381
47. Sudden Downfall	390
48. Road to Salvation	399
49. Money for Deliverance	407
50. Forgiveness	418
✓ 51. The Lashes of Good Fortune	428
	435



Principal
HPC Department of Evening Studies
The Mall, Shimla-1

The Lashes of Good Fortune

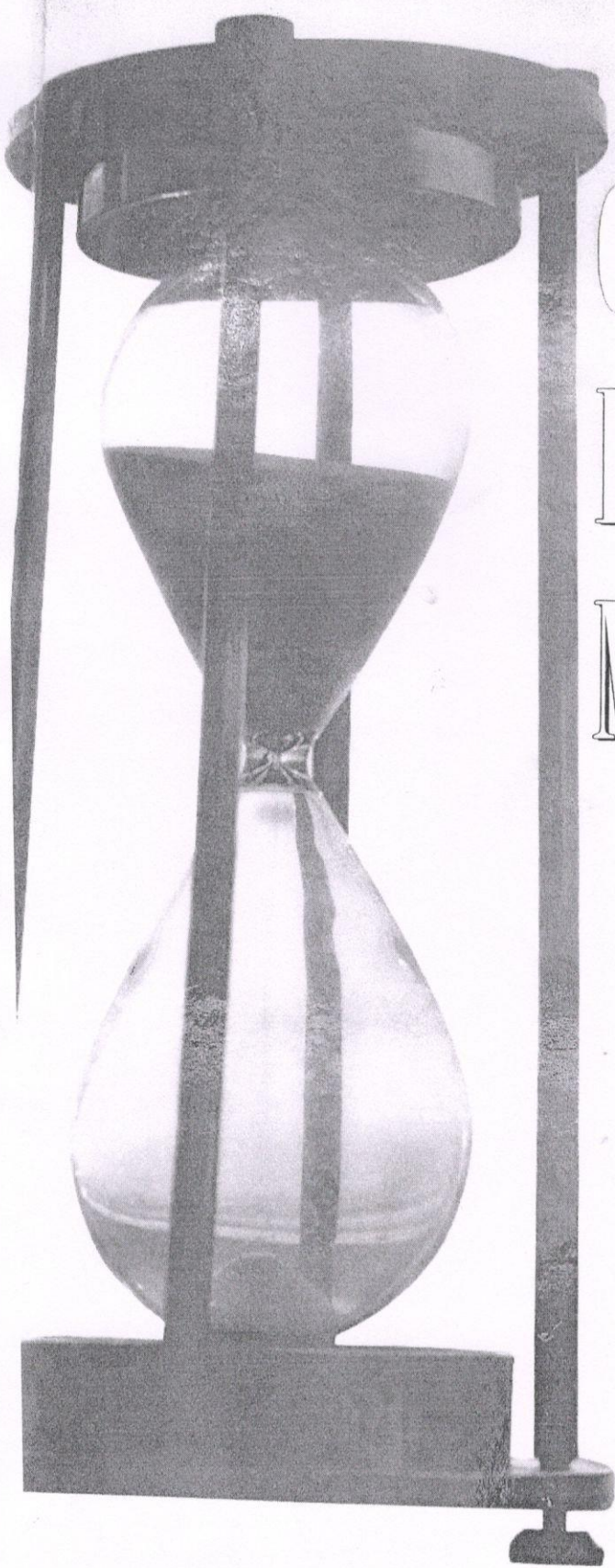
1

Boys, whether rich or poor, are known to be particularly cheerful. Their playfulness does not depend on wealth or familial circumstances. Nathua's parents were dead and the orphaned boy was usually found hanging about Rai Bholanath's gates. Rai Sahib was a compassionate man and, occasionally, he would give Nathua the odd paisa. Enough food was left over in Rai Sahib's kitchen to fill the stomachs of many orphans like him. Now and then, Nathua was also handed old clothes belonging to the boys in the family. So, even though he was an orphan, Nathua was not unhappy. Rai Sahib had rescued him from the clutches of a Christian. He did not care about the fact that Nathua would get some material comfort and schooling at the Mission; his only concern was that Nathua remain a Hindu. To him, the leftovers of his house were more blessed than the freshly cooked meal at the Mission. Sweeping his many rooms was better than getting schooled by the Christians. He must remain a Hindu, in whichever condition. If he turned Christian he would be lost forever.

Nathua had no other work except for cleaning Rai Sahib's bungalow. After his meal he played around the whole day. Nathua's work decided his position in the caste hierarchy and he was assigned a place in the sweeper community. Therefore, the other servants called him an untouchable, a *bhangi*, but he didn't mind. The poor boy was not aware of the effects this name could have on him and he saw no harm in being a *bhangi*. While sweeping, he often found some money or other things on the floor with which he could buy cigarettes. Even as a child

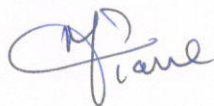


Principal
HPU Department of Evening Studies
The Mall, Shimla-1



Contemporary Issues in Management

Dr. Luxmi Malodia
Dr. Purva Kansal



Principal
HPU Department of Evening Studies
The Mall, Shimla-1



9. **Mobile Banking and Technology Adoption : Perspective of Chandigarh Youth** 78--86
Sumit Goklaney & Arpit Khurana
10. **Demographic Changes in India and China : A Comparative Study** 87-96
Tilak Raj & Taruntej Singh
11. **Marketing's Loss of Stature : A Case for Marketing Accountability** 97-103
Sureet Singh
12. **Corporate Web Reporting : An Empirical Investigation of Indian Companies Websites** 104-116
Arwinder Singh & Harmandeep Singh
13. **Factors Influencing Customer Satisfaction, Trust and Loyalty in E-Commerce Industry of India : A Perceptual Analysis** 117-126
Khushdil Chhabra & Jasleen Kaur
14. **Effectiveness of Morale in Contemporary Management A Study of Public Sector General Insurance** 127-137
Shashi Bala & R.K. Sharma
15. **Ethnocentrism Among Indian Consumers : Does it Matter?** 138-144
Praneet Rangi Randhawa & Yeashika Goyal
16. **Corporate Social Responsibility and Financial Performance : A Study of Nsenifty Companies** 148-155
Kiran Sharma
17. **Work Life Balance of Women in Bankikg Sector** 156-161
Arti Pandit Dhawan & Anu Maher
18. **E-HRM: HRM in The Digital ERA** 162-169
Shagun Sood
19. **Challenges in Global Brand Building** 169-175
Reeta
20. **Venture Capital and Private Equity in India : Prospects and Implications** 173-181
Japneet Kaur
21. **An Examination of Initiatives Taken in Managing Technological Change and its Impact on Organizational Commitment : Perception of Indian it Workers** 182-191
Kanika Sofat
22. **Forensic Ballistic Weapons in Indian Criminal Justice System** 191
Jaswinder Kaur & Suresh Kumar

PROFESSIONALISM IN EDUCATION

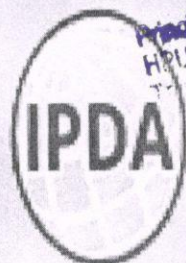
Development of Professional Leadership among Teachers

Chief Editor

Dr. Balwant Singh

Managing Editor

Dr. Manpreet Kaur



Handwritten signature
Principal
HPU Department of Evening Studies
12-1

International Professional
Development Association

x	12	Developing leadership efficacy is a pre-requisite for effective leadership	79
xii		<i>Ms. Alka Joshi</i>	
xiv	13	Schooling the emotions for better leadership	86
xxii		<i>Dr. Amardeep Kaur</i>	
1	14	Teacher leadership – A path towards strengthening educational system	91
10		<i>Ms. Kiran Bittiza, Ms. Gagandeep Kaur</i>	
	15	Teacher as leader	96
19		<i>Mr. Harpreet Singh</i>	
	16	Leadership development: teaching versus learning	101
		<i>Ms. Sapandeep Verma</i>	
27	17	Challenges in professional leadership	106
		<i>Ms. Manwinderjit Kaur</i>	
32	18	Professional development, value based leadership and teacher effectiveness	110
		<i>Dr. Ravinder Rathi</i>	
40	19	Gaps in professional leadership	115
		<i>Mr. Atul Kapoor</i>	
46	20	Leadership in education	120
		<i>Ms. Anu</i>	
	21	Leadership in teaching	123
55		<i>Dr. Shobha Mishra</i>	
	22	Role of teacher leaders in transforming education system	126
		<i>Dr. Sarvjeet Kaur Brar</i>	
60	23	Effective teacher leadership	132
		<i>Ms. Ramandeep Kaur</i>	
67	24	Qualities of teacher leadership	140
		<i>Ms. Vanshika Arora</i>	
74	25	Machiavellianism among secondary school principals in relation to their leadership behaviour	146
		<i>Ms. Karandeep Kaur</i>	

Handwritten signature
Principal
Department of Evening Studies
The Mah. Simran

Leadership in Teaching

Dr. Shobha Mishra

Assistant Professor (History)

Himachal Pradesh University,

Center for Evening Studies, Shimla-1

Abstract

In this paper author presented a case study of a junior high school where low enrollment of girl students was a big issue and it improved a lot after taking some innovative initiatives by the in-charge teacher. The purpose of this paper is to review some challenges and issues about professional leadership which we see in our working field. Education is a never ending process. A good teacher should be a good student also. Professional development program gives teachers an opportunity to step up out of their routine teaching works and learn from other experienced leader to become proficient teacher themselves.

Keywords Professional leadership, professional development

Introduction

Education is a never ending process. A good teacher should be a good student also. Professional development program gives teachers an opportunity to step up out of their routine teaching works and learn from other experienced leader to become proficient teacher themselves. The purpose of this paper is to review some challenges and issues about professional leadership which we see in our working field.

Firstly, generally we see teacher's tendency to prefer traditional methods of teaching with traditional curriculum in a routine manner and sometimes not interested in professional training, or thinks it is better to forget these techniques and teaching methods after training as these are not fit or practically suitable in their fabricated syllabus. But the changing pattern of the syllabi in every two- three years affects teacher's performance too. Now education becomes more oriented towards students. In this case teachers must update the knowledge of new methods and techniques of teaching through professional training so that the output of students may improve.

Secondly, there are many vibrant and hardworking teachers who want to implement lots of innovative ideas, not only in their classroom but also in many fields of their

Dr. Shobha Mishra

Principal
HPU Department of Evening Studies
The Mall, Shimla-1

About the Editors



Dr. Balwant Singh has 42 years experience of teaching, research and administration in various institutions in India, served for 18 years as Director at the Training and Orientation centre, Ministry of Human Resources Development, Govt. of India, at Punjab University Patiala. He was the Founder Principal of University College of Education, Punjab University and the Founder Secretary of Partap Charitable Trust, Ludhiana and Principal Partap College of Education, Ludhiana.

Balwant Singh is a member of the Board of Studies and Academic Council, Punjab University Chandigarh and a Member of the Indian Institute of Public Administration, government of India, New Delhi. Balwant has participated in and presented research papers and keynote addresses in more than 50 national and international conferences, seminars and workshops. He has also published six books.

Balwant Singh is a Constituent Member of the International Professional Development Association (IPDA), U.K. and International Study Association of Teachers and Teaching (ISATT) and is Chairperson of IPDA Association India. He has organised International Conference in collaboration with IPDA U.K. since 2013 in India.

The Award Title of Award of Fellow, International Professional Development Association (IPDA), UK was presented to Dr. Balwant Singh on 25-11-2016 by Prof. John Macbeath, President IPDA, UK during the International Conference held on 25-26 November 2016 at Stirling University, Stirling, Scotland.



Dr. Manpreet Kaur is working as Vice Principal at Partap College of Education, Ludhiana, Punjab. She is M.Sc. (Zoology) and Ph.D. in Education. She has 13 Years of experience to teach graduate, post graduate classes and providing research guidance. Her areas of interest are well-being, professional development and leadership.

Rp



International Professional Development Association

Head Office

90 Sainik Vihar, Mohan Garden,
Uttam Nagar, New Delhi-110059

Co-operative Office

7/28, Room No 208, Vardaan House,
Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002

Branch Office

216, Green Park, Narendrapur, Kolkata,
West Bengal

Phone number

011-23256188, 9953604312, 9582248909

Email: renupublishers@gmail.com

Web: www.renupublishers.com

Price: ₹ 699

ISBN: 978-93-85502-43-9



JP Jau
Principal
HPU Department of Evening Studies
T-1 Hall, Sitola-1

Women Empowerment

A New Perspective

Dr. Bhawana Bhardwaj
Dr. Vinod Negi



Foreword by
Prof. Suresh Kumar

S. K. Suresh

Principal
HPU Department of Evening Studies
The Mall, Shimla-1

10

Role of Women in Family Purchase Decision-making Process in Himachal Pradesh

ARTI PANDIT DHAWAN

ABSTRACT

Decision-making authority is one of the ways of measuring women empowerment. Although mere participation in any matter does not indicate full empowerment of women, however participation in decision making process in a household matter which includes purchase decision-making considers that a female plays a vital role for the welfare of the family. Family makes two basic types of decisions. In a consensual purchase decision members agree on the desired purchase differing only in terms of how it will be achieved. In these circumstances the family will most likely engage in problem-solving and consider alternative until the means for satisfying group goal is found. It is important to analyse the role of each member in the family in purchase decision-making. The need of the study was felt because while there have been several studies on the family dynamism is decision-making very few pertain to women in Indian context and hardly any to the women in Himachal Pradesh.

*ND
flaw*



English Communication Skills

AECC under CBCS, HPU Shimla

Meenakshi F. Paul & Madhumita Chakraborty

Cinema and Society

Its Influence and
Importance in Different
Spheres of Human Life



Dr. Daya Nand Gautam

✓ 11. <i>Arti Pandit Dhatwan</i>	71
12. Cinema : It's Social Impacts <i>Raj K. Kantwar</i>	80
13. Impact of Cinema on Children <i>Krishan Lal</i>	89
14. Actor, Acting and Activism : A Cinematic Kaleidoscope <i>Kulbhushan Sharma</i>	95
15. Bollywood Songs and Youth <i>Anju R. Chauhan</i>	101
16. Screen Adaptations of Books : Litteratur's Agony. Audience's Joy <i>Dipali S. Bhandari</i>	109
17. Cinema and Human Values <i>Mandeep Sharma</i>	114
18. Cinema : A Boon to Society <i>Sutinder Dohroo</i>	119
19. Films and Social Causes <i>Sheetal Thakur</i>	128
20. The Real, the Unreal and the Reel : Decoding the Scripts for the Texts and Contexts in the Classroom <i>Manoj Kumar</i>	133

✓ 11. Portrayal of Women in Mainstream Hindi Cinema : An Analysis <i>Arti Pandit Dhawan</i>	71
12. Cinema : It's Social Impacts <i>Raj K. Kanwar</i>	80
13. Impact of Cinema on Children <i>Krishan Lal</i>	89
14. Actor, Acting and Activism : A Cinematic Kaleidoscope <i>Kulbhushan Sharma</i>	95
15. Bollywood Songs and Youth <i>Anju R. Chauhan</i>	101
16. Screen Adaptations of Books : Litteratur's Agony, Audience's Joy <i>Dipali S. Bhandari</i>	109
17. Cinema and Human Values <i>Mandeep Sharma</i>	114
18. Cinema : A Boon to Society <i>Sutinder Dohroo</i>	119
19. Films and Social Causes <i>Sheetal Thakur</i>	128
20. The Real, the Unreal and the Reel : Decoding the Scripts for the Texts and Contexts in the Classroom <i>Manoj Kumar</i>	133

Portrayal of Women in Mainstream Hindi Cinema : An Analysis

11

ARTI PANDIT DHAWAN

INTRODUCTION

Cinema is one of the most powerful modes of creative expression. It is a popular media of mass consumption. Cinema plays a key role in forming opinions, constructing images and reinforcing values. But it is used largely to sell mindless entertainment. Even when questions are raised about the distorted ways in which popular Hindi cinema tends to project reality, serious discourse is encouraged. Senior members of Indian film industry prefer to take an ambiguous stand on the matter and indirectly, defend the working of market forces. The film industry has preferred films that appeal to all segments of the audience. Cinema no doubt is meant and believed to entertain but its impact on the society is significant.

The third of May 1913 The Coronation Cinematographer Theatre, packed to the ^{brill}hilt, watches bevy of 'women' in wet saris cavorting around a fountain. The film is *Raja Harishchandra*, and the director is Dhundiraj Govind Phalke. He had hoped to find 'real' women to play the role of queen Taramati and the other female characters in the film but had failed. He had advertised in the newspapers and even visited 26 women in red-light area. But the women there didn't fit into Phalke's vision. Queen Taramati's

Critical Voices on Toni Morrison



Edited by
Meenakshi F. Paul
Khem Raj Sharma

Worldwide Circulation through Authorspress Global Network
First Published in 2015

by

Authorspress

Q-2A Hauz Khas Enclave, New Delhi-110 016 (India)

Phone: (0) 9818049852

e-mails: authorspress@rediffmail.com; authorspress@hotmail.com

Website: www.authorspressbooks.com

Critical Voices on Toni Morrison

ISBN 978-81-7273-921-8

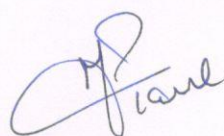
Copyright © 2015 Editors

Disclaimer

Concerned authors are responsible for their views, opinions and policies or any copyright infringement. Neither the publisher nor the editors will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their papers.

Printed in India at Krishna Offset, Shahdara

9. Golden Gray and the Talking Book:
Identity as a Site of Artful Construction in
Toni Morrison's *Jazz* 222
CAROLINE BROWN
10. "Everything about Her Had Two Sides to It":
The Foreigner's Home in Toni Morrison's *Paradise* 247
SUSAN NEAL MAYBERRY
11. "But the Greatest of These Is Love": Desire for the
Father and *Agape* in Toni Morrison's *Love* 275
CHIA-CHIN TSAI
12. A Demonic Parody: Toni Morrison's *A Mercy* 305
GENEVA COBB MOORE
3. The Challenges of Recovering from Individual and
Cultural Trauma in Toni Morrison's *Home* 329
AITOR IBARROLA
4. ✓ Childhood Matters: The Palimpsest of Retellings in
God Help the Child 352
MEENAKSHI F. PAUL & KHEM RAJ SHARMA
- Contributors 386



Principal
H.P. Department of Evening Classes
The Wall, Shimla-1

Gender Equal Society: Myth and Reality

राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षा अभियान
NATIONAL HIGHER EDUCATION
NATIONAL HIGHER EDUCATION

Editors:

Pushma Rewal Chhabra

Seema Thakur

Anju Devi

❖	Untangling Sita: Voicing the Voiceless through Chitra Banerjee Divakaruni's <i>The Forest of Enchantments</i>	Charu Ahluwalia	108
❖	Gender Equality and Women Empowerment	Suman Kumar	115
❖	"Eat me, Drink me, Love me": Female Friendship, Sisterhood, and Sexuality in "Goblin Market"	Ramprasad Dutta	130
❖	Declining Child Sex Ratio in Himachal Pradesh	Hari Singh Chandel Dr. Seema Thakur	137
❖	Role of Media in Public Awareness during COVID-19	Tara Hetta Dr. Sharda Devi	148
❖	Unsettling Subjective Identity in Margaret Atwood's <i>The year of the Flood</i>	Anil Kumar Ayushi Sharma	160
❖	Gender Gap in Contemporary World: Ambiguity of Economic Growth and Women's Empowerment in India	Ayushi Sharma Shailja Shakshi Chaudhary	170
❖	Gender Issues in Education	Anju Devi	180
❖	The Indiscernible Heart	Pallavi Bhardwaj	189
❖	A Filtered Perspective: The Ideal of Japanese Women in Texts on Japan from England and Bengal	Ankana Bag	203

ROLE OF MEDIA IN PUBLIC AWARENESS DURING COVID-19

Tara Hetta

Dr. Sharda Devi

The aim of this study is to examine the effective role of media in public awareness about covid-19 among the public, their perception and attitude, and govt. action plan in district Shimla, Himachal Pradesh. Cross-sectional survey questionnaires were distributed to 130 respondents about accessing the public awareness of modes of corona-virus transmission, perceptions and attitudes towards people getting infected with corona-virus, as well as understanding of public about the government action plan to break the chain of covid-19. People belong to various social background and different professional streams were the sources of information seeking on covid-19. Most of the respondents were aware of the modes of covid-19 transmission. However, they were few respondents who still have misconceptions about the modes of transmission. Most of the respondents were supporting government's action plan in the region. Overall, the respondents had certain knowledge about the transmission modes of covid-19 and highly positive perceptions and attitudes towards the control of infectious covid-19. The further studies could be conducted to examine about how media effectively played its role to elevate people's from covid-19 and take it to the normal track as it was earlier.

Keywords: attitudes, covid-19, corona-virus, knowledge, social distancing, perceptions, Himachal Pradesh

Introduction

The media coverage is the most important factor responsible for the dissemination of awareness of the infectious disease and its transmission, it is a very important issue which has to be taken care of seriously because it can prevent epidemic. In the case of a large number of infected cases, on one hand, the media coverage may cause the panic of the society, while on the other hand, it can certainly reduce the opportunity and probability of contact transmission among the alerted susceptible populations, which in turn helps to control and prevent the disease from further spreading. (Jingan Cui,^{1,2} Yonghong Sun,³ and Huaiping Zhu^{4,5,6},